Follow us on: @TheDailyPioneer facebook.com/dailypioneer instagram.com/dailypioneer/

RNI No. DLHIN/2012/483
वर्ष 12 । अंक 348
नई दिल्ली, बुधवार, 30 अक्टूबर, 2024
पृष्ठ 12 ₹ मूल्य 3
नगर संस्करण

पायनियर

Established 1865

नई दिल्ली, लखनऊ और रायपुर से प्रकाशित

www.dailypioneer.com

आभ्यन्तर

स्पोर्ट्स 12

बोपन्ना-एब्डेन ने एटीपी फाइनल्स में जगह बनाई

अखनूर में तीनों आतंकियों का खात्मा

भारतीय सेना ने मंगलवार को जम्मू-कश्मीर के राजौरी जिले के देहरा की गली के घने जंगल में व्यापक तलाशी अभियान चलाया।

मोहित कंधारी । जम्मू

सोमवार सुबह से एक धार्मिक स्थल के अंदर छिपे तीनों खूंखार विदेशी आतंकियों को सुरक्षा बलों की संयुक्त टीम ने 27 घंटे तक चले आतंकवाद विरोधी अभियान में अखनूर के बटाल इलाके में बिना किसी बड़ी क्षति के मार गिराया। स्थानीय ग्रामीणों ने सोमवार सुबह बटाल इलाके में भारी हथियारों से लैस आतंकियों के एक समूह को देखा, जो लड़ाकू वर्दी में थे। तीन स्कूली बच्चे धार्मिक स्थल के पास उनके संपर्क में आए। माना जा रहा है कि आतंकियों को इलाके में शांति भंग करने के लिए सेना के काफिले को निशाना बनाने का काम सौंपा गया था। सेना की एंबुलेंस पर गोलीबारी करने वाले तीन आतंकियों में से एक को सुरक्षा बलों ने सोमवार दोपहर को मार गिराया। हालांकि, धार्मिक स्थल के अंदर छिपे आतंकियों को बाहर निकालने के लिए विशेष बलों को लगाया गया था।

भारतीय सेना ने धार्मिक स्थल के अंदर छिपे आतंकवादियों पर अंतिम हमला करने से पहले सैनिकों को निकटतम स्थान पर पहुंचाने के लिए बीएमपी-टू, पैदल सेना के लड़ाकू वाहनों को भी तैनात किया था। ऑपरेशन को बंद करने के बाद मीडियाकर्मियों को जानकारी देते हुए, जीओसी 10 रैपिड (एच) मेजर जनरल समीर श्रीवास्तव ने डीआईजी सांबा-कठुआ रेंज शिव कुमार शर्मा और ब्रिगेडियर कपिल तनेजा, कमांडर 28 इन्फैंट्री ब्रिगेड के साथ संवाददाताओं को बताया कि भारतीय सेना ने 28 अक्टूबर, 2024 को जम्मू के बटाल के घने जंगलों में एक आतंकी हमले को सफलतापूर्वक विफल कर दिया, जिसके परिणामस्वरूप तीन आतंकवादियों का सफाया हो गया। मेजर जनरल समीर श्रीवास्तव ने कहा कि सेना के काफिले को निशाना बनाने वाले आतंकवादी कुछ समय से इलाके में मौजूद थे और हाल ही में उन्होंने घुसपैठ नहीं की थी। उन्होंने कहा कि सोमवार को सुबह करीब 7.20 बजे शुरू हुआ ऑपरेशन मंगलवार को बिना किसी नुकसान के रिकॉर्ड समय में पूरा हो गया। उन्होंने कहा कि ऑपरेशन ने स्थानीय खुफिया जानकारी और सामुदायिक सहायता से जम्मू और कश्मीर पुलिस (जेकेपी) और स्पेशल ऑपरेशन ग्रुप (एसओजी) के साथ तालमेल का प्रदर्शन किया। सैनिकों ने रात के दौरान चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में कार्य करते हुए क्षेत्र पर व्यापक प्रभुत्व बनाए रखा।

मेजर जनरल समीर श्रीवास्तव ने कहा कि भागते हुए आतंकवादियों के चारों ओर घेराबंदी को मजबूत करने के लिए विशेष बलों को तुरंत तैनात किया गया था। रात की निगरानी उपकरणों, मानव रहित जमीनी वाहनों और निगरानी ड्रोन सहित उन्नत तकनीक ने वास्तविक समय की ट्रैकिंग सुनिश्चित की और संभावित भागने को रोका। मेजर जनरल समीर श्रीवास्तव ने ब्रीफिंग के दौरान संवाददाताओं से कहा, हमने मानव रहित वाहनों, कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग किया है जिसने हमें एक त्वरित और सफल परिणाम दिया है... हमने एक सेना के कुत्ते को खो दिया - जब हम तलाशी अभियान कर रहे थे, तो वह आगे था, और आतंकवादियों ने कुत्ते पर गोलीबारी की। यह उसके बलिदान के कारण था कि कई लोगों की जान बचाई जा सकी।

मेजर जनरल श्रीवास्तव ने कहा, इस ऑपरेशन के बाद, ऐसी जानकारी फैल रही थी कि सेना ने बीएमपी का इस्तेमाल किया था - हमने उस तरह के वाहन का इस्तेमाल किया था क्योंकि यह क्षेत्र कठिन था - 30 डिग्री की ढलान और घने जंगल के साथ - हमने आतंकवादियों का पता लगाने के बाद उन वाहनों का इस्तेमाल किया। सोशल मीडिया में कुछ अफवाहों का जिक्र करते हुए मेजर जनरल समीर श्रीवास्तव ने कहा, हम इस ऑपरेशन में बीएमपी के इस्तेमाल के बारे में सोशल मीडिया पर चल रही कुछ अफवाहों को भी दूर करना चाहते हैं। उन्होंने स्पष्ट किया कि फंसे हुए आतंकवादियों तक पहुँचने के लिए कठोर वाहनों का इस्तेमाल किया गया था। हम इस बात पर भी ज़ोर देना चाहते हैं कि भारतीय सेना एक पेशेवर सेना है और मारे गए आतंकवादी के शव का कोई अपमान नहीं किया गया है। मुठभेड़ के दौरान घटनास्थल से युद्ध जैसे सामान बरामद किए गए, जो सेना के अधिकारियों के अनुसार, इलाके की सुरक्षा के लिए जरूरी होंगे। ऑपरेशन आसन के दौरान, भारतीय सेना की कैनाइन यूनिट के बेल्जियन मालिनोइस कुत्ते फैंटम ने सर्वोच्च बलिदान दिया। (**शेष पृष्ठ 9**)

16 दिन, 510 फर्जी धमकियाँ और तीन गिरफ्तारियाँ

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली/नागपुर

विभिन्न भारतीय एयरलाइनों द्वारा संचालित 100 से अधिक उड़ानों को मंगलवार को बम की धमकियाँ मिलीं। 16 दिनों में, 510 से अधिक घरेलू और अंतरराष्ट्रीय उड़ानों को धमकियाँ मिली हैं, जो बाद में झूठी निकलीं। ये धमकियाँ ज़्यादातर सोशल मीडिया के ज़रिए दी गईं। इस बीच, नागपुर पुलिस ने महाराष्ट्र के गोंदिया से एक 35 वर्षीय व्यक्ति को गिरफ़्तार किया, जो कथित तौर पर बम की धमकियों के पीछे था, जिससे दहशत फैल गई, उड़ानों में देरी हुई और हवाई अड्डों और अन्य प्रतिष्ठानों पर सुरक्षा बढ़ा दी गई।

एयर इंडिया को लगभग 36 उड़ानों और इंडिगो को लगभग 35 उड़ानों के लिए धमकियाँ मिलीं। विस्तारा को 32 उड़ानों के लिए धमकियाँ मिलीं। 29 अक्टूबर 2024 को सोशल मीडिया पर एयर इंडिया की कई उड़ानों को सुरक्षा संबंधी धमकियाँ मिली थीं। एयरलाइन के प्रवक्ता ने एक बयान में कहा, निर्धारित प्रोटोकॉल का पालन करते हुए, संबंधित अधिकारियों को तुरंत सतर्क कर दिया गया और नियामक अधिकारियों के मार्गदर्शन के अनुसार सभी सुरक्षा प्रक्रियाओं का सख्ती से पालन किया गया। एयरलाइनों को बम की धमकियों के संबंध में अक्टूबर में 14 एफआईआर दर्ज की गईं। इसी से संबंधित घटनाक्रम में, नामित आतंकवादी गुरपतवंत सिंह पन्नू ने भी अपने हालिया वीडियो संदेश में विशेष रूप से एयर इंडिया की कई उड़ानों का नाम लेते हुए धमकी जारी की है, जिसमें नई दिल्ली और टोरंटो, वैंकूवर (एआई 185), लंदन (एआई 111, एआई 161), फ्रैंकफर्ट (एआई 121), सिडनी (एआई 302) और मेलबर्न (एआई 308) के बीच के मार्गों पर ध्यान केंद्रित किया गया है। अतिरिक्त धमकियाँ मुंबई-लंदन मार्गों (एआई129, एआई 131) को लक्षित करती हैं।

इस बीच, नागपुर पुलिस की विशेष शाखा ने उसकी पहचान आतंकवाद पर एक किताब के लेखक जगदीश उइके के रूप में की है, जिसे 2021 में एक अलग मामले में गिरफ्तार किया गया था। उइके की पहचान तब हुई जब फर्जी ईमेल का पता चला। फर्जी बम धमकियों की जांच में अब तक तीन लोगों को गिरफ्तार किया जा चुका है। एक को इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे से और दूसरे को छत्तीसगढ़ से गिरफ्तार किया गया।

पुलिस उपायुक्त (डीसीपी) श्वेता खेडकर के नेतृत्व में की गई जांच में उइके के ईमेल से जुड़ी विस्तृत जानकारी सामने आई। नागपुर पुलिस के अनुसार, उइके ने प्रधानमंत्री कार्यालय (पीएमओ), रेल मंत्री, महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे और उनके डिप्टी, एयरलाइन कार्यालयों, पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) और रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) सहित विभिन्न सरकारी निकायों को ईमेल भेजे। सोमवार को, नागपुर पुलिस ने शहर में उपमुख्यमंत्री और गृह मंत्री देवेंद्र फडणवीस के आवास के बाहर सुरक्षा बढ़ा दी, जब उइके ने एक ईमेल भेजा जिसमें धमकी दी गई थी कि अगर उन्हें गुप्त आतंकी कोड के बारे में अपनी जानकारी पेश करने का मौका नहीं दिया गया तो वे विरोध करेंगे, जिसका दावा उन्होंने किया है। उन्होंने कहा कि उन्होंने आतंकी खतरों के बारे में अपनी जानकारी पर चर्चा करने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मिलने का (**शेष पृष्ठ 9**)

अंतिम चरण में है एलएसी पर सैन्य वापसी प्रक्रिया

पायनियर समाचार सेवा । नई दिल्ली

पिछले सप्ताह पूर्वी लद्दाख में वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) पर डेमचोक और देपसांग में टकराव वाले बिंदुओं से पीछे हटने पर सहमत होने के बाद, भारत और चीन ने प्रक्रिया लगभग पूरी कर ली है। दोनों पक्ष अब स्थिति की पुष्टि करेंगे और अपने-अपने क्षेत्रों में गश्त शुरू करेंगे। आधिकारिक सूत्रों ने मंगलवार को बताया कि भारत और चीन के बीच एक महत्वपूर्ण समझौते के बाद पूर्वी लद्दाख में डेमचोक और देपसांग मैदानों में दो टकराव वाले बिंदुओं पर सैनिकों की वापसी 'अंतिम चरण' में है। 25 अक्टूबर को, सूत्रों ने कहा था कि प्रक्रिया 28-29 अक्टूबर तक पूरी होने की संभावना है। सेना के सूत्रों ने कहा था कि समझौते की रूपरेखा पर पहले राजनयिक स्तर पर 'हस्ताक्षर' किए गए और फिर सैन्य स्तर की वार्ता हुई, उन्होंने कहा कि समझौते की बारीकियों पर पिछले सप्ताह कोर कमांडर-स्तरीय वार्ता में काम किया गया था। दोनों पक्षों के बीच हुए समझौतों का पालन करते हुए, भारतीय सैनिकों ने इन क्षेत्रों में पीछे के स्थानों पर उपकरणों को वापस खींचना शुरू कर दिया। मंगलवार को एक आधिकारिक सूत्र ने कहा कि दो घर्षण बिंदुओं पर विघटन अपने 'अंतिम चरण' में है। पिछले सप्ताह सूत्रों ने कहा कि समझौता केवल इन दो घर्षण बिंदुओं के लिए हुआ था, और अन्य क्षेत्रों के लिए 'बातचीत अभी भी चल रही है'। सूत्रों ने कहा है कि पिछले सप्ताह शुरू हुई विघटन प्रक्रिया पूरी होने के बाद इन बिंदुओं पर गश्त शुरू हो जाएगी और दोनों पक्ष अपने-अपने सैनिकों को ले जाएंगे और अस्थायी संरचनाओं को ध्वस्त कर देंगे। (**शेष पृष्ठ 9**)

सलमान, जीशान को धमकी देने वाला युवक नोएडा से गिरफ्तार

पायनियर समाचार सेवा । नई दिल्ली

मुंबई पुलिस ने बॉलीवुड अभिनेता सलमान खान और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी नेता जीशान सिद्दीकी को जान से मारने की धमकी देने के आरोप में उत्तर प्रदेश के नोएडा से 20 वर्षीय एक युवक को सोमवार को गिरफ्तार किया है। मुंबई पुलिस आरोपी को मामले की जांच के लिए मुंबई ले गई है। निर्मल नगर थाने के एक अधिकारी ने कहा, आरोपी ने पहले विधायक जीशान सिद्दीकी के हेल्पलाइन नंबर पर धमकी भरा संदेश भेजा और बाद में उस पर वॉयस कॉल किया, जिसमें उसने सिद्दीकी और अभिनेता सलमान खान को जान से मारने की धमकी दी। यह घटना शुक्रवार को हुई। उन्होंने बताया कि इस संबंध में सोमवार को मामला दर्ज किया गया और तकनीकी साक्ष्यों की मदद से आरोपी को नोएडा से गिरफ्तार कर लिया गया। उन्होंने बताया कि आरोपी को मामले की जांच के लिए मुंबई लाया जा रहा है। उन्होंने बताया कि यह फोन कॉल जीशान के बांद्रा पूर्व स्थित जनसंपर्क कार्यालय को की गई थी। इस बीच, नोएडा के थाना सेक्टर 39 के प्रभारी निरीक्षक जितेंद्र कुमार सिंह ने बताया कि नोएडा और मुंबई पुलिस की एक संयुक्त टीम ने सेक्टर 92 स्थित एक निर्माणाधीन मकान में छापेमारी की और वहां से तैयब अंसारी नाम के एक व्यक्ति को गिरफ्तार कर लिया। उन्होंने बताया कि आरोपी से घटना में इस्तेमाल किया गया मोबाइल फोन बरामद हुआ है। सिंह ने बताया कि गिरफ्तार आरोपी मूल रूप से बरेली जिले का रहने वाला है। उन्होंने कहा कि तैयब अंसारी सेक्टर 92 में निर्माणाधीन मकान में बढ़ई का काम कर रहा था। तीन बार के विधायक एवं जीशान के पिता बाबा सिद्दीकी (66 साल) की 12 अक्टूबर को बांद्रा में उनके बेटे के कार्यालय के बाहर गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। लॉरेंस बिश्नोई गिरोह ने राकांपा नेता की हत्या की जिम्मेदारी ली थी। उसने सलमान के साथ नेता के करीबी संबंधों को उनकी हत्या के कारणों में से एक बताया था। अजित पवार के नेतृत्व वाली सत्तारूढ़ राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) ने अगले महीने होने वाले विधानसभा चुनाव में मुंबई के बांद्रा पूर्व निर्वाचन क्षेत्र से जीशान को मैदान में उतारा है। जीशान ने हाल में एक साक्षात्कार में कहा था कि उनके पिता की मौत के बाद से बॉलीवुड अभिनेता सलमान उनकी कुशल-क्षेम को लेकर बहुत चिंतित हैं।

वकीलों व जज में बहस, जंग का मैदान बना गाजियाबाद कोर्ट

पायनियर समाचार सेवा । नई दिल्ली

गाजियाबाद की एक जिला अदालत में जज और वकीलों के बीच तीखी बहस के बाद भारी अफरातफरी और ड्रामा देखने को मिला। अग्रिम जमानत से जुड़े एक मामले की सुनवाई को लेकर एक वकील और जज के बीच तीखी बहस के बाद कोर्ट परिसर में सुबह करीब 11 बजे हंगामा शुरू हो गया। टकराव तब शुरू हुआ जब वकील जज के कमरे के बाहर इकट्ठा हुए और कुछ खास फैसलों के बारे में अपनी शिकायतें व्यक्त करने लगे, जिन्हें वे अनुचित मानते थे। इसके बाद जज ने पुलिस को सूचित किया, जो मौके पर पहुंची और वकीलों को हटाना शुरू कर दिया। स्थिति तेजी से बिगड़ गई, जिसके कारण पुलिस ने प्रदर्शनकारी वकीलों को तितर-बितर करने के लिए लाठीचार्ज किया।

नाम न बताने की शर्त पर एक वकील ने बताया कि वकीलों के एक समूह ने मांग की थी कि जिला और सत्र न्यायाधीश को अग्रिम जमानत के मामले की प्राथमिकता पर सुनवाई करनी चाहिए, जिसे उन्होंने अस्वीकार कर दिया और कहा कि मामले की सुनवाई लिस्टिंग के अनुसार की जाएगी। हालांकि, सोशल मीडिया पर इस घटना के कथित वीडियो क्लिप में कोर्ट रूम में बड़ी संख्या में पुलिसकर्मियों और वकीलों के बीच टकराव देखने को मिला। पुलिस और वकीलों के बीच टकराव के दृश्य सोशल मीडिया पर सामने आए हैं, जिसमें पुलिस वकीलों को कोर्ट परिसर से बाहर निकालने के लिए बल प्रयोग करती दिख रही है। वीडियो में एक पुलिसकर्मी कुर्सी लेकर वकीलों को धमकाता हुआ दिखाई दे रहा है, जैसे कि वह उन पर कुर्सी फेंक देगा। इसके बाद वकील गलियारे से भागते हुए दिखाई दे रहे हैं, जबकि पुलिस उन्हें तितर-बितर करने की कोशिश कर रही है। पुलिस द्वारा स्थिति को नियंत्रित करने की कोशिश के दौरान कोर्ट (**शेष पृष्ठ 9**)

गाजियाबाद जिला न्यायालय परिसर में मंगलवार को हुए हंगामे के बाद तैनात पुलिसकर्मी।

गाजियाबाद में खुलेगा एम्स का सेटेलाइट सेंटर

पायनियर समाचार सेवा । नई दिल्ली

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मंगलवार को गाजियाबाद को दिवाली का तोहफा दिया है। उन्होंने कहा कि दिल्ली स्थित अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान की एक शाखा (सैटेलाइट सेंटर) गाजियाबाद में स्थापित की जाएगी। योगी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में आयोजित नवें अखिल भारतीय आयुर्वेद सम्मेलन में मेरठ से ऑनलाइन माध्यम से शामिल हुए। योगी आदित्यनाथ ने कहा कि आज उत्तर प्रदेश के पास दो एम्स है। एम्स, दिल्ली से आग्रह किया है कि जमीन हम देंगे, गाजियाबाद में शाखा स्थापित कीजिए ताकि इसका लाभ हापुड़, मेरठ, गाजियाबाद, बुलंदशहर वासियों को प्राप्त हो सके। उन्होंने कहा कि यह कार्यक्रम शीघ्र बढ़ाने का कार्य करेंगे।

योगी ने कहा कि 70 वर्ष से अधिक उम्र के लोगों को अब आयुष्मान का लाभ मिलेगा। आज इसकी शुरुआत प्रधानमंत्री कर रहे हैं। पीएम मोदी ने मंगलवार को नई दिल्ली में नौवें आयुर्वेद दिवस के अवसर पर लगभग 12,850 करोड़ रुपए की लागत वाली स्वास्थ्य क्षेत्र से सम्बंधित विभिन्न परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास किया। मोदी ने विभिन्न राज्यों की स्वास्थ्य संबंधित परियोजनाओं के अलावा नई दिल्ली स्थित अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान में चिकित्सा सेवा के विस्तार और जन औषधि केंद्र का भी उद्घाटन किया। इस कार्यक्रम से जुड़े योगी आदित्यनाथ ने मेरठ के कंकरखेड़ा के मार्शल पिच पर ईएसआईसी अस्पताल के शिलान्यास समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि मेरठ बड़े अवसंरचना केंद्र के रूप में उभरा है। एक्सप्रेसवे, रैपिड रेल मिल गई है। गंगा एक्सप्रेसवे बन रहा है, कुंभ स्नान इसी से करने जाइए। अस्पताल के लिए ऑनलाइन माध्यम से भूमि पूजन प्रधानमंत्री (**शेष पृष्ठ 9**)

केरल के मंदिर में उत्सव के दौरान हादसा, 150 से अधिक घायल

पीटीआई । कासरगोड (केरल)

केरल में सोमवार देर रात को नीलेश्वरम के पास एक मंदिर में थेय्यम प्रस्तुति के दौरान आग लगने की घटना में 150 से अधिक लोग घायल हो गए। पुलिस ने मंगलवार को यह जानकारी देते हुए बताया कि इनमें से 10 लोग गंभीर रूप से घायल हुए हैं। इस बीच, कासरगोड जिला पुलिस प्रमुख डी. शिल्पा ने आग लगने की घटना की जांच के लिए विशेष जांच दल (एसआईटी) के गठन की घोषणा की है। जिला प्रशासन ने कहा कि अतिरिक्त संभागीय मजिस्ट्रेट को घटना की अलग से जांच करने और रिपोर्ट सौंपने का निर्देश दिया गया है। पुलिस ने बताया कि यह घटना केरल के कासरगोड जिले में नीलेश्वरम के पास अंजुत्तनबलम वीरेरकावु मंदिर में हुई। नीलेश्वरम पुलिस ने विस्फोटक पदार्थ अधिनियम और बीएनएस की विभिन्न धाराओं के तहत एक मामला दर्ज किया है। पुलिस ने कहा कि आग लगने का वास्तविक (**शेष पृष्ठ 9**)

वीआईपी के आते ही जाम हो जाती हैं दिल्ली की सड़कें

व्यस्त मुख्य सड़कों पर अक्सर प्रतिबंध लगा दिए जाते हैं तो भारी ट्रैफिक और भी बढ़ जाता है

लाइलाज ट्रैफिक जाम
पायनियर

सौम्या शुक्ला । नई दिल्ली

मध्य दिल्ली 'वीआईपी मूवमेंट' की चिरकालिक समस्या से सबसे ज्यादा प्रभावित है, जहां व्यस्त मुख्य सड़कों पर अक्सर आम जनता के लिए प्रतिबंध लगा दिए जाते हैं, ताकि विभिन्न कार्यक्रमों, राजनेताओं और गणमान्य व्यक्तियों को सुरक्षित तरीके से आने-जाने की अनुमति मिल सके। मंगलवार को, बाजारों में धनतेरस के लिए सामान, खासकर आभूषण खरीदने वालों की भीड़ उमड़ पड़ी थी, और 'रन फॉर यूनिटी' कार्यक्रम के कारण सुबह से ही यातायात प्रतिबंध लागू थे, जिसके कारण कई लोग अपने सामान्य मार्ग से हट गए और अपने गंतव्य तक पहुंचने में अतिरिक्त समय लगा।

सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती मनाने के लिए आयोजित 'रन फॉर यूनिटी' के लिए इंडिया गेट, सी-हेक्सागन के आसपास सुबह 6.45 बजे से कार्यक्रम समाप्त होने तक प्रतिबंध लागू थे। दिल्ली यातायात पुलिस ने कहा, '29 अक्टूबर, 2024 को राष्ट्रीय एकता दिवस के उपलक्ष्य में मेजर ध्यानचंद राष्ट्रीय स्टेडियम से 'रन फॉर यूनिटी' के मद्देनजर विशेष यातायात व्यवस्था की गई है। पुलिस ने तिलक मार्ग-भगवानदास रोड क्रॉसिंग, पुराना किला रोड-मथुरा रोड क्रॉसिंग, शेरशाह रोड-मथुरा रोड क्रॉसिंग, डॉ. जाकिर हुसैन मार्ग-सुब्रमण्यम भारती मार्ग क्रॉसिंग, पंडारा रोड-सुब्रमण्यम भारती मार्ग क्रॉसिंग, राउंडअबाउट मानसिंह रोड, राउंडअबाउट जसवंत सिंह रोड, के.जी मार्ग-फिरोजशाह रोड क्रॉसिंग और राउंडअबाउट मंडी हाउस पर यातायात के लिए डायवर्जन की घोषणा की है।

निर्माण कार्यों के कारण सड़कें संकरी हो जाती हैं, बसों का बार-बार खराब होना, अवैध पार्किंग के कारण सड़कें जाम हो जाती हैं और यातायात का निर्बाध प्रवाह बाधित होता है, ऐसी समस्याओं के कारण यात्रियों को पहले से ही परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। लोगों ने बताया कि इस तरह के प्रतिबंधों के कारण उनका आवागमन और भी मुश्किल हो जाता है, खासकर सुबह के समय जब सड़कों पर ऑफिस जाने वालों की भीड़ होती है। एक मीडिया पेशेवर ने कहा, मैं सुबह 11 बजे अपने घर से निकला था और ऑफिस जाने के लिए 25 मिनट की छोटी यात्रा की योजना बना रहा था। लेकिन, ज़ाहिर है, दिल्ली के बदनाम ट्रैफिक ने कुछ और ही सोच रखा था। मैं यहाँ हूँ, सेंट्रल दिल्ली में जाम में फँसा हुआ हूँ, शायद अपने सहकर्मियों को उनके काम से लौटते देखने के लिए ठीक समय पर पहुँच जाऊँ। हमेशा की तरह, यह एकदम सही समय है! इन डायवर्जन से न केवल सेंट्रल दिल्ली में बल्कि पूरे शहर में यात्रा करने वाले लोगों पर असर पड़ता है। एक यात्री ने बताया कि वीआईपी मूवमेंट के कारण वह करीब आधे घंटे तक ट्रैफिक में फंसा रहा। (**शेष पृष्ठ 9**)

बाजार में धनतेरस पर खरीदारी के लिए भीड़ उमड़ पड़ी जिससे ट्रैफिक जाम हो गया। फोटोः रंजन डिमरी

एफएनजी एक्सप्रेस पर दोबारा शुरू होगा काम

फरीदाबाद के लालपुर से मंगरौली तक बनेगा 600 मीटर लंबा रास्ता, 200 करोड़ होंगे खर्च

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

प्रतीकात्मक फोटो

फरीदाबाद, नोएडा, गाजियाबाद (एफएनजी) एक्सप्रेस वे पर दोबारा से जल्द काम शुरू होगा। इसको लेकर हाल ही में नोएडा प्राधिकरण और पीडब्ल्यूडी हरियाणा के बीच एक बैठक हुई थी, जिसमें बताया गया कि लोक निर्माण विभाग (पीडब्ल्यूडी) की ओर से इस एक्सप्रेसवे की परियोजना के सर्वे का काम पूरा कर लिया गया है। इस एक्सप्रेस-वे की नई डिटेल प्रोजेक्ट रिपोर्ट (डीपीआर) में तीन अलाइंमेंट (मार्ग) तैयार किए गए हैं। पीडब्ल्यूडी मुख्यालय द्वारा मंजूरी देने के बाद एक पर काम शुरू किया जाएगा। नोएडा से फरीदाबाद को जोड़ने के लिए यमुना पर करीब 600 मीटर लंबा पुल बनाया जाएगा।

ये पुल नोएडा के मंगरौली गांव से फरीदाबाद के लालपुर तक जाएगा। इसके आगे फरीदाबाद अपनी एप्रोच रोड बनाएगा। पुल के निर्माण में करीब 200 करोड़ रुपए खर्च होंगे, जिसका वहन नोएडा प्राधिकरण और हरियाणा सरकार 50-50 प्रतिशत करेगी। साथ ही दोनों ओर की एप्रोच रोड अपने-अपने खर्चे पर तैयार की जाएगी। ये एफएनजी नोएडा के छिजारसी से शुरू होकर मंगरौली तक जाएगी। छिजारसी के पीछे एनएच-9 पर एलिवेटड लूप बनाकर इसे गाजियाबाद से जोड़ा जाएगा। इसको लेकर एनएचएआई से बातचीत की जाएगी। छिजारसी कट से आगे 650 मीटर का एलिवेटड ट्रैक बनाया जाएगा।

ये एलिवेटड छिजारसी से बहोलपुर अंडरपास के पास तक होगी। इसके बनाने में 700 करोड़ का खर्च आएगा। 11 साल पहले इसकी डिटेल्ड प्रोजेक्ट रिपोर्ट (डीपीआर) बनाने की बात हुई थी।

खास ये है इस एलिवेटड को छिजारसी गांव के ऊपर से निकाला जाएगा। जिससे नीचे की आबादी को दिक्कत नहीं होगी। इसके आगे 14.610 के किमी पर एक एलिवेटड रोड प्रस्तावित है। ये रोड 5.65 किमी की होगी। ये रोड हिंडन नदी के पुश्ता से होकर बनाई जाएगी। इसके बाद नोएडा ग्रेटरनोएडा एक्सप्रेस वे पर एक अंडरपास बनेगा।

एक्सप्रेस वे का करीब 17 किमी हिस्से का 70 प्रतिशत काम पूरा किया जा चुका है। ये एक्सप्रेस वे छिजारसी से नोएडा ग्रेटरनोएडा एक्सप्रेस वे को पार करता हुआ यमुना तक करीब 23 किमी का है। एक्सप्रेस वे गाजियाबाद के एनएच-24 को नोएडा के छिजारसी, बहलोलपुर, सोरखा, सेक्टर 112, 140, एक्सप्रेस-वे, सेक्टर-168 होकर फरीदाबाद के गांव लालपुर में आकर निकलेगा। ये पहला एक्सप्रेस वे होगा जो तीन एनसीआर के तीन बड़े शहरों को सीधे जोड़ेगा।

गौतमबुद्धनगर में पुलिस की बदमाश से मुठभेड़, पैर में लगी गोली

नोएडा। ईकोटेक 3 थाना पुलिस और एक शातिर चोर के बीच मुठभेड़ हो गई। इस मुठभेड़ में बदमाश के पैर में गोली लग गई। इस शातिर चोर के द्वारा कल एक ज्वेलरी शॉप पर शटर का ताला तोड़कर चोरी की वारदात को अंजाम दिया गया था।

थाना इकोटेक-3 पुलिस द्वारा आगामी त्योहारो को लेकर चेकिंग की रही थी। इसी दौरान सीआईएसएफ कैम्प वाले रोड पर ग्राम सुत्याना की तरफ से साइकिल पर सवार एक व्यक्ति आता दिखाई दिया, उस व्यक्ति ने पुलिस को अचानक अपनी ओर आता देखा तो उसने अपनी साइकिल को पीछे मोड़ी और तेजी से भागने लगा। पुलिस टीम द्वारा उसे रुकने के लिये पुन: जोर से आवाज दी गई तो उस व्यक्ति ने अपनी कमर पर टंगे बैग को उतारकर उसमे से तमंचा निकालकर पुलिस बल पर फायर कर दिया। पुलिस ने भी जवाबी फायरिंग की। जिसमें बदमाश के पैर मे गोली लग गई।

संक्षिप्त समाचार

गुलशन विवान्ते सेक्टर-137 में दिवाली के उपहार के साथ संस्था के लोग।

सोसाइटी ने बांटे दिवाली के उपहार

नोएडा। वरिष्ठ नागरिक संस्था गुलशन विवान्ते सेक्टर-137 नॉएडा ने सोसाइटी के सभी स्टाफ को दीपावली उपहार दिया। ये कार्यक्रम मंगलवार सोसाइटी में एल टॉवर के पास किया। सोसाइटी के सचिव अनूप शर्मा ने बताया कि संस्था के पदाधिकारी अध्यक्ष निशा गुप्ता, निर्वतमान अध्यक्ष हेमंत कुमार, उपाध्यक्ष मनोहर लाल जैन, सचिव अनूप शर्मा, कार्यकारिणी सदस्य आशा जैन, नीना कटियार एवं तुलसीदास नंदवानी और सभी संस्था के सदस्यों की उपस्थिति में सोसाइटी ने सभी कर्मचारियों को दिवाली की शुभकामना दी और सबको उपहार प्रदान किया।

सड़क हादसे में श्रमिक की मौत

नोएडा। थाना फेस-दो क्षेत्र के नया गांव के पास बीती रात को हुए एक सड़क हादसे में एक कंपनी में काम करने वाले कर्मचारियों की मौत हो गई। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। थाना फेस -2 के प्रभारी निरीक्षक विंध्याचल तिवारी ने बताया कि अनिल कुमार उम्र 31 वर्ष फेस-दो क्षेत्र में स्थित एक कंपनी में काम करते थे। वह बीती रात को पैदल अपने घर जा रहे थे, तभी नया गांव के पास एक अज्ञात वाहन चालक ने तेजी और लापरवाही से वाहन चलाते हुए उसे टक्कर मार दिया। इस घटना में अनिल की मौके पर ही मौत हो गई। उन्होंने बताया कि मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। उन्होंने बताया कि पुलिस मामले की जांच कर रही है।

जुआ खेलते 60 लोग गिरफ्तार

नोएडा। नोएडा पुलिस ने जुआ खेलने वाले लोगों के खिलाफ बड़ी कार्रवाई की है। पुलिस ने सेंट्रल नोएडा के अलग-अलग थानों में अभियान चलाया और सार्वजनिक स्थानों पर जुआ खेलने वाले 60 लोगों को धर दबोचा। इन लोगों के कब्जे से नगदी और ताश की गड्डियां बरामद हुई है। सेंट्रल नोएडा के डीसीपी शक्ति मोहन अवस्थी ने बताया कि पुलिस कमिश्नर लक्ष्मी सिंह के निर्देश पर एक विशेष अभियान चलाया गया और इस दौरान सार्वजनिक स्थान पर जुआ खेलने वाले लोगों की धर पकड़ की गई। इस अभियान के तहत सेंट्रल नोएडा के सभी थाना क्षेत्र में पुलिस ने गस्त करते हुए इन लोगों को पकड़ा। उन्होंने बताया कि इस अभियान के तहत कुल 60 लोगों को गिरफ्तार किया गया।

यूपी-16ईपी सीरीज के नंबरों की बोली के नतीजे जारी

नोएडा। हल्के वाहनों की नई यूपी-16ईपी सीरीज के आकर्षक और अति आकर्षक नंबरों की दूसरी बार की बोली के नतीजे जारी हो गए है। लोग वेबसाइट 2 पर नीलामी के नतीजे देख सकते हैं। इसके बाद बचे नंबर को लोग अब निर्धारित आधार मूल्य जमा करके पहले आओ, पहले पाओ की तर्ज पर बुक कर सकते हैं। यह सुविधा, दोपहिया और चार पहिया, दोनों तरह के वाहनों के आकर्षक नंबर बुक कराने के लिए है। एआरटीओ प्रशासन डॉ. सियाराम वर्मा ने कहा कि धनतेरस पर बड़ी संख्या में लोग वाहन खरीदते हैं। ऐसे में आधार मूल्य जमा करके वाहन बुक कराने का लोगों के पास मौका है।

पूर्व सांसद डीपी यादव ने मांगी सुरक्षा

नोएडा। पूर्व सांसद डीपी यादव को जान से मारने की धमकी मिलने की सूचना से हड़कंप मच गया है। डीपी यादव ने केंद्रीय गृह मंत्री और उत्तर प्रदेश सरकार को पत्र लिखकर सुरक्षा की मांग की है। डीपी यादव को दिल्ली पुलिस के एक सहायक आयुक्त ने बताया कि पुलिस ने हाल ही में कुछ अपराधियों को गिरफ्तार किया है। पूछताछ के दौरान इन अपराधियों ने खुलासा किया कि वे डीपी यादव की हत्या की योजना बना रहे थे। डीपी यादव ने बताया कि पुलिस के पास यह इनपुट अपराधियों से पूछताछ के दौरान आया और इस साजिश को नाकाम करने के लिए पुलिस तत्परता से कार्यवाही कर रही है।

नोएडा एयरपोर्ट के लिए 486 करोड़ जारी

● विस्थापित लोगों के पुनर्वास के लिए होंगे खर्च

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

नोएडा एयरपोर्ट पर 17 अप्रैल 2025 को पहली कॉमर्शियल फ्लाइट उड़ान भरेगी। एयरपोर्ट के स्टेज-2 के फेज-1 के निर्माण में अर्जित भूमि से प्रभावित ग्रामीणों के पुनर्वास के लिए नोएडा प्राधिकरण ने 486 करोड़ 30 लाख 96 हजार रुपए रिलीज कर दिया है।

दरअसल नोएडा प्राधिकरण नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट कंपनी की जायंट वेंचर कंपनी है। साथ ही इस कंपनी में सबसे बड़ा 37.5 प्रतिशत की शेयर होल्डिंग भी रखती है। ऐसे में निर्माण से लेकर विस्थापित लोगों के पुनर्वास की जिम्मेदारी भी प्राधिकरण की है। जिसके लिए शेयर होल्डिंग के अनुसार डिमांड पर प्राधिकरण पैसा रिलीज करता है। स्टेज-2 के फेज-1 अधिग्रहण से सैकड़ों की संख्या में किसान और ग्रामीण प्रभावित होंगे। उनके पुनर्वास के लिए 1296 करोड़ रुपए खर्च किए जाने है। इसमें प्राधिकरण ने अपनी हिस्सेदारी के तहत 486 करो ? 30 लाख 96 हजार रुपए रिलीज कर दिया है।

वहीं एग्रीमेंट से लेकर 30 जून तक 2024 तक प्राधिकरण 3644 करोड़ 90 लाख रुपए से ज्यादा की रकम रिलीज कर चुका है। बता दे नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर 25 नवंबर के ट्रायल रन शुरू होगा। इसके बाद एअरोड्रोम से अनुमति ली जाएगी। वहां से अनुमति मिलते ही 17 अप्रैल को पहले कॉमर्शियल फ्लाइट उड़ान भरेगी। नोएडा में देश का सबसे बड़ा एयरपोर्ट 80 प्रतिशत बनकर तैयार हो चुका है। 17 अप्रैल 2025 को यहां से पहली कॉमर्शियल फ्लाइट उड़ान भरेगी।

2 टर्मिनल वाला यह एयरपोर्ट 6 हजार हेक्टेयर एरिया में तैयार किया जा रहा है। एयरपोर्ट पर 186 हवाई जहाज की पार्किंग होगी। 4 फेज में 2 रन-वे तैयार होंगे। यह देश का पहला एयरपोर्ट होगा, जहां मल्टी-मॉडल कार्गो हब होगा। इससे इंडस्ट्री के सामान लाना और ले जाना आसान होगा।

यह एयरपोर्ट 29 हजार 650 करोड़ की लागत से 6 हजार हेक्टेयर में तैयार किया जा रहा है। पहले फेज में 10 हजार 56 करोड़ की लागत से 1334 हेक्टेयर में कंस्ट्रक्शन हुआ है। इसे बनाने में 3 हजार मजदूर लगाए गए। अथॉरिटी के मुताबिक, करीब 8 हजार करोड़ रुपए खर्च हो चुके हैं। एयरपोर्ट 4 फेज में बनकर तैयार होगा।

एयरपोर्ट पर ट्रायल की तैयारी शुरू, डीएम की अध्यक्षता में हुई बैठक

नोएडा। नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर प्रस्तावित ट्रायल से पहले की तैयारी शुरू हो गई है। एयरपोर्ट साइट पर जिलाधिकारी मनीष कुमार वर्मा की अध्यक्षता में हुई बैठक में एयरक्राफ्ट के टेकऑफ व लैंडिंग के रास्ते की बाधाओं की समीक्षा की गई। इसमें विकासकर्ता कंपनी कंपनी के अलावा नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट लिमिटेड के अधिकारी भी शामिल हुए। एयरफील्ड एन्वायरमेंट मैनेजमेंट कमेटी की बैठक में जेवर एयरपोर्ट पर उतरने व उड़ान भरने वाले विमानों के रास्ते में आने वाली बाधाओं को समय से चिह्नित कर उन्हें दूर करने के निर्देश दिए गए। विमानों के मार्ग में उन स्थानों को भी चिह्नित करने के निर्देश दिए गए, जहां पक्षियों के होने की अधिक आशंका रहती है। इसकी वजह से हादसे की संभावना हो सकता है। एयरपोर्ट के अधिकारियों के अनुसार एयरपोर्ट पर 15 नवंबर से 15 दिसंबर तक बिना यात्री के ट्रायल होगा। 30 नवंबर को क्रू मेंबर के साथ विमान को एयरपोर्ट के रनवे पर उतारा जाएगा। इसके बाद ही एयरपोर्ट को एयरोड्रोम लाइसेंस के लिए महानिदेशक नागर विमानन के यहां आवेदन किया ।

प्राधिकरण ने 56 किसानों को सौंपे भूखंड

● मुख्य कार्यपालक अधिकारी डॉ. लोकेश एम. ने किसानों को भूखंडों का आवंटन पत्र दिया

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

प्राधिकरण ने दीपावली के अवसर पर 56 किसानों को 5 फीसदी आबादी के भूखंडों का उपहार भेंट किया।

इस मौके पर सांसद व पूर्व केन्द्रीय मंत्री डॉ. महेश शर्मा तथा मुख्य कार्यपालक अधिकारी डॉ. लोकेश एम. ने किसानों को भूखंडों का आवंटन पत्र सौंपा। सेक्टर-6 स्थित इंदिरा गांधी कला केन्द्र में आयोजित कार्यक्रम में प्रमाण-पत्र सौंपे गये। 8 गांवों इलाबांस, परथला खंजरपुर, रसूलपुर नवादा, शहदरा, सुथियाना, छिजारसी, मोहियापुर, नंगला नंगली के काश्तकारों की अर्जित भूमि के सापेक्ष 5 प्रतिशत आबादी के 56 भूखण्डों के आवंटन पत्र किसानों को बांटे गये। कार्यक्रम में अपर मुख्य कार्यपालक अधिकारी सतीश पाल, मुख्य विधि सलाहकार रविन्द्र प्रसाद गुप्ता, विशेष कार्याधिकारी, कान्ति शेखर सिंह, विशेष कार्याधिकारी अरविन्द कुमार सिंह, विशेष कार्याधिकारी अशोक शर्मा, विशेष कार्याधिकारी देवेन्द्र प्रताप आदि मौजूद रहे।

हेरिटेज सिटी परियोजना को धरातल पर उतारने की तैयारी

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

यमुना एक्सप्रेस-वे औद्योगिक विकास प्राधिकरण के अधिसूचित क्षेत्र में प्रस्तावित 735 एकड़ के हेरिटेज सिटी पर शासन की मुहर के बाद अब परियोजना को धरातल पर उतारने की तैयारी शुरू हो गई है।

विकासकर्ता कंपनी के चयन के लिए उत्तर प्रदेश पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप विड एबुलेशन कमेटी (यूपी पीपीपीवीईसी) की बैठक चार नवंबर को लखनऊ में होगी। इसके बाद मुख्य सचिव और फिर कैबिनेट के समक्ष रिपोर्ट रखी जाएगी। यमुना विकास प्राधिकरण के अधिकारियों के अनुसार राया हेरिटेज सिटी परियोजना के मास्टर प्लान को मंजूरी देने के साथ ही 63 सौ करोड़ रुपये के विकास कार्यों को हरी झंडी मिल गई है। प्रस्तावित डीपीआर के अनुसार वृंदावन की सांस्कृतिक धरोहरों को सहेजने के लिए राया हेरिटेज सिटी के लिए 63 सौ करोड़ रुपये की परियोजना को धरातल पर उतारा जाएगा। इसमें पर्यटकों की बढ़ती संख्या को देखते हुए 27 एकड़ में पार्किंग विकसित की जाएगी।

रंगदारी मांगने वाले बदमाशों पर कसा शिकंजा

गाजियाबाद। व्यापारियों से रंगदारी मांगने वाले बदमाशों के खिलाफ पुलिस ने शिकंजा कस दिया है।

पुलिस ने तीन बदमाशों पर गैंगस्टर की कार्रवाई कर दो गैंगस्टर गिरफ्तार कर लिए। तीसरे की तलाश में दबिश दी जा रही है। आरोपियों पर व्यापारी से रंगदारी मांगने और हत्या के मामले दर्ज हैं। एसीपी मोदीनगर ज्ञानप्रकाश राय ने बताया कि राहुल उर्फ कालू निवासी ब्रजविहार कालोनी मुरादनगर हाल निवासी राजनगर एक्सटेन्शन गाजियाबाद शातिर बदमाश है। उस पर विभिन्न थानों में हत्या सहित विभिन्न संगीन अपराधों के 16 मुकदमें दर्ज हैं।

डंपर ने मारी बाइक में टक्कर

गाजियाबाद। सीकरी खुर्द मार्ग पर डंपर की टक्कर से बाइक सवार सुपरवाइजर राजेन्द्र कुमार की मौत हो गई। इस घटना से गुस्साएं साथी कर्मचारियों ने शव महामाया चौकी पर रखकर हंगामा किया।राजेन्द्र कुमार नगर के सिखैड़ा मार्ग पर औद्योगिक क्षेत्र स्थित मोदी रोल्स में करीब 15 वर्षों से काम करते थे। वह पत्नी प्रीति और पुत्र प्रिंस व शिवांश के साथ तिबड़ा मार्ग पर किराए के मकान में रहते थे। वह बाइक से घर लौट रहे थे। बताया जा रहा है कि सीकरी खुर्द मार्ग पर वो रेलवे फाटक के पास पहुंचे तभी एक तेज रफ्तार डंपर ने किसी वाहन को ओवरटेक करने के चक्कर में बाइक को जोरदार टक्कर मार दी।

PUBLIC NOTICE

Notice is hereby given to the General Public on behalf of our client that Mr. Vinit Kumar is claiming to be the owner of Property bearing No. 17, area measuring 30 sq. yds,. out of Khasra No. 11/6, situated in the area of Village Razapur Khurd (Hastsal), Colony known as Tyagi Enclave, Mohan Garden, Uttam Nagar, New Delhi-110059; vide Notarized GPA, ATS and Will dated 05.09.2024 executed by Mr. Inderjeet Kumar Gupta. All persons are hereby informed that above mentioned owner wants to sell the said property to a person who wants to mortgage the said property to our client. If, anybody has any objection/s upon the ownership of above owner over the said property, its sale/ mortgage/litigation, & any other objections, kindly inform the undersigned in writing on the below mentioned address within 7 days of the present.

Kumar & Associates (Advocates & Consultants)
200, IInd Floor, 23, Shivaji Marg, Moti Nagar, N. Delhi-15
Ph : 011-41112527-28 legal@knalegal.com

Form No. URC-2
Advertisement giving notice about registration under Part I of Chapter XXI
[Pursuant to section 374(b) of the companies Act, 2013 and rule 4(1) of the companies (Authorised to Register) Rules, 2014]

1. Notice is hereby given that in pursuance of sub-section (2) of section 366 of the Companies Act, 2013, an application has been made to the Registrar at Registrar of Companies, Central Registration centre that **M/s Uttam Chand Rakesh Kumar** a partnership firm may be registered under Part I of Chapter XXI of the Companies Act 2013, as a company limited by shares.
2. The principal objects of the company are as follows:
a. To prepare, manufacture, process, market, trade, import, export, improve, sell or deals with agro/agri/food products including but not limited to spices, oil seeds, grains, vegetables, herbs, pickles, dry nuts and other items derived from agricultural, farming or relevant activities
3. A copy of the draft memorandum and articles of association of the proposed company may be inspected at the office at **573 Katra Ishwari Bhawan, Khari Baoli, Delhi, India-110006.**
4. Notice is hereby given that any person objecting to this application may communicate their objection in writing to the Registrar of companies at Central **Registration Centre (CRC), Indian Institute of Corporate Affairs (IICA), Plot No. 6,7, 8, Sector 5, IMT Manesar, District Gurgaon (Haryana), Pin Code-122050**, within twenty one days from the date of publication of this notice, with a copy to the company at its registered office.

Name(s) of Applicant
For M/s Uttam Chand Rakesh Kumar
1. Mr. Rakesh Kumar Bhatia
2. Akshay Kumar Bhatia
Dated this 29th Day of October 2024

PUBLIC NOTICE

Reg: Ground Floor, without roof rights, (said floor) built on Property bearing No. 562, Block-B, Gali No. 2, admeasuring 44.50 sq.yrds, out of Khasra no. 63, situated in the residential colony known as Majlis park, in the area of village Azadpur, Delhi; hereinafter referred as "said property".

Be it known to all that our clients, Mr. Sonu and Mrs. Veena (hereinafter called the "Purchaser") intend to purchase the said floor from Mrs Jasmeet Kaur, Mrs. Ravneet Kaur and Mrs. Surinder Kaur, all legal heirs of late Mr. Gurcharan Singh (hereinafter called the "Seller"). In this connection, the seller have informed the purchaser that they are the joint owners of the said floor. They further informed the purchaser that earlier, the said floor was owned by Ms Sushma Sharma W/o Mr. Sukhdev Raj Sharma vide POA documents viz., GPA, ATS and Will dated 12/09/1997. Ms Sushma Sharma expired and the said floor was inherited by her legal heirs viz., Mr. Girish Sharma, Ms Pooja Arora, and Mr. Sukhdev Raj. Later on, Mr. Girish Sharma, Ms Pooja Arora relinquished their shares in the said floor in favour of Mr. Sukhdev Raj vide Relinquishment Deed registered as Document No. 15211 on 21/12/2017. Subsequently, Mr. Sukhdev Raj sold the said floor to Mr. Mahinder Kumar Gupta vide Sale Deed registered as Document No. 6029 dated 27/04/2018 and Shri Mahinder Kumar Gupta sold the said floor to Mr. Gurcharan Singh vide Sale Deed registered as document No. 8923, Addl Book No. 1, Volume No. 7631, pages 191-198 on 21/06/2018 (SRO-VI-A). Mr. Gurcharan Singh expired and after his death, the said floor devolved on his legal heirs viz., Mrs. Jasmeet Kaur, Ravneet Kaur and Mrs. Surinder Kaur (i.e., the present seller) and thus they became the joint owners of the said floor. The seller have also informed the purchaser that the said floor is not mortgaged anywhere and there is no charge or dispute or any litigation pending regarding the said floor.

Any person including Bank/s, Financial Institution/s. relative/s having any claim, right, title or any interest of any nature whatsoever into or upon the aforesaid floor is hereby called upon to make the same known, in writing, with documentary evidence, by Registered AD Post, to the undersigned at the address mentioned herein below within 07 days of publication of this notice and in the event of no response having been received to the notice, the title of the seller to the said floor shall be deemed to be clear of any charge or encumbrance of any nature whatsoever and any subsequent claim shall not bind our clients/Purchaser, in any manner whatsoever.

Shivkant Arora, Advocate
M/s Intellective Law Offices
A-74, LGF, Defence Colony,
New Delhi -110024

दिवाली पर नोएडा डिपो से स्पेशल बस सेवा शुरू

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

दीपावली त्यौहार पर अपने घर जाने वाले लोगों के लिए आज से नोएडा डिपो ने स्पेशल बसे से शुरू कर दी है। त्योहारों पर घर जाने के लिए यदि आपको ट्रेन में टिकट न मिला हो तो निराश होने की जरूरत नहीं है।

नोएडा डिपो की ओर से त्योहारों पर यात्रियों को घर पहुंचाने के लिए लंबी दूरी की बसें चलाई जा रही है। त्योहारों पर नोएडा डिपो से अयोध्या व प्रयागराज के लिए बसें चलाई जा रही है। नोएडा डिपो के सहायक क्षेत्रीय प्रबंधक श्याम नारायण पांडे ने बताया कि दीपावली, छठ व अन्य त्योहारों के मद्देनजर यात्रियों की भीड़ को देखते हुए 29 अक्टूबर से लेकर 10 नवंबर तक बसों के फेरे 40 प्रतिशत बढ़ाए जाएंगे। नोएडा डिपो से 16 रूट पर बसें चलतीं हैं। कोटद्वार, मुरादाबाद, बरेली, लखनऊ, हरिद्वार, देहरादून, आगरा, कासगंज, बदायूं, रुद्रपुर व अन्य रूट पर बसों का संचालन किया जाता है। त्योहारों पर यात्रियों की सुविधा के लिए 24 घंटे बसों का संचालन किया जाएगा। डिपो से भी एक अतिरिक्त फेरा बढ़ाया जाएगाग्रेटर नोएडा डिपो के सहायक क्षेत्रीय प्रबंधक अनिल शर्मा ने बताया कि त्योहारों पर घर जाने वाले यात्रियों की भीड़ को देखते हुए रूटों पर चलने वाली बसों का एक फेरा अतिरिक्त बढ़ाया जाएगा।

पुलिस ने दीपावली व भैयादूज पर लागू किया डायवर्जन

● सेक्टर-28 एवं अट्टा चौक से अट्टापीर तक ई-रिक्शा प्रतिबंधित

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

गौतमबुद्ध नगर पुलिस कमिश्नरेट के यातायात पुलिस ने धनतेरस, दीपावली और भैयादूज को लेकर डायवर्जन लागू कर किया है। पुलिस उपायुक्त यातायात यमुना प्रसाद ने बताया कि शहर के विभिन्न बाजारों जैसे-अटटा मार्केट सेक्टर-27, इंदिरा मार्केट सेक्टर-27, सेक्टर-18, जीआईपी मॉल, गार्डन गलेरिया मॉल, डीएलएफ मॉल, ब्रहमपुत्र मार्केट सेक्टर-28, लॉजिक्स मॉल सिटी सेंटर, होशियारपुर, शॉप्रिक्स मॉल, सेक्टर-37, बॉटिनकल गार्डन, किसान चौक, सूरजपुर, जगतफार्म, परी चौक, कस्बा कासना व दादरी आदि में वाहनों के दबाव को लेकर यातायात व्यवस्था व डायवर्जन लागू किया गया है। उन्होंने बताया कि अटटा मार्केट, इंदिरा मार्केट, सेक्टर-18 मार्केट, डीएलएफ मॉल, सेंटर स्टेज मॉल, गुरुद्वारा, जीआईपी मॉल , गार्डन गलेरिया मॉल व आसपास के सभी मार्गो को नो-पार्किंग जोन बनाया गया है। नो पार्किंग जोन में वाहन खड़ा करने पर वाहनों को क्रेन द्वारा टो कर कार्रवाई की जाएगी। सेक्टर-28 एवं अट्टा चौक से अट्टापीर तक ई-रिक्शा, ऑटो, टैंपो का आवागमन पूर्णता प्रतिबंधित रहेगा जो पूर्व से ही लागू है। आमजन व वाहन चालक अटटा मार्केट, इंदिरा मार्केट, ब्रहमपुत्र मार्केट, डीएलएफ मॉल, सेंटर स्टेज मॉल, गुरुद्वारा, जीआईपी मॉल, गार्डन गलेरिया मॉल आदि में आने हेतु अपने वाहनों को डीएलएफ मॉल, सेंटर स्टेज मॉल, गुरुद्वारा, जीआईपी मॉल, गार्डन गलेरिया मॉल के अंदर स्थित पार्किंग में या इसके अतिरिक्त सेक्टर-18 स्थित मल्टीलेवल पार्किंग में पार्क कर शॉपिंग इत्यादि कार्य कर सकेंगे। लॉजिक्स मॉल सिटी के आसपास मुख्य मार्गों को नो पार्किंग जोन बनाया गया है। नो-पार्किंग जोन में वाहन खड़ा पाये जाने पर ई-चालान की कार्रवाई की जायेगी और वाहन को मार्ग से नहीं हटाए जाने पर क्रेन द्वारा टोह कर विधिक कार्यवाही की जाएगी। अटटा मार्केट सेक्टर-27, इंदिरा मार्केट सेक्टर-27, सेक्टर-18, जीआईपी मॉल, गार्डन गलेरिया मॉल, डीएलएफ मॉल, ब्रहमपुत्र मार्केट सेक्टर-28, लॉजिक्स मॉल सिटी सेंटर, शॉपरिक्स मॉल, होशियारपुर, किसान चौक, सूरजपुर, जगतफार्म, परीचौक, कस्बा कासना एवं दादरी पर आवश्यकतानुसार यातायात का डायवर्जन किया जाएगा।

तीन ने की आत्महत्या, दो की संदिग्ध मौत

नोएडा। नोएडा के विभिन्न जगहों पर रहने वाले तीन लोगों ने मानसिक तनाव के चलते आत्महत्या कर ली है। पुलिस आयुक्त लक्ष्मी सिंह के मीडिया प्रभारी ने बताया कि विमलेश ने मानसिक तनाव के चलते जहरीला पदार्थ खा लिया। एनटीपीसी क्षेत्र में रहने वाले संदीप कुमार ने बीती रात को अपने घर पर पंखे से फंदा लगाकर आत्महत्या कर लिया है।

थाना सेक्टर-39 क्षेत्र के खजूर कॉलोनी में रहने वाली कुमारी अंजली ने मानसिक तनाव के चलते अपने घर पर पंखे से फंदा लगाकर आत्महत्या कर ली। थाना बिसरख क्षेत्र में रहने वाले कौशल की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई है। थाना सेक्टर-24 क्षेत्र में रहने वाले शिवदयाल दास की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई है। पुलिस शव का पोस्टमार्टम करवा रही है।

नोएडा में दिवाली पर 1500 करोड़ के कारोबार का अनुमान

● 12 फीसद कपड़े तो 9 फीसद होगी ज्वैलरी की हिस्सेदारी, व्यापारियों ने की तैयारी

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

नोएडा में दीपावली के मौके पर करीब 1500 करोड़ रुपए के व्यापार होने की उम्मीद है। वहीं त्योहारी सीजन के चार माह में करीब 7 हजार करोड़ का व्यापार होने का अनुमान लगाया है।

ये जानकारी कन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) के संयोजक व सेक्टर 18 मार्किट एसोसिएशन के अध्यक्ष सुशील कुमार जैन ने दी। उन्होंने कहा कि त्योहारों पर इस बार व्यापारियों के लिए बड़े अवसर लेकर आ रहा है। उम्मीद है कि देश भर में लगभग चार लाख करोड़ रुपए का व्यापार एवं नोएडा के बाजारों में सात हजार करोड़ आने की संभावना है।

सुशील कुमार जैन ने कहा दीपावली से संबंधित यात्राओं एवं अनु सेवाओं के उपयोग पर दो लाख करोड़ रुपए से अधिक खर्च होने की उम्मीद है। एक अनुमान के अनुसार दीपावली त्योहार की अवधि के दौरान छोटे से लेकर उच्च श्रेणी के सभी प्रकार की वस्तुओं के लगभग दस करोड़ उपहार का आदान-प्रदान किया जाता है, जो दीपावली उत्सव की बिक्री में महत्वपूर्ण योगदान देता है। सुशील कुमार जैन ने कहा कि महत्वपूर्ण रूप से इस वर्ष दीपावली में भारतीय उत्पादों की बिक्री एवं खरीद पर ही ज्यादा जोर है। 40 हजार से अधिक देश भर के व्यापारी संगठन भारत में नर्मित उत्पादों विशेष रूप से घर की सजावट के सामान, दिवाली पूजा के सामान जिसमें मिट्टी के दीये, देवता, दीवार पर लटकने वाले, हस्तशिल्प के सामान, शुभ-लाभ, ओम जैसे पारंपरिक सौभाग्य के प्रतीक, देवी लक्ष्मी एवं श्री गणेश जी की पूजा का सामान, घर की सजावट का सामान जो स्थानीय कारीगरों, शिल्पकारों और कुशल कलाकारों द्वारा बनाई गई वस्तुओं को देश भर के बाजारों में बड़ा व्यापार देंगे। कुल कारोबार में फूड और किराना की हिस्सेदारी 13 फीसदी रह सकती है। आभूषण की हिस्सेदारी 9 फीसदी रहने की संभावना है।

गार्मेंट सेक्टर में 12 फीसदी हिस्सेदारी हो सकती है। 4 फीसदी ड्राई फ्रूट्स, मिठाई और स्नैक्स का हो सकता है। 3 प्रतिशत हिस्सा सजावटी सामान, 6 प्रतिशत सौंदर्य प्रसाधन, 8 प्रतिशत इलेक्ट्रॉनिक्स और मोबाइल, 3 प्रतिशत पूजा सामग्री और पूजा सामग्री, 3 प्रतिशत बर्तन और रसोई के घटक, 2 प्रतिशत कन्फेक्शनरी और बेकरी, 8 प्रतिशत उपहार आइटम हैं।

पिछले सालों के व्यापार से इस बार नोएडा के बाजारों में बहुत ज्यादा ग्राहक आ रहे हैं। जिसे देखते हुए इस बार 1500 करोड़ से ज्यादा का धन प्रवाह होने की आशा है। जैन ने बताया की उम्मीद है कि अगस्त से लेकर नवंबर तक के त्योहारी अवधि के दौरान, सामानों की बिक्री के माध्यम से देश के बाजारों में लगभग 4 लाख पच्चीस हज़ार करोड़ रुपए से अधिक की त्योहारों बिक्री होने की उम्मीद है जो मूल रूप से भारतीय वस्तुओं की खरीदी से ही होगी।

पेंशन सरचार्ज पर बिजली कंपनियों का होगा ऑडिट

● उपराज्यपाल ने विशेष लेखा परीक्षण की दी मंजूरी

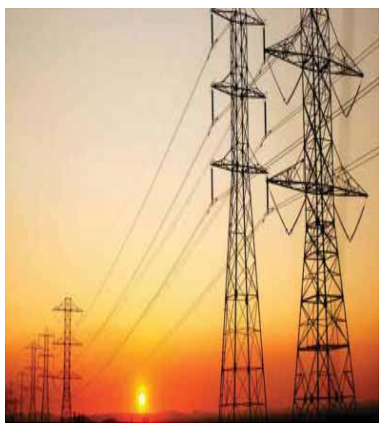

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

बिजली शुल्क पर लगाए गए पेंशन सरचार्ज लेवी का पता लगाने के लिए बिजली कंपनियों का विशेष ऑडिट होगा। यह ऑडिट वित्त वर्ष 2017-18 से वित्त वर्ष 2023-24 के बीच ग्राहकों से डिस्कॉम द्वारा वसूले गए सरचार्ज पर फोकस करेगा। इस जांच में यह सुनिश्चित किया जाएगा कि कितनी रकम पेंशन फंड को भेजी गई। मौजूदा समय में डिस्कॉम उपभोक्ताओं के मासिक बिलों में 7 फीसदी पेंशन सरचार्ज लगाते हैं। मुख्यमंत्री आतिशी ने इस महीने के शुरु में ही इस पूरे मामले की जांच के आदेश दिए थे। जिसे अब उपराज्यपाल विनय कुमार सक्सेना ने मंजूरी दे दी है।

राजनिवास कार्यालय के अनुसार, उपराज्यपाल ने राष्ट्रीय राजधानी के बिजली उपभोक्ताओं से बिजली शुल्क में लगाए गए पेंशन सरचार्ज का पता लगाने के लिए बिजली कंपनियों के विशेष ऑडिट को मंजूरी दे दी है।

विशेष ऑडिट से डिस्कॉम कंपनियों द्वारा उपभोक्ताओं से वसूले गए और पेंशन ट्रस्ट में डाले गए वास्तविक पेंशन सरचार्ज का पता लगाने में मदद मिलेगी। विशेष ऑडिट का मुख्य उद्देश्य उपभोक्ताओं से पेंशन सरचार्ज के रूप में वसूले गए फंड का पता लगाना और यह सुनिश्चित करना है कि इसका इस्तेमाल पूर्ण रूप से दिल्ली विद्युत बोर्ड के रिटायर्ड कर्मचारियों के कल्याण और भलाई के लिए हो। पिछले 7 वर्षों के दौरान पेंशन ट्रस्ट के लिए दिल्ली इलेक्ट्रिसिटी रेगुलेटरी कमिशन (डीईआरसी) द्वारा आवंटित और डिस्कॉम द्वारा एकत्र किए गए फंड में 1100 करोड़ रुपये के अंतर का पता चला है।

वित्तीय वर्ष 2022-23 के दौरान डिस्कॉम कंपनियों से पेंशन ट्रस्ट को 1930 करोड़ रुपये की मांग के मुकाबले, पेंशन सरर्चाज के रूप में 1520 करोड़ रुपये प्राप्त हुए हैं। एलजी सक्सेना ने जनहित में विद्युत अधिनियम, 2003 की धारा 108 के अंतर्गत डिस्कॉम कंपनियों का विशेष ऑडिट करने के लिए निर्देश दिए हैं।

वित्तीय वर्ष 2017-18 से 2023-24 के लिए, डिस्कॉम कंपनियां बीएसईएस राजधानी पावर लिमिटेड (बीआरपीएल), बीएसईएस यमुना पावर लिमिटेड (बीवाईपीएल) और टाटा पावर दिल्ली डिस्ट्रीब्यूशन लिमिटेड (टीपीडीडीएल) का विशेष ऑडिट, नियंत्रक और महालेखा परीक्षक (कैग)के पैनल वाले बाहरी ऑडिटर्स द्वारा किया जाएगा। पेंशन ट्रस्ट की स्थापना ट्रांसफर स्कीम रूल्स, 2001 के एक भाग के रूप में की गई थी, जिसे दिल्ली विद्युत सुधार अधिनियम, 2000 के तहत बनाया गया था और दिल्ली सरकार, दिल्ली विद्युत बोर्ड और दिल्ली विद्युत के श्रमिकों, इंजीनियरों और अधिकारियों की संयुक्त कार्रवाई समिति के बीच त्रिपक्षीय समझौते के तहत इसे बनाया गया था। बाद में वर्ष 2010 में, उच्चतम न्यायालय ने एक फैसले में फैसला सुनाया था कि दिल्ली विद्युत बोर्ड के कर्मचारियों और मौजूदा पेंशन भोगियों के प्रति कोई भी दायित्व डिस्कॉम, दिल्ली ट्रांस्को लिमिटेड आदि की जिम्मेदारी है।

चुनाव जीतने पर अधिभार वापस लेंगे : सचदेवा

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

प्रदेश भाजपा अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने बिजली कंपनियों द्वारा बिलों में वसूले गए 7 फीसदी पेंशन सरचार्ज के जांच के आदेश दिये जाने का स्वागत किया है। भाजपा फिर मांग करती है की दिल्ली सरकार और डीईआरसी दोनों बिजली बिलों एवं अन्य अधिभारों की समीक्षा करें। वीरेंद्र सचदेवा ने कहा कि भाजपा फरवरी 2025 में सत्ता में आयेगी और तुरंत बिजली बिलों में लगने वाले सरचार्ज एवं अधिभारों की समीक्षा कर वापसी के आदेश देगी। नई दिल्ली। प्रदेश भाजपा अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने उपराज्यपाल द्वारा डीडीए द्वारा अपने विभिन्न खेल परिसरों में सदस्यता एवं खेलकूद शुल्क में की गई वृद्धि के आदेश को वापस लेने का स्वागत किया है। सचदेवा और विधायक ओमप्रकाश शर्मा ने इस संदर्भ में उपराज्यपाल को पत्र लिखकर वृद्धि वापस कराने की मांग की थी। सचदेवा ने कहा है उपराज्यपाल खेल परिसर शुल्क वृद्धि को वापस करवा कर लाखों खेल प्रेमियों को दिवाली का तोहफा दिया है।

पटाखों पर प्रतिबंध लिए 377 टीमों का गठन : गोपाल राय

● राजस्व विभाग की 77, दिल्ली पुलिस की 300 टीमें करेंगी निगरानी

● पर्यावरण मंत्री ने संबंधित विभागों के साथ की बैठक

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

अधिकारियों संग बैठक में पर्यावरण मंत्री गोपाल राय।

इस दिवाली पटाखों की बिक्री और भंडारण पूरी तरह से बैन कर दिया गया है। इसकी निगरानी के लिए कुल 377 टीमें बनाई गई हैं। इनमें 300 टीमें पुलिस की और 77 टीमें राजस्व विभाग की हैं। इन सभी टीमों को स्पष्ट आदेश दिए गए हैं कि राष्ट्रीय राजधानी में कहीं से भी पटाखों की आवाज नहीं आनी चाहिए। सरकारी आदेश के बाद इन सभी टीमों ने गली मुहल्लों में घूमना शुरू कर दिया है। इसी क्रम में आम आदमी पार्टी की सरकार ने दिल्ली पुलिस को आरडब्ल्यूए, मार्केट एसोसिएशन और धार्मिक समितियों के साथ बैठकर लोगों को जागरुक करने के भी निर्देश दिए हैं। पर्यावरण मंत्री गोपाल राय ने मंगलवार को पटाखों पर पूर्ण प्रतिबंध लागू करवाने के लिए संबंधित विभागों के साथ बैठक की। बैठक में मंत्री ने अफसरों से विस्तृत जानकारी ली गई और पटाखों पर प्रतिबंध का सख्ती से पालन कराने के निर्देश दिए गए।

बैठक में दिल्ली पुलिस के एक अधिकारी ने बताया कि पुलिस की 300 टीमें निगरानी कर रही हैं। अब तक 19,005 किलोग्राम पटाखे जब्त किए गए हैं। पर्यावरण मंत्री ने कहा कि दिवाली के अवसर पर पटाखों से होने वाला प्रदूषण दिल्ली की हवा को अत्यधिक प्रदूषित कर देता है और यह प्रदूषण बच्चों और बुजुर्गों के लिए घातक होता है। इसी कारण पटाखों के निर्माण, भंडारण, बिक्री (ऑनलाइन मार्केटिंग प्लेटफॉर्म के माध्यम से डिलीवरी सहित) तथा पटाखों को जलाने पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया गया है। इस प्रतिबंध को लागू करवाने के लिए 377 टीमों का गठन किया गया है।

गोपाल राय ने कहा कि ठंड के मौसम में प्रदूषण से निपटने के लिए सरकार ने 21-प्वाइंट विंटर एक्शन प्लान की घोषणा की है, जिस पर सरकार लगातार काम कर रही है। पिछले दिनों केंद्रीय कृषि मंत्री के साथ हुई बैठक में पटाखों पर प्रतिबंध से संबंधित मुद्दा उठाया था, और आज वह केंद्रीय मंत्री से निवेदन कर रहे है कि जिस प्रकार दिल्ली में पटाखों पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया गया है, उसी प्रकार एनसीआर के राज्यों में भी प्रतिबंध लगाया जाना चाहिए। एनसीआर में छोड़े गए पटाखों का दुष्प्रभाव दिल्ली की हवा पर पड़ता है, और दिवाली के अगले दिन दिल्ली वालों के आंखों में जलन और सांस लेने में कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

पटाखों पर पूर्ण प्रतिबंध लागू करवाने के लिए पुलिस की टीमें बनाई गई हैं, जो पटाखों के पूर्ण प्रतिबंध को लागू करने के लिए काम कर रही हैं।

अब तक पटाखों की बिक्री भंडारण से संबंधित 79 केस दर्ज किए गए हैं और वहां से लगभग 19,005 किलोग्राम पटाखे जब्त किए गए हैं। जो लोग पटाखों के पूर्ण प्रतिबंध (उत्पादन, भंडारण, बिक्री) का उल्लंघन करते पाए जाएंगे, उनके खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। राय ने बताया कि सरकार ने पटाखों पर प्रतिबंध के बारे में जन जागरूकता फैलाने के लिए दीए जलाओ, पटाखे नहीं कार्यक्रम शुरू किया है, और लोगों को जागरूक करने का यह अभियान दीपावली तक चलेगा।

भगवान राम पर टिप्पणी पर जेएनयू में एबीवीपी और वाम संगठनों के सदस्यों में झड़प

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

● आईसीसी के चुनाव पर चर्चा के लिए बैठक बुलाई थी।

जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) में बीती रात विश्वविद्यालय संचालन परिषद बैठक (यूजीबीएम) में भगवान राम पर कथित आपत्तिजनक टिप्पणी को लेकर वामपंथी संगठनों और अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एवीबीपी) के विद्यार्थियों के बीच झड़प हो गई।

जेएनयू छात्र संघ ने आरोप लगाया कि अभाविप सदस्यों ने जेएनयूएसयू पदाधिकारियों पर जातिसूचक टिप्पणियां कीं। जेएनयूएसयू ने आंतरिक शिकायत समिति (आईसीसी) के चुनाव में हिस्सा लेने के विषय पर चर्चा करने के लिए यह बैठक बुलाई थी। आईसीसी विश्वविद्यालय परिसर में यौन उत्पीड़न की शिकायतों के निवारण के लिए स्थापित निकाय है।

जेएनयूएसयू यौन उत्पीड़न लैंगिक संवेदनशीलन समिति के स्थान पर आईसीसी के गठन का लंबे समय से विरोध कर रहा है। विश्वविद्यालय ने 2017 में जीएससीएएसएच को खत्म कर दिया था। जेएनयूएसयू ने मंगलवार को एक बयान में आरोप लगाया कि अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के सदस्य जबरन यूजीबीएम की बैठक में घुसकर मंच पर पहुंच गए और उन्होंने उसके सदस्यों के साथ धक्कामुक्की की तथा उन्हें धमकी दी। बयान में कहा गया, आदतन अपराधी के रूप में अभाविप यूजीबीएम में बाधा डालने लगी।

उसने जेएनयूएसयू अध्यक्ष धनंजय, उपाध्यक्ष अविजित घोष और संयुक्त सचिव मोहम्मद साजिद के साथ-साथ अपने विचार साझा करने आए अन्य छात्रों को भी परेशान किया। उन्होंने धनंजय को जातिसूचक गालियां भी दीं और उन्हें नीच कहा। जेएनयूएसयू के अनुसार, अभाविप सदस्यों ने साजिद को धमकी देते हुए कहा, तुमको भी नजीब बना देंगे। यह नजीब अहमद के लापता होने का संदर्भ था। बैठक रात में ढाई बजे तक चली। इस बीच, अभाविप ने वाम छात्र संगठनों पर भगवान राम के खिलाफ अपमानजनिक टिप्पणियां करने का आरोप लगाया।

धनतेरस पर आभूषणों की खरीदारी करती महिलाएं। फोटोः रंजन डिमरी

अमानतुल्लाह खान के खिलाफ आरोपपत्र दायर

नई दिल्ली। ईडी ने दिल्ली वक्फ बोर्ड मामले में धन शोधन के आरोपों पर विधायक अमानतुल्लाह खान के खिलाफ मंगलवार को आरोपपत्र दायर किया। पूरक आरोपपत्र 110 पन्नों का है जिसमें मरियम सिद्दीकी का भी नाम है, जिन्हें ईडी ने मामले में आरोपी के तौर पर गिरफ्तार नहीं किया है। अदालत 4 नवंबर को इस पर विचार कर सकती है।

ईडी ने खान को दो सितंबर को उनके आवास से गिरफ्तार किया था और वह इस समय न्यायिक हिरासत में हैं। विशेष न्यायाधीश विशाल गोगने ने मंगलवार को खान की जमानत अर्जी पर सुनवाई सात नवंबर तक के लिए टाल दी।

विस चुनावः मतदाता सूची का विशेष पुनरीक्षण शुरू

● अंतिम संस्करण छह जनवरी 2025 को प्रकाशित किया जाएगा

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

दिल्ली के मुख्य निर्वाचन कार्यालय ने मंगलवार से सभी 70 विधानसभा क्षेत्रों में मतदाता सूची 2025 का विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण शुरू किया। इसका उद्देश्य अगले साल फरवरी में राष्ट्रीय राजधानी में होने वाले चुनाव से पहले मतदाताओं की जानकारी को अद्यतन और दुरुस्त करना है। मुख्य निर्वाचन कार्यालय के अनुसार, इस पहल से नागरिकों को अपने विवरण में सुधार करने, अशुद्धियों की रिपोर्ट करने और मतदाता सूची में किसी भी गलत प्रविष्टि पर आपत्ति दर्ज कराने की सुविधा मिलेगी। सीईओ कार्यालय ने कहा है कि मतदाता सूची का अंतिम संस्करण छह जनवरी 2025 को प्रकाशित किया जाएगा। दिल्ली के सीईओ पी. कृष्णमूर्ति ने कहा कि संशोधन में सभी नए पात्र मतदाताओं को प्राथमिकता दी गई है, विशेषकर उन लोगों को जो एक जनवरी 2025 को या उससे पहले 18 वर्ष के हो जाएंगे। बयान में कहा गया है कि अद्यतन मतदाता सूचियां निर्धारित मतदान केन्द्रों और मतदाता केन्द्रों पर उपलब्ध हैं।सीईओ ने मतदाताओं को यह भी सलाह दी है कि वे सुनिश्चित करें कि उनका नाम मतदाता सूची में दर्ज हो, क्योंकि सिर्फ मतदाता पहचान पत्र ही मतदान के अधिकार की गारंटी नहीं है। उन्होंने कहा कि आगामी चुनावों में भाग लेने के लिए मतदाता का नाम आधिकारिक सूची में भी होना चाहिए।

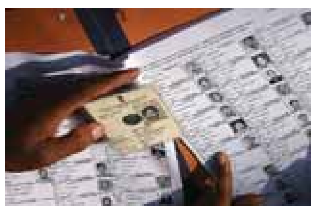

संक्षिप्त समाचार

दीपोत्सव के अवसर पर बांटे दिए

नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी किसान मोर्चा जिला चांदनी चौक के प्रभारी विपिन रूखड़ के चलो जलाएं दीप वहां, जहां अभी भी अंधेरा था। बल्लीमारान विधानसभा में स्थित रामनगर वार्ड 80 के भगवान वाल्मीकि मंदिर के पास आयोजित इस कार्यक्रम में उपस्थित लोगों को दीवाली की बधाई देते हुए कहा कि भाजपा विकास का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने के लिए संकल्पित है। उन्होंने कहा हर परिवार के लिए 11 दीयों के साथ रुई की बाती और तेल की बोतल को मिला कर एक थाली तैयार किया है। जो गरीब परिवार के बीच इसलिए बांटा जाता है ताकि हर गरीब का घर रोशन हो सके और पर्वों की खुशी उनके और बच्चों के चेहरे पर बरकरार रहे। इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से पूर्व निगम पार्षद श्यामलाल मोरवाल, भाजपा राम नगर मंडल के अध्यक्ष अजय गोला, ललित भसोढ़, वेद प्रकाश बागड़ी, हनुमान प्रसाद, भाजपा मंडल महामंत्री गौतम नायक, रवि कनेरा, नीरज तिवारी, सनी कनेरा,किशन राजपूत, यश बंसल, सहित दर्जनों स्थानीय लोग उपस्थित रहे।

सुभाष कुमारी की याद में कार्यक्रम

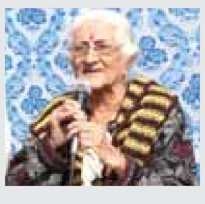

नई दिल्ली। आर्य समाज डिफेंस कॉलोनी की स्थापना करने वाली सुभाष कुमारी को उनके जानने वालों और परिजनों ने एक सभा में याद किया। उनका बीते दिनों निधन हो गया था। वो 92 साल की थी। उन्होंने डिफेंस कॉलोनी आर्य समाज की जब नींव डाली थी तब यह एरिया विकसित हो रहा था। उन्होंने अपने पति और लोधी रोड के एक सरकारी स्कूल में प्रिंसिपल अमलोक सिंह कान्वा के साथ मिलकर आर्य समाज से जुड़े परिवारों को आर्य समाज डिफेंस कॉलोनी से जोड़ा। सुभाष कुमारी जीवनभर युवाओं को देश के लिए बलिदान देने का आह्वान करती रहीं। उनके अपने बड़े पुत्र मेजर (डॉ.) अश्वनी कान्वा ने देश के लिए अपनी जान का नजराना दिया। सुभाष कुमारी जीवन के अंतिम वर्षों तक सेवा भारती और महिलाओं के संगठनों से भी जुड़ी रहीं।

विश्व आक्युपेशनल थेरेपी दिवस मनाया

नई दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी समेत देश भर में विश्व आक्युपेशनल थेरेपी दिवस मनाया गया। ऑल इंडिया आक्युपेशनल थेरेपिस्ट्स एसोसिएशन, दिल्ली शाखा के संयोजक डॉ. ललित नारायण ने कहा कि 27 अक्टूबर का दिन आक्युपेशनल थेरेपी की भूमिका और उसके प्रभाव के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए महत्त्वपूर्ण दिन है। आक्युपेशनल थेरेपी के उस महत्व को उजागर करने के लिए एक मंच के रूप में काम करता है। यह थेरेपी शारीरिक और मानसिक चुनौतियों के बावजूद लोगों को अपना सर्वश्रेष्ठ जीवन जीने में मदद करती है। एसोसिएशन के सह-संयोजक डॉ. नीरज मिश्रा के अनुसार भारत में आक्युपेशनल थेरेपी बढ़ता हुआ क्षेत्र है लेकिन जागरूकता की कमी के कारण यह लोगों तक नहीं पहुंच रही। भारत में गैर संचारी, अघात और जन्मजात विकारों के कारण आक्युपेशनल थेरेपी की आवश्यकता होती है।

अवैध शराब महिला तस्कर गिरफ्तार

नई दिल्ली। वजीराबाद इलाके में पुलिस ने अवैध शराब के साथ एक महिला तस्कर को गिरफ्तार किया है। पकड़ी गई महिला श्यामवती है। पुलिस ने इसके पास से 768 क्वार्टर व 72 बोतलें बरामद की है। उत्तरी जिला डीसीपी राजा बांठिया ने बताया कि एसीपी डॉ. नीरव पटेल की देखरेख में गठित टीम को गश्त के दौरान दोपहर के समय वजीराबाद के इलाके में अवैध शराब की बिक्री के बारे में एक गुप्त सूचना मिली। बीट स्टाफ द्वारा छापेमारी की गई।

किशोरों ने दुकानदार को चाकू घोंपा, मौत

● हंगामा का विरोध करने पर हुई कहासुनी

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली के मोती नगर में मोबाइल मरम्मत की एक दुकान के बाहर हंगामे का विरोध करने पर दो लड़कों ने कहासुनी के बाद कथित रूप से चाकू घोंपकर दुकानदार की हत्या कर दी। पुलिस ने बताया कि मामले में दोनों किशोरों को पकड़ लिया गया है।

पुलिस के अनुसार रविवार रात करीब 11 बजे उत्तम नगर निवासी दुकानदार इकबाल ने अपनी दुकान के सामने लड़कों को हंगामा करने से रोकने की कोशिश की तो उसके साथ यह वारदात हुई। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने बताया कि दोनों पक्षों के बीच कहासुनी हो गई और उसी बीच एक लड़के ने इकबाल पर चाकू से ताबड़तोड़ वार कर दिए।

इकबाल का रिश्तेदार अब्दुल मोबिन घटनास्थल पर पहुंचा और वह उसे एबीजी अस्पताल ले गया। अस्पताल में इकबाल को मृत घोषित कर दिया गया। इस घटना से पहले जब इकबाल ने इन दोनों लड़कों को अपनी दुकान के पास आवारागर्दी करते हुए देखा तो उसने अपने भतीजे को दुकान बंद कर लेने को कहा था। पुलिस के अनुसार पहले भी इकबाल अपनी दुकान के पास इन लड़कों को आवारागर्दी करते हुए देखने पर डांट चुका था जिसको लेकर उनके मन में उसके प्रति गुस्सा था।

मोती नगर थाने में हत्या का मामला दर्ज किया गया है और दोनों किशोरों को पकड़ लिया गया है। घटना के बाद से आसपास के दुकानदारों में भारी रोष है। पुलिस सुरक्षा को लेकर भी सवाल उठे है। लोगों का कहना है कि इलाके में अपराध का ग्राफ बढ़ा है।

मुठभेड़ के बाद बंबीहा गैंग के दो शूटर गिरफ्तार

नई दिल्ली। एक व्यवसायी के घर पर गोलीबारी करने के मामले में वांछित कौशल चौधरी बंबीहा गिरोह के दो शार्प शूटरों को मुठभेड़ के बाद गिरफ्तार किया गया है। आरोपियों ने रानी बाग स्थित घर पर गोलीबारी की थी। बिलाल अंसारी और शुहेब को अभियान के दौरान गिरफ्तार किया गया। पुलिस उपायुक्त प्रणव तायल ने बताया शूटर अपने साथियों से मिलने के लिए ककरोला इलाके में आये। पुलिस टीम ने मोटरसाइकिल पर दो लोगों को आते हुए देखा। पुलिस को देखकर उन्होंने अपनी पिस्तौल गोली चला दी। टीम ने आत्मरक्षा में गोली चलाई और उनमें से एक के दाहिने पैर में गोली लग गई। घायल को पास के अस्पताल ले जाया गया।

लकवा के मरीज का ब्लड क्लॉट का ग्रासरूट तकनीक से सफल ऑपरेशन

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान ने मस्तिष्क में जमने वाले खून के थक्कों के इलाज में अत्याधुनिक स्टेंट का प्रभाव और सुरक्षा आंकने के लिए ग्रासरूट (ग्रेविटी स्टेंट-रिट्रीवर सिस्टम फॉर रिपरफ्यूजन ऑफ लार्ज वेसल ऑक्लूजन स्ट्रोक ट्रायल) क्लीनिकल परीक्षण शुरू किया है।

खून के ये थक्के मस्तिष्क में खून और ऑक्सीजन का प्रवाह बाधित करते हैं, जिससे व्यक्ति स्ट्रोक का शिकार हो सकता है। एम्स में इस परीक्षण में शामिल होने के लिए मरीजों का पंजीकरण 15 अगस्त को शुरू हुआ था। 25 अगस्त को अत्याधुनिक मस्तिष्क स्टेंट की मदद से खून के थक्के जमने की समस्या से जूझ रहे पहले मरीज का सफल इलाज किया गया।

एम्स दिल्ली के तंत्रिका विज्ञान केंद्र में न्यूरोइमेजिंग और इंटरवेंशियल न्यूरोरेडियोलॉजी विभाग के प्रमुख डॉ. शैलेष गायकवाड़ ने बताया कि मरीज को अस्पताल से छुट्टी दे दी गई है।

ग्रासरूट परीक्षण भारतीय और एशियाई स्वास्थ्य देखभाल परिदृश्यों के हिसाब से तैयार किए गए अगली पीढ़ी के मस्तिष्क स्टेंट का प्रभाव आंकने वाला वाला पहला अध्ययन है। उन्होंने कहा कि अत्याधुनिक मस्तिष्क स्टेंट की लागत लचीली होगी।

दिल्ली पुलिस को मिले 241 पीएसआई, 95 महिलाएं भी शामिल

● डीपी के भर्ती किए गए प्रशिक्षु उपनिरीक्षक में 22 स्नातकोत्तर हैं, 29 के पास बी.टेक डिग्री है

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

पासिंग आउट परेड के दौरान मार्चिंग पास करती दिल्ली पुलिस की उपनिरीक्षक।

दिल्ली पुलिस अकादमी झरौदा कलां में दिल्ली पुलिस और अंडमान एवं निकोबार पुलिस के नए भर्ती 262 उपनिरीक्षकों के लिए मंगलवार को पासिंग आउट परेड का आयोजन किया गया। इनमें 95 महिला सब इंस्पेक्टर भी शामिल हैं। नए भर्ती सब इंस्पेक्टरों में 21 अंडमान एवं निकोबार पुलिस के भी शामिल हैं।

एक साल का प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद 241 सब इंस्पेक्टर दिल्ली पुलिस के बेरे में शामिल हो गए। डीपी के भर्ती किए गए प्रशिक्षु उपनिरीक्षक में 22 स्नातकोत्तर हैं, और 29 के पास बी.टेक डिग्री है, जबकि अंडमान और निकोबार पुलिस के 21 पीएसआई में 4 स्नातकोत्तर और 8 बी.टेक स्नातक शामिल हैं। अपने कठिन प्रशिक्षण के दौरान, पीएसआई को विभिन्न क्षेत्रों में प्रशिक्षण दिया गया। शैक्षणिक विषय कानून, पुलिस प्रक्रियाएँ, संगठन और प्रशासन, कंप्यूटर विज्ञान, साइबर अपराध, और पुलिस व्यवहार। शारीरिक प्रशिक्षण परेड, अनआर्म्ड कॉमबेट, फायरिंग, आतंकवाद विरोधी उपाय, शारीरिक प्रशिक्षण, और कमांडो प्रशिक्षण (दिल्ली पुलिस पीएसआई के लिए) दिया गया। इन क्षेत्रों में विशेष ध्यान, आतंकवाद और दंगों से संबंधित घटनाओं का प्रबंधन, शारीरिक फिटनेस के लिए पीटी, खेल, योग एवं ध्यान, और जिम गतिविधियाँ। बैच के सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले पीएसआई को ट्रॉफी और प्रमाण पत्र प्रदान किए गए। एसआई नीरज काक्रोलिया को बैच 53 के लिए ऑल राउंड बेस्ट ट्रॉफी से सम्मानित किया गया। दिल्ली पुलिस के पीएसआई को पुलिस प्रशासन और जांच में डिप्लोमा प्रमाण पत्र प्रदान किए गए, जो राष्ट्रीय रक्षा विश्वविद्यालय (आरआरयू), गुजरात के सहयोग से दिए गए। अजय राजगोर, आरआरयू के सहयोगी प्रशासनिक निदेशक ने सभी दिल्ली पुलिस पीएसआई को डिप्लोमा प्रमाण पत्र प्रदान करने से पहले शपथ दिलाई। आसिफ मोहम्मद अली, आईपीएस, संयुक्त निदेशक, डीपीए ने मुख्य अतिथि श्री राजेंद्र पाल उपाध्याय, विशेष पुलिस आयुक्त, विशेष सेल, और अन्य अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने प्रशिक्षुओं को उनके बुनियादी प्रशिक्षण की समाप्ति पर बधाई दी और आधुनिक तकनीक के उपयोग पर जोर दिया। उन्होंने प्रशिक्षुओं को सलाह दी कि वे अपने कर्तव्यों में नैतिकता, नैतिक मूल्यों और ज्ञान का पालन करें जो उन्हें प्रशिक्षण के दौरान सिखाया गया।

डीडीए खेल परिसरों के शुल्क से संबंधित परिपत्र को वापस लेगा

नई दिल्ली। उपराज्यपाल विनय कुमार सक्सेना ने दिल्ली विकास प्राधिकरण को खेल परिसरों के शुल्क में बढ़ोतरी से संबंधित परिपत्र वापस लेने का परामर्श दिया है।

राष्ट्रीय राजधानी में खेल क्लबों की सदस्यता शुल्क को लेकर डीडीए द्वारा जारी परिपत्र के कुछ दिनों बाद उपराज्यपाल की ओर से यह परामर्श दिया गया है। राज निवास ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर पोस्ट कर कहा, डीडीए खेल परिसरों के सदस्यों और जनप्रतिनिधियों के ज्ञापन दिए जाने के बाद माननीय उपराज्यपाल ने डीडीए को खेल परिसरों में सदस्यता और अन्य शुल्क बढ़ाने से संबंधित परिपत्र को वापस लेने का परामर्श दिया है। डीडीए के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि संस्था ने एक विकल्प पेश किया है।

फरीदाबाद ईएसआई अस्पताल में 500 बेड का विस्तार

शहर को धनतेरस पर पीएम ने दी सौगातः 625 करोड़ की लागत से बनेगा नया भवन, फतेहपुर बिल्लौच में बनेगी एम्स की सीएचसी

- हरियाणा में चिकित्सा सेवाओं को धरातल पर किया जाएगा मजबूतः स्वास्थ्य मंत्री आरती राव

पायनियर समाचार सेवा। फरीदाबाद

फरीदाबाद के ईएसआई अस्पताल को 1150 बेड का बनाया जाएगा। ईएसआई अस्पताल के परिसर में 625 करोड़ रुपए की लागत से बेसमेंट सहित दस मंजिला नई इमारत का निर्माण किया जाएगा। इसके अलावा गांव फतेहपुर बिल्लोच में एम्स की 15 बेड क्षमता की सीएचसी का निर्माण करवाया जायेगा। बल्लभगढ़ स्थित एम्स के सब हेल्थ सेंटर में अनुसंधान के लिए एयर पॉल्यूशन ऑन हेल्थ का सेंटर ऑफ एक्सीलेंस बनाया जाएगा।

नौवे आयुर्वेदिक दिवस के अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नई दिल्ली स्थित अखिल भारतीय आयुर्वेदिक संस्थान में आयोजित कार्यक्रम में 13 हजार करोड़ रुपए की स्वास्थ्य परियोजनाओं का शिलान्यास एवं शुभारम्भ किया। जिनमें जिले की उपरोक्त परियोजनाएं शामिल थी। बल्लभगढ़ स्थित एम्स के सब हेल्थ सेंटर में इस समारोह का वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से सीधा प्रसारण किया गया। समारोह में हरियाणा की स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री आरती राव मुख्यातिथि के तौर पर मौजूद रहीं। उनके साथ बल्लभगढ़ के विधायक एवं पूर्व मंत्री मूलचंद शर्मा, पृथला के विधायक रघुवीर तेवतिया, उपायुक्त विक्रम सिंह, पुलिस आयुक्त ओपी नरवाल, सीईओ जिला परिषद् सतबीर मान, एसडीएम बल्लभगढ़ मयंक भारद्वाज तथा एम्स की एचओडी डॉक्टर किरण गोस्वामी, सीएमओ डॉ अशोक कुमार मौजूद रहे।

आरती राव ने बताया कि गांव फतेहपुर बिल्लौच में करीब बीस करोड़ रुपये की लागत से 15 बेड की सीएचसी का निर्माण एम्स द्वारा कराया जायेगा। इसके लिए ग्राम पंचायत ने 6.5 एकड़ भूमि प्रदान की है। स्वास्थ्य मंत्री आरती राव ने इस अवसर पर स्वास्थ्य विभाग के स्टेट एक्शन प्लान क्लाइमेट चेंज एंड ह्यूमन हेल्थ का विमोचन किया। उन्होंने बताया कि 50 लाख रुपए की लागत से बल्लभगढ़ सब हेल्थ सेंटर में एयर पॉल्यूशन पर सेंटर ऑफ एक्सीलेंस का निर्माण करवाया जाएगा। पूर्व मंत्री एवं विधायक मूलचंद शर्मा ने भी प्रधानमंत्री द्वारा आज स्वास्थ्य सेवाओं में किये गए अभूतपूर्व विस्तार को सराहनीय बताया। उन्होंने बताया कि सत्तर साल से अधिक आयु के बुजुर्गो को अपनी बीमारियों का इलाज करने के लिए पांच लाख रुपये तक की चिकित्सा सेवा सरकार द्वारा दी जाएगी। जिसके लिए प्रधानमंत्री आयुष्मान व यह वंदना कार्ड बनाए जा रहे है। इसके अतिरिक्त गर्भवती महिलाओ व बच्चों के टीकाकरण कार्यक्रम को डिजिटल यू-विन पोर्टल से जोड़ दिया है।

कार्यक्रम में फतेहपुर बिल्लौच की सरपंच सर्व सैनी, डॉ हर्षल साल्वे, डॉ राकेश कुमार, डॉ केके वर्मा, डॉ विशाल, प्रोफेसर संजय राय सहित अन्य कई गणमान्य व्यक्ति मौजूद थे।

स्वास्थ्य मंत्री आरती राव ने किया स्वागत

स्वास्थ्य मंत्री आरती राव ने धनतेरस पर प्रधानमंत्री द्वारा दी गई इस सौगात का स्वागत किया। उन्होंने इस अवसर पर कहा कि प्रदेश में चिकित्सा सेवाओं को धरातल पर और अधिक सुदृढ़ किया जायेगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में आयुष्मान भारत जैसी अनेक कल्याणकारी योजनाएं स्वास्थ्य के क्षेत्र में चलायी जा रही है। उनका प्रयास रहेगा कि आने वाले समय में हरियाणा के सरकारी अस्पतालों में लोगो को समय पर आधुनिक चिकित्सा सेवाएं उपलब्ध हो। उन्होंने बताया कि फरीदाबाद में इस समय 650 बेड का ईएसआई अस्पताल है। आज प्रधानमंत्री ने इसमें पांच सौ बेड का विस्तार करते हुए इसे अब 1150 बेड का अस्पाताल घोषित कर दिया है यहां 625 करोड़ की लागत से नयी बिल्डिंग का निर्माण होगा। जिससे जिले में श्रमिक वर्ग को बेहतर चिकित्सा सेवा मिल सकेंगी।

स्वस्थ शरीर के लिए आयुर्वेद पद्धति श्रेष्ठ माध्यमः मुकेश शर्मा

- नौवें आयुर्वेद दिवस के उपलक्ष्य में मेगा कैम्प की शुरुआत

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

विधायक मुकेश शर्मा ने कहा कि स्वस्थ शरीर के लिए आयुर्वेद श्रेष्ठ माध्यम है। कोरोना के समय जब हम सभी चिकित्सा पद्धति से निराश हो गए थे। तब आयुर्वेद पद्धति ही थी जिसने मानव जीवन को एक नई दिशा दी। वे आज भगवान धन्वंतरि के सम्मान में जिला आयुष विभाग द्वारा सेक्टर-4 स्थित आर्य समाज मंदिर में आयोजित मेगा कैम्प में बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे।

शर्मा ने कहा कि आयुर्वेद भारत की अपनी चिकित्सा पद्धति है और विश्वमंच पर भारत की पहचान भी है। विश्व मंच पर आयुर्वेद को महत्व दिया जा रहा है, हमें अपनी चिकित्सा पद्धति पर विश्वास का भाव जागृत करने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि हरियाणा सरकार आयुर्वेद को घर-घर पहुंचाने के प्रधानमंत्री के महत्वाकांक्षी प्रयास को पूरा करने के लिए कटिबद्ध है। उन्होंने कहा कि औपनिवेशिक काल और विदेशी आक्रमणों के दौरान आयुर्वेद और हमारी पारंपरिक चिकित्सा पद्धति को काफी हानि हुई, लेकिन वर्तमान में योग और आयुर्वेद के प्रति धारणा में वैश्विक बदलाव आया है और इनकी स्वीकार्यता तेजी से बढ़ रही है। उन्होंने आयुष विभाग द्वारा लगाई गई प्रर्दशनी का भी अवलोकन किया। प्रर्दशनी के माध्यम से स्वस्थ जीवन के नियम, ऋतु दिनचर्या औषधीय पौधों की जानकारी आयुष विभाग द्वारा दी गई। शिविर में 140 मरीजों व स्कूली बच्चों ने इस चिकित्सा शिविर का लाभ उठाया। डॉ. अनुप्रिया द्वारा स्वस्थ रहने व आहार विहार के बारे में स्कूली बच्चों को रुबरु करवाया गया। आयुष विभाग द्वारा नौवें राष्ट्रीय आयुर्वेद दिवस के उपलक्ष्य में आयुर्वेद के जन आरोग्य पहलू के लिए जन संदेश, जन भागीदारी और जन आंदोलन पर जोर दिया गया।

नगर निगम ने गंदगी फैलाने वाले 2063 लोगों से 11.50 लाख रुपये जुर्माना वसूला

- सार्वजनिक स्थान पर कचरा डालकर गंदगी फैलाने वालों पर लगातार की जा रही कार्रवाई

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

निगम की स्वच्छता टीमें ऐसे व्यक्तियों पर कड़ी निगरानी रख रही है, जो सफाई वाले स्थानों पर कूड़ा डालकर गंदगी फैलाते हैं। निगम की टीमों ने जून माह से अब तक गंदगी फैलाने वाले 2063 उल्लंघनकर्ताओं के चालान करके 11.50 लाख रुपए की राशि वसूली।

यह कार्रवाई सड़कों के साथ स्ट्रीट वैंडिंग का कार्य करने वालों सहित बाजार क्षेत्रों के दुकानदारों व इधर-उधर कचरा फैंकने वालों पर की गई है। उन्होंने कहा कि सफाई व्यवस्था को खराब करने वालों पर आगे भी कार्रवाई जारी रहेगी। सड़कों, फुटपाथों, गलियों, ग्रीन बैल्ट, खाली प्लाटों, बाजारों आदि सार्वजनिक स्थानों पर कचरा डालकर गंदगी फैलाना दंडनीय अपराध है। ऐसा करने वालों पर स्वच्छता टीमें लगातार निगरानी करते हुए उन पर तुरंत ही जुर्माना लगा रही हैं। निगमायुक्त डा. नरहरि सिंह बांगड़ ने कहा कि निगम की स्वच्छता टीमें नियमित रूप से शहर की सफाई सुनिश्चित कर रही हैं, लेकिन कई बार देखा जाता है कि सुबह के समय सफाई होने के बाद कुछ लोग अपने घरों व प्रतिष्ठानों से कचरा निकालकर दोबारा से सड़क या गली में डाल देते हैं। इससे स्वच्छता कर्मियों द्वारा की गई सफाई व्यवस्था फिर से खराब हो जाती है।

नगर निगम द्वारा नागरिकों से बार-बार अपील की जा रही है कि वे अपने यहां डस्टबिन में ही कचरा रखें तथा जब कचरा एकत्रित करने वाला कर्मचारी आए तो उसे कचरा सौंपें। उन्होंने कहा कि यह हमारी नैतिक जिम्मेदारी है कि हमारे यहां से निकलने वाले कचरे का प्रबंधन सही ढंग से हो। इधर-उधर कचरा डालने से वह हवा के साथ उड़कर आसपास के क्षेत्र में गंदगी व बदबू तो फैलाता ही है, साथ ही पर्यावरण प्रदूषण को भी बढ़ाने में अपनी भूमिका निभाता है। निगमायुक्त ने कहा कि वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग द्वारा ग्रेडिड रेस्पांस एक्शन प्लान का दूसरा चरण लागू किया जा चुका है तथा प्रदूषण बढ़ाने वाली कई प्रकार की गतिविधियों को प्रतिबंधित किया हुआ है। इनमें कचरे में आग लगाने, बिना ढके कचरा, मलबा व निर्माण सामग्री का परिवहन करने, तंदूर में लकड़ी व कोयले का इस्तेमाल तथा अवैध रूप से कचरा व मलबा फैंकने पर प्रतिबंध शामिल है। इसके अलावा, निर्माण कार्यों में पर्यावरणीय नियमों की पालना करना अनिवार्य है।

सरस मेले में बिक्री ने तोड़ा पिछले साल का रिकॉर्ड

12 करोड़ रुपये से अधिक का सामान बेचा, लखपति दीदियों के हुनर और आत्मनिर्भरता को मिली नई पहचान

- कला और कौशल के शानदार सफर का हुआ मंगलवार को समापन

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

सरस आजीविका मेले में लखपति दीदी के साथ अधिकारी।

ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा आयोजित और राष्ट्रीय ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज संस्थान द्वारा समर्थित सरस आजीविका मेला 2024 के समापन के साथ ग्रामीण भारत के कला और कौशल का शानदार सफर समाप्त हो गया। इस वर्ष मेले ने पिछले सभी रिकॉर्ड तोड़ते हुए 12 करोड़ से अधिक की बिक्री दर्ज की, जिससे पूरे भारत से आई लखपति दीदियों के हुनर और आत्मनिर्भरता को नई पहचान मिली।

हस्तशिल्प, मिट्टी के बर्तन, कढ़ाईदार वस्त्र, हाथ से बनी ज्वेलरी, लोक कला पेंटिंग्स और खाद्य उत्पादों का यह मेला ग्रामीण उद्यमिता को नई ऊंचाई पर ले जाने में सफल रहा। समापन समारोह में 17 दिनों की इस यादगार यात्रा को दर्शाने वाली एक डॉक्यूमेंट्री फिल्म प्रदर्शित की गई। इस अवसर पर राष्ट्रीय ग्रामीण मंत्रालय से संयुक्त सचिव स्वाति शर्मा, राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन की डायरेक्टर राजेश्वरी एस.एम., डिप्टी कमिश्नर निशांत कुमार यादव, एडीसी हितेश कुमार मीणा और राष्ट्रीय ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज संस्थान के मार्केटिंग विभाग के अधिकारी चिरंजी लाल कटारिया सहित कई गणमान्य व्यक्ति, स्टेट कोऑर्डिनेटर एवं लखपति दीदियां उपस्थित रहीं।

इस मौके पर पुरस्कार समारोह का भी आयोजन हुआ, जिसमें स्वयं सहायता समूह की लखपति दीदियों, स्टेट कॉर्डिनेटर्स, राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन की टीम, अग्निशमन टीम, मेडिकल टीम, वॉलेंटियर्स और कुटुंबश्री एनआरओ आदि को सम्मानित किया गया। साथ ही, सभी दीदियों को सर्टिफिकेट प्रदान किए गए।

संयुक्त सचिव स्वाति शर्मा ने अपने संबोधन में कहा कि मेक योर दिवाली ब्राइट, एंड इवन योर दीदी ब्राइटर। उन्होंने सभी दीदियों से आग्रह किया कि वे अपनी सफलता में और दीदियों को भी शामिल करें। उन्होंने बताया कि इस मेले की तैयारियां पिछले छह महीने से चल रही थीं, और अब दीदियों को अपने उत्पादों की ब्रांड बिल्डिंग पर ध्यान देना चाहिए। डायरेक्टर राजेश्वरी एस एम ने सभी दीदियों को मेले को सफल बनाने में दिए योगदान के लिए धन्यवाद दिया। पिछले 17 दिनों में लाखों आगंतुकों ने इस मेले का आनंद लिया और ग्रामीण महिलाओं के उत्पादों में गहरी रुचि दिखाई। अंतिम दिन भी आगंतुकों ने इन अनोखे उत्पादों को खरीदने और इस अनुभव का हिस्सा बनने का भरपूर आनंद लिया। सरस मेला 2024 का यह सफर आने वाले वर्षों में ग्रामीण भारत की और अधिक महिलाओं को सशक्त करने और उनकी आर्थिक स्वतंत्रता के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगा।

रन फॉर यूनिटी में भाग लेंगे 15 हजार से अधिक लोग

- केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल होंगे रन फॉर यूनिटी के मुख्य अतिथि

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

तैयारियों को लेकर अधिकारियों से चर्चा करते डीसी निशांत कुमार यादव।

31 अक्टूबर को गुरुग्राम में रन फॉर यूनिटी का भव्य आयोजन होगा। इसमें 15 हजार से अधिक धावकों के भाग लेने की संभावना है। फरवरी में मैराथन के सफल आयोजन के बाद यह पहला अवसर है जब इतनी बड़ी संख्या में आमजन की सहभागिता रहेगी।

डीसी निशांत कुमार यादव मंगलवार को रन फॉर यूनिटी के आयोजन स्थल पर की जा रही तैयारियों का जायजा लिया। उन्होंने कहा कि गुरुवार की सुबह रन फॉर यूनिटी का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें 5 व 10 किलोमीटर की रेस होंगी। दोनों रेस लेजर वैली ग्राउंड में सरस मेले के आयोजन स्थल से शुरू होगी। होटल लेमन ट्री, मिलेनियम सिटी मेट्रो स्टेशन के अंडरपास से होते हुए झाड़सा कट से यू टर्न लेकर लेजर वैली ग्राउंड में खत्म होगी।

पांच किलोमीटर की रेस में शामिल होने वाले धावक इस रूट में सेक्टर-44 की रेड लाइट से यू टर्न ले सकते हैं। उन्होंने ट्रैफिक पुलिस को निर्देश देते हुए कहा कि आयोजन के दौरान आमजन को कोई परेशानी प्रकार ना उठानी पड़े। इसके लिए निर्धारित समय के दौरान आसपास से ट्रैफिक को भी डायवर्ट किया जाए। उन्होंने बताया कि रन को मुख्यातिथि केंद्रीय विद्युत, आवासन एवं शहरी कार्य मंत्री मनोहर लाल द्वारा सुबह 7 बजे आयोजन स्थल से हरी झंडी दिखाकर रवाना किया जाएगा।

डीसी ने बताया कि रन फॉर यूनिटी के दौरान मनोरंजन के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति होगी। एक-डेढ़ किमी के फासले पर जलपान, मेडिकल एड व कलाकारों के लिए छोटे-छोटे मंच बनाए जाएंगे। इस आयोजन को सफल बनाने के लिए रनर्स क्लब, खिलाड़ी, विश्वविद्यालय, स्कूल, कालेजों के विद्यार्थी निजी उद्यम क्षेत्र के खिलाड़ी कर्मचारी, रेजीडेंट वेलफेयर एसोसिएशन को आमंत्रित किया गया है। डीसी ने बताया कि देश की एकता सुदृढ़ करने के उद्देश्य से आयोजित की जा रही इस मैराथन में स्थानीय नागरिकों के लिए भाग लेना उनके जीवन का एक नया अनुभव होगा। प्रशासन का प्रयास किया जा रहा है कि किसी भी प्रतिभागी को दौड़ खत्म होने तक कोई असुविधा ना हो।

इस अवसर पर एडीसी हितेश कुमार मीणा, डीसीपी ट्रैफिक विरेंद्र विज, डीसीपी मयंक गुप्ता, सीईओ जिला परिषद जगनिवास, गुरुग्राम के एसडीएम रविंद्र, मानेसर के एसडीएम दर्शन यादव, डीडी स्पोर्ट्स गिरीराज सिंह भी मौजूद रहे।

सूरजकुंड इंटरनेशनल स्कूल में धूमधाम से मनाया दीपों का पर्व

पायनियर समाचार सेवा। फरीदाबाद

मंगलवार को सूरजकुंड इंटरनेशनल स्कूल में दिवाली के पर्व का आयोजन किया गया। इस अवसर पर स्कूल के मुख्य निदेशक एवं वरिष्ठ अधिवक्ता सत्येंद्र भड़ाना व स्कूल की प्रधानाचार्या श्रीमती शुभ्रत सिंह ने माता लक्ष्मी एवं श्री गणेश जी की पूजा कर सभी अध्यापकों एवं छात्रों को दिवाली पर्व की शुभकामनाएं दीं।

इस अवसर पर बच्चों द्वारा रंगारंग कार्यक्रम का आयोजन किया गया। बच्चों ने नृत्य द्वारा सभी का मन मोह लिया। सभी बच्चों ने अपनी अपनी कक्षाओं का डेकोरेशन किया। डेकोरेशन में कक्षा छठी अ ने प्रथम स्थान और पांचवीं अ ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। दिवाली के अवसर पर स्कूल में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। जिसमें विद्यालय के बच्चों ने बढ़ -चढ़कर हिस्सा लिया। इस उत्सव में प्री प्राइमरी से कक्षा दूसरी तक के बच्चों ने ग्रीटिंग कार्ड बनाए और विभिन्न डेकोरेशन के आइटम्स अपनी अध्यापिका की सहायता से बनाएं। कक्षा छठी से आठवीं के बच्चों ने दीए और थाली सजाई एवं डेकोरेटिव हैंगिंग आइटम्स तोरण आदि बनाएं ।

संक्षिप्त समाचार

रंगोली प्रतियोगिता में बच्चों को किया सम्मानित

गुरुग्राम। साई कराटे अकादमी के खिलाड़ियों ने दिवाली के उपलक्ष में चित्रकार और रंगोली का आयोजन किया गया। इसमें मुख्य अतिथि के रूप में पूर्व डिप्टी डायरेक्टर परसराम ने शिरकत की। उनका स्वागत अकादमी कोच लकी मणि दास उनकी टीम द्वारा किया गया। परसराम ने कहा कि बच्चों को पढ़ाई-लिखाई के साथ खेलना भी जरूरी है। उनको ऐसे ही आगे बढने् के लिए प्रेरित किया। अपनी मेहनत में हमेशा लगे रहो और आगे बढ़ो ऐसे ही देश का नाम बढ़ाओ। कार्यक्रम में महासचिव सुनील सैनी व उनकी टीम ने मुख्य अतिथि परसराम को दिवाली की बधाई दी। सुनील सैनी ने गुरुग्राम सभी छात्रों और प्रिय मित्रों को दिपावली कि हार्दिक शुभकामनाएं दीं। स्पोर्ट्स कराटे दो संगठन के महासचिव व साईं कराटे अकादमी के डायरेक्टर शिहान सुनील सैनी ने कहा कि बच्चों को बेहतर खिलाड़ी बनाने के लिए अकादमी में पूरी सुविधाओं के साथ उन्हें प्रशिक्षा दिया जाता है।

शिविर में आई 26 शिकायतें, 11 का समाधान

फरीदाबाद। प्रदेश सरकार के निर्देशानुसार तथा जिला उपायुक्त विक्रम सिंह के मार्गदर्शन में नगर निगम के तीनों जोन के कार्यालयों तथा ग्रामीण आँचल में तीनों ब्लॉकों के बीडीपीओ कार्यालयों में वीरवार को समाधान शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 26 शिकायतें आई, जिनमें से 11 शिकायतों का संबंधित अधिकारियों द्वारा मौके पर ही समाधान करवा दिया गया। शेष शिकायतों का निवारण भी अतिशीघ्र करने के कड़े निर्देश दे दिए गए हैं। उपायुक्त विक्रम सिंह ने बताया कि ने बताया कि मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के निर्देशानुसार प्रॉपर्टी आईडी से संबंधित शिकायतों के समाधान के लिए आगामी एक महीने तक प्रत्येक कार्य दिवस के दौरान सुबह 9 से 11 बजे तक नगर निकाय कार्यालयों में समाधान शिविर आयोजित किए जा रहे हैं। इन शिविरों में कोई भी आमजन अपनी शिकायत लेकर पहुच सकता है और उसका समाधान करवा सकता है। समाधान शिविर में प्रॉपर्टी आईडी, पानी/सीवरेज, सड़कें व सफाई संबंधित शिकायत प्राप्त हुई, जिसके लिए वहां संबंधित अधिकारीगणों को निर्देश दिए गए कि वे उक्त शिकायतों का निपटान शीघ्र अति शीघ्र करें।

रन फॉर यूनिटी पर दिलाई जाएगी राष्ट्रीय एकता की शपथ

पलवल। उपायुक्त डा. हरीश कुमार वशिष्ठ ने कहा कि राष्ट्रीय एकता व अखंडता को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से राष्ट्रीय एकता दिवस अर्थात 31 अक्तूबर को लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती के अवसर पर पलवल में सुबह सात बजे रन फॉर यूनिटी का आयोजन किया जाएगा। उपायुक्त डा. हरीश कुमार वशिष्ठ ने रन फोर यूनिटी के सफल आयोजन के संबंध में मंगलवार को जिलाधिकारियों की बैठक लेकर उन्हें जरूरी दिशा-निर्देश दे रहे थे। उन्होंने आयोजन से जुड़ी जानकारी देते हुए बताया कि रन फॉर यूनिटी का शुभारंभ शहर के नेताजी सुभाषचंद्र बोस स्टेडियम से होगा। रन फॉर यूनिटी में विभिन्न प्रकार की दौड़ सहित सांस्कृतिक गतिविधियां करवाई जाएंगी। दौड़ में गणमान्य नागरिक, जनप्रतिनिधि, अधिकारी, कर्मचारी, स्कूल, कॉलेज के विद्यार्थियों की उत्साहपूर्ण भागीदारी रहेगी। इस अवसर पर राष्ट्रीय एकता की शपथ भी दिलाई जाएगी। अतिरिक्त उपायुक्त अखिल पिलानी को कार्यक्रम का नोडल अधिकारी बनाया गया है। उन्होंने सभी संबंधित अधिकारियों को कार्यक्रम के भव्य आयोजन के लिए आवश्यक तैयारियां व प्रबंध सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

दिवाली मिलन के साथ अग्रसेन जयंती समारोह संपन्न

- मेघावी छात्रों को भी किया गया सम्मानित

पायनियर समाचार सेवा। पलवल

श्री वैश्य अग्रवाल सभा द्वारा आयोजित 25 दिवसीय महाराजा अग्रसेन जयंती समारोह का समापन परिवार एवं दीपावली मिलन समारोह के साथ सम्पन्न हो गया। इस अवसर पर ओमेक्स स्थित महाराजा अग्रसेन सेवा सदन के दूसरे चरण के निर्माण कार्य का शिलान्यास भी किया गया। सभा के अध्यक्ष ओमप्रकाश गुप्ता ने बताया कि 3 से 27 अक्टूबर तक चले कार्यक्रमों के संयोजकों में क्रमशः प्रभात फेरी के संयोजक जयहिंद बंसल, हवन यज्ञ के संयोजक मास्टर घनश्याम सिंगला, महिला इकाई द्वारा आयोजित दीपोत्सव की संयोजक श्रीमति कविता मंगला, रक्तदान शिविर के संयोजक रवि गुप्ता एवं विनोद जिंदल, चित्रकला प्रतियोगिता के संयोजक महेन्दर प्रशाद सिंगला एवं सह संयोजक महेन्दर शास्त्री, मेगा निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर के संयोजक गुलशन गोयल को सम्मानित किया गया।

प्रथम चरण के प्रथम चरण के निर्माण में विशेष सहयोग देने के लिए सभा के महामंत्री शैलेंदर सिंगला, कोषाध्यक्ष चन्दरप्रकाश गोयल एवं पूर्व पार्षद चंदीराम गुप्ता को एक विशेष सम्मान मैडल से सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर मेघावी छात्रों को भी सम्मानित किया गया। छात्रों में भावना अग्रवाल, अंशु मंगला डॉ कनिष्का गुप्ता तथा ऋषभ गुप्ता प्रमुख रूप से शामिल थे। वहीं जयंती को सफल बनाने में विशेष सहयोग करने के लिए मुकेश सिंगला गैस एजेंसी वाले, ओमप्रकाश पाइप वाले, पूर्व विधायक दीपक मंगला, डॉ प्रशांत गुप्ता,सभा के पूर्व प्रधान मनोज मंगला, अनिल बंसल आमरू वालों के साथ साथ शिवकुमार दवाई वाले, संजय सिंगला पंप वाले, महेश अग्रवाल कृष्ण स्वीट, मनीष गर्ग दीपिका ज्वेलर्स, बलराम गुप्ता पूर्व पार्षद, सुभाष मंगला पूर्व पार्षद, सुरेंद्र गर्ग, सुरेश मंगला सुल्तानपुर वाले, डॉक्टर नरोत्तम गोयल, विष्णु नमकीन वाले, राजेंद्र मित्तल मित्तल क्लासेस, भजनलाल गर्ग पूजा स्वीट्स, राजेश बंसल पूनम बंसल, दिनेश गर्ग, कमल मंगला, मनोज पुत्र गिरिराज, सुभाष गुप्ता डीप स्वीट्स, डॉक्टर सूर्य मोहन बांग्ला आदि को भी सम्मानित किया गया।

जेवर एयरपोर्ट के लिए मोहना पर कट मिलने से लोगों में खुशी की लहर

- पूर्व विधायक नयनपाल रावत का जताया आभार

पायनियर समाचार सेवा। फरीदाबाद

जेवर एयरपोर्ट के लिए मोहना पर कट को मंजूरी मिलने के बाद पृथला विधानसभा क्षेत्र के लोगों में खुशी का माहौल है। पूर्व विधायक नयनपाल रावत के कार्यालय पर क्षेत्र की सरदारी ने पहुंचकर जेवर एयरपोर्ट पर कट दिलाने के लिए उनके द्वारा किए गए प्रयासों की सराहना की। ग्रामीणों ने पूर्व विधायक के निवास पर पहुंचकर अपनी खुशी का इजहार किया और फूल-माला से उनका स्वागत किया। पृथला क्षेत्र की सरदारी ने नयनपाल रावत जिंदाबाद के नारे भी लगाए और कहा कि आज पूर्व विधायक प्रयास रंग लाए हैं।

पूर्व विधायक ने मोहना धरना कट को लेकर कई बार परिवहन मंत्री नितिन गडकरी से मुलाकत की और उन्हे अवगत कराया कि मोहना में कई सालों से बैठे हुए किसान परेशान हैं। पन्हेड़ा खुर्द में मोहना पर कट दिए जाने की मांग उन्होंने मुख्यमंत्री के सामने रखी थी। मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने मोहना कट को मंजूरी भी दे दी थी, लेकिन ड्राइंग में कोई कमी छोड़ दी गई और यहां पर कट न बनाने का निर्णय लिया गया। जिससे किसानों को कई महीने यहां बैठने को मजबूर होना पड़ा। नयनपाल रावत ने बताया कि उन्होंने विधानसभा में यह मुद्दा उठाया और सांसद एवं केन्द्रीय राज्यमंत्री ने भी इसके लिए नितिन गडकरी से आग्रह किया था। केन्द्रीय सड़क एवं परिवहन मंत्री नितिन गडकरी ने पूर्व विधायक नयनपाल रावत को आश्वसान भी दिया कि मोहना में कट दिलाया जाएगा और आज उनके प्रयास सफल हो गए। इस मौके पर उपस्थित किसानो ने कहा कि नयपाल रावत जैसा सेवादार ना है और ना होगा। नयनपाल रावत ने कहा कि जेवर-एक्सप्रेस को लेकर हमने व किसानो ने मेहनत की है और राज्य मंत्री कृष्णपाल गुर्जर ने भी इसका पूरा प्रयास किया है। पृथला के किसानो ने लगभग एक वर्ष तक धरना दिया, जोकि शांति पूर्व रहा। जो किसानों ने धैर्य दिखाया, उनके लिए हम धन्यवाद करते हैं।

आज मोहना में कट मिलने से क्षेत्र के लोगों में खुशी का माहौल है और इस कट को दिलवाने में हमारे नेतागण, क्षेत्र के लोगों, किसानों व मंत्रीगणों की मेनहत रही है।

किसानों से बदला ले रही सरकार: सुरजेवाला

पंजीकरण के बावजूद तीन लाख अन्नदाताओं से नहीं खरीदा गया धान, भुगत रहे आंदोलन का खामियाजा

- 3100 का ऐलान करके तय एमएसपी पर फसल खरीदने को तैयार नहीं नायब सरकार

पायनियर समाचार सेवा। चंडीगढ़

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के महासचिव एवं राज्य सभा सांसद रणदीप सुरजेवाला ने हरियाणा सरकार पर किसानों के साथ षडयंत्र रचकर एमएसपी को समाप्त करने का आरोप लगाते हुए कहा है कि हरियाणा में पंजीकरण के बावजूद तीन लाख किसानों की धान की खरीद नहीं की गई।

मंगलवार को चंडीगढ़ में पत्रकारों से बातचीत में रणदीप सुरजेवाला ने कहा कि तीसरी बार सत्ता में आने के बाद भाजपा अब धान की खरीद न करके किसानों के साथ किसान आंदोलन का बदला ले रही है।

सुरजेवाला ने दस्तावेज जारी करते हुए बताया कि हरियाणा में धान के सीजन में एमएसपी पर खरीद के लिए कुल चार लाख 19 हजार 532 किसानों ने पंजीकरण करवाया। प्रदेश में 29 अक्टूबर तक एमएसपी पर एक लाख 33 हजार 114 किसानों की धान खरीदी गई है। प्रदेश में दो लाख 86 हजार 418 किसानों की फसल एमएसपी पर नहीं खरीदी गई।

हरियाणा में पिछले साल धान की 58 लाख 92 हजार 721 मीट्रिक टन धान की खरीद की गई। इस बार 29 अक्टूबर तक महज 37 लाख 23 हजार 352 मीट्रिक टन धान की खरीद हुई है। इस साल पिछले साल के मुकाबले 21 लाख 69 हजार 369 मीट्रिक टन धान की कम खरीद हुई है। हरियाणा में धान खरीद 15 नवंबर को बंद हो जाएगी। एक नवंबर तक त्यौहार का सीजन है। 14 दिन में 22 लाख मीट्रिक टन धान खरीदना असंभव है। त्यौहारी सीजन के चलते अब स्पष्ट है कि हरियाणा में एमएसपी पर खरीद नहीं होगी।

रणदीप सुरजेवाला ने प्रेस वार्ता के दौरान मुख्यमंत्री नायब सैनी की एक वीडियो भी जारी की जिसमें उन्होंने चुनाव के दौरान आठ अक्टूबर को 3100 रुपये प्रति क्विंटल की दर से धान खरीदने का ऐलान किया था।

कांग्रेस नेता ने कहा कि आज हरियाणा की स्थिति यह है कि मंडियों में किसानों को 2300 रुपये का ऐलान करके कहीं पर भी इस दाम से खरीद नहीं हो रही है। उन्होंने दावा किया कि प्रदेश की मंडियों में औसतन 2100 रुपये क्विंटल की दर से खरीद हो रही है। सुरजेवाला ने हरियाणा सरकार को इस मुद्दे पर बहस की चुनौती देते हुए कहा कि सरकार किसानों के साथ किसान आंदोलन का बदला लेने की बजाए घोषणा के अनुसार 3100 रुपये की दर से धान की कीमतों का भुगतान करे।

सुरजेवाला ने पंजाब के संबंध में रिपोर्ट जारी करते हुए कहा क पंजाब में पिछले साल 1,11,03,434 मीट्रिक टन धान की खरीद हुई जबकि इस साल 29 अक्टूबर तक 49 लाख 84 हजार 353 मीट्रिक टन धान की खरीद हुई। इस साल पंजाब में 29 अक्टूबर तक 61 लाख 19 हजार 081 मीट्रिक टन धान की कम खरीद हुई है। साल 2023-24 पंजाब में एमएसपी खरीद के लिए सात लाख 97 हजार 659 किसानों ने पंजीकरण करवाया। इस साल तीन लाख 21 हजार 851 किसानों ने पंजीकरण करवाया। एक साल में ही चार लाख से अधिक किसान कम हो गए। पंजाब में एक साल में ही चार लाख 75 हजार 808 किसानों की संख्या कम होना किसी बड़े षडयंत्र से कम नहीं है।

पर्यावरण को स्वच्छ रखने की भावना के साथ मनाएं दीपोत्सव: मनोहर लाल

- लोकल फॉर वोकल उत्पादों को बढ़ावा देने का किया आह्वान

पायनियर समाचार सेवा। चंडीगढ़

केंद्रीय आवासन एवं शहरी विकास मंत्री मनोहर लाल ने दीपोत्सव को खुशियों को दोगुना करने के लिए, मनोहर पहल की। उन्होंने स्वच्छ दीवाली-शुभ दीवाली अभियान की शुरुआत की। यही नहीं उन्होंने पर्यावरण को स्वच्छ रखने की भावना के साथ दीवाली मनाने का आह्वान किया कि वे चाहे तो दीप जलाएं, जहां अब भी अंधेरा है। यही नहीं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के लोकल फॉर वोकल के नारे को आगे बढ़ाते हुए स्वयं स्थानीय उत्पाद खरीदकर मिसाल कायम की।

केंद्रीय मंत्री ने कहा कि दीपावली का त्योहार स्वच्छता के प्रति समर्पण की भावना को दर्शाता है। इसलिए दीपावली पर घर की साफ-सफाई व स्वच्छता को तरजीह दी जाती है, उसी तरह हमें स्वच्छ दीवाली-शुभ दीवाली मनानी चाहिए। इस समय सभी लोग त्योहार की खुशियों और एकजुटता का जश्न मना रहे होते हैं, ऐसे में यह 'स्वच्छता से संपन्नता' का भी समय है। स्वच्छ भारत मिशन के तहत स्वच्छ दीवाली-शुभ दीवाली मनाएं। उन्होंने कहा कि दीवाली का त्योहार स्वच्छता, समृद्धि और संस्कार से जुड़ा हुआ है। इसलिए इन पर्वों के दौरान साफ-सफाई की इस परंपरा को केवल अपने घर-आंगन तक ही सीमित नहीं रखना है, बल्कि इन प्रयासों को घरों से बाहर गली, मोहल्लों और स्वच्छ शहरों तक ले जाना है, ताकि त्योहारों के दौरान हम अपने देश को भी स्वच्छ रख सकें। 'स्वच्छता ही सेवा' के दौरान हुए सामूहिक प्रयासों को सराहते हुए उन्होंने कहा, एक पखवाड़े के रूप में स्वच्छता के लिए जो श्रमदान का कार्य शुरू हुए, वे थमने नहीं चाहिए। हमें यही गति तब तक बनाए रखनी हैं जब तक सभी स्वच्छता लक्षित इकाइयां पूरी तरह से स्वच्छ नहीं बन जातीं और हम कचरा मुक्त शहरों का लक्ष्य प्राप्त नहीं कर लेते। महात्मा गांधी के स्वच्छता के प्रति विचारों को याद दिलाते हुए कि कैसे स्वच्छता जरूरी चीज है, उन्होंने सभी को सभी को पर्यावरण के अनुकूल, प्लास्टिक मुक्त दिवाली मनाने के लिए प्रोत्साहित किया।

कल्याण ने की विस अधिकारियों के साथ बैठक

- कहा- सकारात्मकता और अनुशासन को बना लो मूल मंत्र, हर तरफ मिलेगी कामयाबी

पायनियर समाचार सेवा। चंडीगढ़

विधानसभा अधिकारियों के साथ बैठक करते विस अध्यक्ष हरविंद्र कल्याण।

हरियाणा विधान सभा अध्यक्ष हरविंद्र कल्याण ने मंगलवार को विधानसभा सचिवालय के सभी अधिकारियों के साथ बैठक की। अपनी पहली बैठक में कल्याण मोटिवेशनल स्पीकर और सचिवालय स्टाफ के संरक्षक की भूमिका में नजर आए। इस दौरान उन्होंने अपनी कार्यशैली को लेकर विस्तार से बातें रखीं और सचिवालय का वातावरण उत्साहवर्धक बनाने के लिए टिप्स भी दिए। बैठक के बाद विस अध्यक्ष ने सभी अधिकारियों से व्यक्तिगत बातचीत की।

विस अध्यक्ष ने कहा कि लोकतंत्र की शीर्ष संस्था विधायिका की गरिमा के अनुसार विधान सभा सचिवालय में सकारात्मक वातावरण और अनुशासन जरूरी है। उन्होंने कहा कि अनुशासन को बोझ न समझते हुए इसका आनन्द लें। अनुशासन और कार्य के प्रति निष्ठाभाव किसी भी क्षेत्र में सफलता का मूल मंत्र है। उन्होंने कहा कि कार्यप्रणाली का मूल तत्व उत्साह होना चाहिए। उत्साह सिर्फ शरीर से नहीं आता, बल्कि यह मानसिक अवस्था है। उन्होंने कहा कि जैसे हम कड़ी मेहनत और बड़ी आशाओं के साथ अपने बच्चों की परवरिश करते हैं, उसी मनोभाव से लोकतंत्र के इस मंदिर को ऊंचाइयों पर ले जाने के लिए निष्ठाभाव से कार्य करें। उन्होंने कहा कि विधायिका समाज के भाग्य का निर्धारण करती है। समाज को विधायिका से बड़ी अपेक्षाएं हैं। इन अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए विधायी कामकाज की उत्कृष्टता अनिवार्य है। उन्होंने कहा कि विधान सभा का स्टाफ इस कामकाज को संपन्न करवाने में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

इस महान संस्था में कार्य करने का अवसर मिलना सौभाग्य की बात है। कल्याण ने कहा कि गत वर्षों में विधान सभा की कार्यशैली में अनेक सुधार हुए हैं, लेकिन सुधार एक ऐसी प्रक्रिया है जो सतत रूप से जारी रहनी चाहिए।

निर्वाचन आयोग ने कांग्रेस के आरोपों को किया खारिज

नई दिल्ली। निर्वाचन आयोग ने हरियाणा विधानसभा चुनाव में अनियमितता से संबंधित कांग्रेस के आरोपों को मंगलवार को खारिज कर दिया और कहा कि पार्टी पूरे चुनाव नतीजों की विश्वसनीयता के बारे में उसी तरह का संदेह पैदा कर रही है, जैसा उसने अतीत में किया था।

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे को भेजे एक पत्र में आयोग ने कहा, किसी राष्ट्रीय राजनीतिक दल से इस तरह की उम्मीद नहीं की जाती है। आयोग देश में चुनावी लोकतंत्र को बनाए रखने और मजबूत करने में राजनीतिक दलों के सुविचारित नजरिए की गंभीरता की सराहना करता है और आश्वासन देता है कि वह समय पर शिकायत निवारण के लिए प्रतिबद्ध रहेगा। आयोग ने कहा कि एक बार फिर उसे उसका उल्लेख करने के लिए मजबूर होना पड़ा कि किसी भी वैधानिक चुनावी कदम से समझौता किए जाने का कोई सबूत नहीं होने के बावजूद कांग्रेस चुनाव नतीजों की विश्वसनीयता के बारे में उसी तरह का संदेह पैदा कर रही है, जैसा उसने अतीत में किया था।

महिला आयोग की सरकार से सिफारिश

जींद के एसपी का तबादला करें या छुट्टी पर भेजें

- यौन उत्पीड़न के आरोपों पर आईपीएस ने दर्ज कराए बयान
- सात नवंबर को महिला पुलिस कर्मियों के बयान होंगे दर्ज

जांच में करूंगा सहयोग, बंद हो मीडिया ट्रायल

जींद के एसपी सुमित कुमार ने महिला आयोग में बयान दर्ज करवाने के बाद कहा कि इस केस में अभी तक एक भी शिकायतकर्ता सामने नहीं आया है। जांच अधिकारी के समक्ष भी किसी महिला पुलिस कर्मी ने बयान नहीं दिया है। सुमित कुमार ने महिला आयोग से इस मामले में हस्तक्षेप करके मीडिया ट्रायल बंद करवाने की मांग की है। उन्होंने कहा कि जींद जिले में तैनात सभी महिला पुलिस कर्मियों के बयान दर्ज किए जाएं। इसके बाद भी अगर कुछ नहीं मिलता है तो उनकी शिकायत पर कार्रवाई की जाए क्योंकि इस प्रकरण में उनकी मानहानि हुई है।

पायनियर समाचार सेवा। चंडीगढ़

यौन शोषण के आरोपों पर जांच का सामना कर रहे जींद के एसपी सुमित कुमार मंगलवार को चंडीगढ़ में महिला आयोग के समक्ष पेश हुए और उन्होंने अपने बयान दर्ज करवाए। इस बीच हरियाणा महिला आयोग ने मुख्यमंत्री को पत्र लिखकर जांच पूरी होने तक जींद के एसपी का तबादला करने की सिफारिश की है। वहीं इस मामले की जांच अधिकारी फतेहाबाद की एसपी आस्था मोदी वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से आयोग के समक्ष पेश हुई और अपनी अब तक की जांच को लेकर स्टेटस रिपोर्ट दी।

पिछले दिनों सोशल मीडिया पर एक पत्र पत्र वायरल हुआ था। जिसमें जींद के एसपी सुमित कुमार पर महिला पुलिस कर्मियों का यौन उत्पीडन् करने का आरोप लगाया गया था। इस मामले में कोई भी शिकायतकर्ता खुलकर सामने नहीं आया लेकिन मुख्यमंत्री ने डीजीपी को इस मामले की जांच के आदेश जारी किए। डीजीपी ने फतेहाबाद की एसपी आस्था मोदी को मामले की जांच सौंपी। इस बीच सोशल मीडिया में वायरल हो रहे पत्रों का संज्ञान लेते हुए महिला आयोग ने मंगलवार को जांच अधिकारी व आरोपी अधिकारी को तलब किया। जींद के एसपी ने महिला आयोग पहुंचकर अपने बयान दर्ज करवाए। जिसमें उन्होंने अपने ऊपर लगे सभी आरोपों को निराधार करार देते हुए कहा कि इस मामले में अभी तक एक भी शिकायतकर्ता सामने नहीं आया है। जींद के एक यू-ट्यूबर की तरफ से फर्जी ई-मेल बनाकर शिकायत को वायरल किया गया है। पहली शिकायत बिना हस्ताक्षर के थी जबकि दूसरी शिकायत हस्ताक्षर के साथ आई।

मामले की जांच कर रही फतेहाबाद की एसपी आस्था मोदी ने वीसी से पेश होकर अपनी जांच रिपोर्ट दी। बयान दर्ज करने के बाद महिला आयोग की अध्यक्ष रेणु भाटिया ने कहा कि पत्र में जिन महिला पुलिस कर्मियों के नाम वायरल हुए हैं उन्हें सात नवंबर को आयोग के समक्ष पेश होकर बयान दर्ज करवाने के लिए कहा गया है।

इस बीच महिला आयोग ने हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सैनी को पत्र लिखकर कहा है कि जींद के एसपी पर यौन शोषण के आरोप लगे हैं। मामले की जांच पूरी होने तक उन्हें या तो बदला जाए, या उनका मुख्यालय चंडीगढ़ किया जाए अथवा जांच पूरी होने तक उन्हें अवकाश पर भेजा जाए।

पारंपरिक खेती को छोड़ हाईब्रिड चावल की खेती अपनाएं किसान

- एफएसआईआई ने पंजाब में शुरू किया जागरूकता अभियान
- हाईब्रिड किस्मों से कम होगी पानी की खपत, बढ़ेगा उत्पादन

पायनियर समाचार सेवा। चंडीगढ़

फैडरेशन ऑफ सीड इंडस्ट्री ऑफ इंडिया ने पंजाब के किसानों को आह्वान किया है कि वह धान की खेती के पारंपरिक तरीको को छोड़कर हाइब्रिड चावल की किस्मों को पैदा करें जिससे उनकी आमदन भी बढ़ेगी और पर्यावरण का भी संरक्षण होगा।

एफएसआईआई के अध्यक्ष एवं सवाना सीड्स के सीईओ अजय राणा ने कहा कि वर्तमान में 75 लाख एकड़ चावल क्षेत्र में से केवल तीन से साढ़े तीन लाख एकड़ में ही उच्च उपजाऊ चावल की खेती की जाती है। वर्तमान में पंजाब में हाईब्रिड चावलों की खेती की अपार संभावनाएं हैं। हाई-यील्डिंग और स्ट्रेस टोलरेंट बीज किस्मों से चावल की उत्पादकता में 15-20 प्रतिशत तक उत्पादन में वृद्धि कर सकता है। इस किस्मों में सामान्य व प्रचलित किस्मों के मुकाबले 30 प्रतिशत कम पानी लगता है। जो पंजाब में घटते भूजल स्तर के लिए भी लाभप्रद है। उन्होंने कहा कि देश मे 2031 तक करीब 150 मिलियन टन चावल की मांग होगी, जिसे पूरा करने में पंजाब के किसानों की भूमिका अहम होगी। उन्होंने कहा कि हाइब्रिड राइस पराली जलाने की समस्या को कम करने और फसल कटाई के बाद बेहतर पराली प्रबंधन में सहायक है। वर्तमान हालातों में बीज उद्योग का फोकस उच्च उपजाऊ और पर्यावरण अनुकूल बीज प्रजनन पर है।

बलजिंदर सिंह नंदरा, सदस्य एफएसआईआई, उपाध्यक्ष, सरकार एवं नियामक मामले, सीड वर्क्स इंटरनेशनल प्राइवेट लिमिटेड ने कहा कि हमारे बीज प्रजनन नवाचारों पर ध्यान केंद्रित करके, हम किसानों को ऐसे बीज प्रदान कर रहे हैं जो न केवल उच्च उपजाऊ हैं, बल्कि जलवायु-लचीले भी हैं।

सिंह ने कहा कि पंजाब के किसान सालाना लगभग 12.5 मिलियन टन चावल का उत्पादन करते हैं। कई लोग अपरिचित बीजों और प्रौद्योगिकियों को अपनाने से सावधान रहते हैं कि यह सोचते हुए कि इससे उपज में अस्थिरता या उच्च लागत हो सकती है। सिंह ने कहा कि नई किस्मों को अपनाने की प्रक्रिया किसानों के लिए एक सुगम यात्रा होनी चाहिए, जिसमें शिक्षा और क्षेत्रीय प्रदर्शन शामिल हों। कार्यक्रम में उपस्थित पंजाब के प्रगतिशील किसान परमजीत सिंह ने कहा कि नए बीजों और तकनीकों के साथ जुड़े जोखिमों को बिना किसी मजबूत समर्थन के छोटे किसानों के लिए उठाना मुश्किल है।

चलती ट्रेन में आग लगी, कुछ यात्री घायल

चंडीगढ़। रोहतक के पास सोमवार शाम एक ट्रेन में एक यात्री द्वारा ले जाए जा रहे पटाखों में विस्फोट हो जाने के कारण आग लग गई। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। अधिकारियों ने बताया कि इस घटना में कुछ यात्री मामूली रूप से घायल हो गए। ट्रेन जींद से सांपला और बहादुरगढ़ होते हुए दिल्ली जा रही थी। राजकीय रेलवे पुलिस के एक अधिकारी ने बताया कि ट्रेन के एक हिस्से में आग लग गई। अधिकारी ने फोन पर कहा, प्रारंभिक जानकारी के अनुसार, ऐसा संदेह है कि ट्रेन में किसी विद्युत उपकरण में शॉर्ट सर्किट हुआ और परिणामस्वरूप एक यात्री द्वारा ले जाए जा रहे कुछ पटाखों में विस्फोट हो गया। उन्होंने बताया कि इस घटना में दो से तीन यात्री मामूली रूप से घायल हो गए।

पटाखे मुक्त दिवाली मनानी चाहिए: सचदेवा

पायनियर समाचार सेवा। कुरुक्षेत्र

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर सोमनाथ सचदेवा, कुलसचिव प्रो. संजीव शर्मा एवं केयू के सीनियर सेकेंडरी मॉडल स्कूल की वाइस चेयरपर्सन डॉ सुनीता दलाल के निर्देशानुसार प्रधानाचार्य डॉ. सुखविंदर सिंह के मार्गदर्शन में दीपावली के उपलक्ष्य में मंगलवार को प्रदूषण मुक्त दीपावली जागरूकता रैली का आयोजन किया गया। जागरूकता रैली का शुभारंभ कुलपति आवास स्थल से हुआ।

कुलपति प्रोफेसर सोमनाथ सचदेवा ने कहा कि दीपावली खुशियों का त्यौहार है और खुशी के साथ हमें इस त्यौहार को मनाना चाहिए हमें अपने आसपास के वातावरण को शुद्ध रखते हुए पटाखे मुक्त दीपावली मनानी चाहिए और सभी को दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं दी। कुलपति एवं उनकी धर्मपत्नी डॉ. ममता सचदेवा द्वारा हरी झंडी दिखाकर रैली को रवाना किया गया। यह रैली विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों, संस्थानों से होती हुई कुलसचिव कार्यालय पहुंची जहां कुलसचिव प्रो. संजीव शर्मा ने सभी को दीपावली की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि हम सभी को राम के जीवन के आदर्शों को अपने कर्म क्षेत्र में स्थान देना चाहिए।

सार्वजनिक सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि मेरे मुवक्किल श्री गुरबचन सिंह की पत्नी श्रीमती पूजा कौर पुत्री श्री महिन्द्र सिंह 26.08.2023 को पांच लाख रूपये के गहने तथा 90,000/- नगद लेकर फरार हो गयी थी और तब से मेरे मुवक्किल से उनका कोई सम्पर्क या सम्बन्ध नहीं है। श्रीमती पूजा कौर से किसी भी प्रकार के लेन देन या व्यवहार के लिए सम्बन्धित व्यक्ति स्वयं जिम्मेदार होगा।

Vinita Raghav (Advocate), Ch.No-183A, Western Wing, Tis Hazari Court, Delhi-54.

सार्वजनिक सूचना

मेरे मुवक्किल **श्री सुभाष** पुत्र श्री राम किशन, 305 वर्ग गज यानि 0 बीघा 2 बिस्वा 2 बिसवांसी यानि 2/16 हिस्सा किता 1 क्षेत्रफल 0 बीघा 16 बिस्वा वाले प्लॉट के मालिक हैं, जो खेवटध्खाता संख्या 173ध्203, खसरा संख्या 324 (0-16) वाका सिवाना मौजा नाथूपुर तहसील वजीराबाद जिला-गुरुग्राम हरियाणा में से है, जो पंजीकृत हस्तांतरण विलेख दिनांक 11.08.2021 के माध्यम से श्री राम किशन पुत्र श्री सुनहरी द्वारा श्री सुभाष पुत्र श्री राम किशन के पक्ष में पंजीकरण संख्या 5838 के तहत एसआर-वजीराबाद हरियाणा में निष्पादित किया गया है। उपरोक्त संपत्ति फेडबैंक फाइनेंशियल सर्विसेज लिमिटेड के पास बंधक होने जा रही है। यदि किसी व्यक्ति/बैंक/वित्तीय संस्थान के पास उपरोक्त संपत्ति के संबंध में कोई दावा/ग्रहणाधिकार, अधिकार, कोई आपत्ति है, तो उसे दस्तावेजी साक्ष्यों के साथ इस नोटिस के प्रकाशन की तारीख से 7 दिनों के भीतर पंजीकृत अधिवक्ता के माध्यम से अधोहस्ताक्षरी/**एडवोकेट** विशाल मेहन, ई-713, कड़कड़डूमा कोर्ट, दिल्ली-110092 के पते पर सूचित किया जाना चाहिए। ऐसा न करने पर किसी भी दावे, ग्रहणाधिकार या आपत्ति को माफ कर दिया गया माना जाएगा। **एडवोकेट विशाल मेहन**, ई-713, कड़कड़डूमा कोर्ट, दिल्ली- 110092, मोबाइल - 9811215181

सार्वजनिक सूचना

यह सूचना संगीता की ओर से दी जाती है कि वह क्षेत्रफल 602.5 वर्ग गज, खसरा नंबर 643 में से, जो कि नवादा गांव, माजरा हस्तल, कॉलोनी नवादा एक्सटेंशन, उत्तम नगर दिल्ली-110059 के नाम से जाना जाता है, में स्थित संपत्ति संख्या डी-1/23-ए को श्री प्रदीप गुप्ता से खरीद रही है, जो इसे नोटरीकृत जनरल पावर ऑफ अटॉर्नी, बिक्री के लिए करार और वसीयत दिनांक 18.06.1999 के आधार पर अरुण कुमार से खरीदा था, और आदित्य बिड़ला हाउसिंग फाइनेंस लिमिटेड से वित्तीय सहायता के लिए बंधक रखने का इरादा रखते हैं। बैंक/एनबीएफसी की आवश्यकताओं का अनुपालन करने के लिए, हम यह सार्वजनिक सूचना देते हैं कि यदि किसी व्यक्ति के पास उक्त संपत्ति पर किसी भी प्रकार का दावा/अधिकार/स्वामित्व/हित/बंधक बनाने में कोई आपत्ति है तो वह आज से 7 दिनों के भीतर अपनी आपत्तियों के बारे में नीचे दिए गए पते पर लिखित रुप में सूचित कर सकता है। ऐसा न करने पर यह माना जाएगा कि उक्त संपत्ति सभी प्रकार के भार, ग्रहणाधिकार आदि से मुक्त है। लुसेम लीगल एलएलपी प्लॉट नंबर 136, (बेसमेंट) उदय पार्क, नई दिल्ली-110049, संपर्क # 011-40046316

THE PIONEER CLASSIFIEDS

CHANGE OF NAME

I, Maneesh Jain S/o Mahesh Kumar Jain R/O T-9/901, Panchsheel Primrose, Opposite Govindpuram Anaj Mandi Hapur Road Ghaziabad-201002 (U.P.) hereby declare that my Son's educational governments documents name has been wrongly written in as Manish Jain instead of Maneesh Jain henceforth both the name Manish Jain and Maneesh Jain both are same and one person. My correct name is Maneesh Jain.

PD(888)C

PUBLIC NOTICE

NOTICE is hereby given to the General Public that **Ms. Aditi Pancharia & Mr. Jitendra Kumar Pancharia** (hereinafter "Seller") intends to sell the Freehold Residential Flat No. F-3 on First Floor area 39.81 sq. mtr. of built on Plot No. F-57, situated at Block-F, Dilshad Colony, New Delhi-110095. The property belonged to Mrs. Gaytri W/o Mr. Jitendra Kumar and upon her death, the Seller acquired the title to the property by virtue of Surviving Member(s) Certificate bearing reference no. 9066000207389 dated 12.10.2023. The property is now being sold to Mr Zahir Abbas & Mrs Ramjanu (Intending Borrowers), and being financed by SMFG India Home Finance Co. Ltd. General Public hereby informed that if anybody has any claim or objection upon the said property by way of inheritance, share, sale, agreement, lease, license, gift, possession, legal heirs, partners, or encumbrance, however or otherwise, is required to intimate in writing to the undersigned within 07 days from the date of publication of this notice with supporting documents. After the expiration of notice period, the claim(s), if any of such person shall be treated as null and void and be treated as waived.

TAPAN RAGHAV (Advocate)
G-220, Karkardooma Court, Delhi- 110032.
Email:raghavtk.legal@gmail.com
Ph. No. +91 88000 96522

इण्डियन ओवरसीज़ बैंक
बरारी मथुरा शाखा
(पता : मथुरा- आगरा रोड, बरारी, बाया रिफाइनरी
पी.ओ. बरारी 281002 उत्तर प्रदेश, ई-मेल: iob0472@iob.in)

सांकेतिक कब्जा सूचना
(अचल संपत्ति के लिए) (नियम 8(1))

जबकी
अधोहस्ताक्षरी वित्तीय आस्तियों के प्रतिभूतिकरण और पुनर्निर्माण तथा प्रतिभूति हित प्रवर्तन अधिनियम, 2002 के तहत इण्डियन ओवरसीज बैंक, बरारी मथुरा, बरारी के अधिकृत अधिकारी हैं और प्रतिभूति हित (प्रवर्तन), नियम, 2002 के नियम 3 के साथ पठित धारा 13(12) के तहत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए उन्होंने दिनांक **18/12/2024** को एक मांग नोटिस ऋणधारक/बंधककर्ताओं/गारंटरों **मेसर्स द्वारकेश इंटरप्राईजेज गेट नं0. 09, मोहिनी पम्प के सामने, भगवती नगर, गेट नं0. 9 बरारी मथुरा, उत्तर प्रदेश, 281005, वर्षा कुमारी पुत्री खजान सिंह निवासी भगवती नगर, गेट नं0. 9 बरारी मथुरा, उत्तर प्रदेश, 281005 और इन्द्रावती पत्नी खजान सिंह निवासी भगवती नगर, गेट नं0. 9 बरारी मथुरा, उत्तर प्रदेश, 281005, (इसके बाद उधारकर्ताओं के रूप मे संदर्भित)** से नोटिस में उल्लिखित राशि **20.12.2023** के अनुसार **रू. 16,94,236.17 (सोलह लाख चौरानवे हजार दो सौ छत्तीस तथा सत्रह पैसे मात्र)** साथ ही उस पर संविदात्मक दरों पर अन्य ब्याज और वसूली की तारीख तक शेष राशि, शुल्क आदि को उक्त नोटिस की प्राप्ति से 60 दिनों के भीतर भुगतान करने को कहा था।

(1) उधारकर्ता द्वारा उक्त राशि चुकाने मे विफल रहे, उधारकर्ताओं और आम जनता को एतद्द्वारा नोटिस दिया जाता है कि अधोहस्ताक्षरी ने उक्त नियमों के नियम 8 के साथ पठित उक्त अधिनियम की धारा 13(4) के तहत उसे प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए नीचे वर्णित सम्पत्ति पर 25 अक्टुबर (2024) को कब्जा कर लिया है।

(2) विशेष रूप से उधारकर्ताओं और आम जनता को सम्पत्ति के साथ सौदा नही करने की सलाह दी जाती है और सम्पत्ति के साथ कोई भी लेनदेन **रू. 16,94,236.17 (सोलह लाख चौरानवे हजार दो सौ छत्तीस तथा सत्रह पैसे मात्र) 16.12.2023 तक** साथ ही संविदात्मक दरों पर उस पर ब्याज और मांग नोटिस जारी करने के बाद किए गए पुनर्भुगतान, यदि कोई हो रू. शून्य को घटा कर मांग नोटिस में उल्लिखित उपरोक्त तिथि से भुगतान की तिथि तक, शेष सहमती के अनुसार शुल्क इत्यादि इण्डियन ओवरसीज बैंक के प्रभार के अधीन होगा। कब्जा लेने की तारीख को बकाया देय राशि **रू. 18,85,325.00** और संविदात्मक दरों पर अतिरिक्त ब्याज और शेष के साथ शुल्क आदि भुगतान की तारीख तक देययोग्य है।

(3) उधारकर्ता का ध्यान प्रतिभूति सम्पत्ति को भुनाने हेतु उपलब्ध समय के संबंध मे, अधिनियम की धारा 13 की उप-धारा (8) के प्रावधानों की ओर आकर्षित किया जाता है।

(अचल संपतियों का विवरण)

एएसपी/209-.-

सम्पति का वह समस्त भाग जिसमे श्रीमती इंद्रावती पत्नी खजान सिंह के नाम से आवासीय मकान शामिल है, खसरा संख्या 426 का भाग मौजा बबुरी गारबी जिला मथुरा में स्थित है।

चौहदी :
पूर्व में - विक्रेता की भूमि
पश्चिम में - रास्ता
उत्तर में - विक्रेता की भूमि
दक्षिण में - विक्रेता की भूमि

दिनांक : 25.10.2024
स्थान : बरारी

प्राधिकृत अधिकारी
इंडियन ओवरसीज़ बैंक

असुरक्षित मकान के ऊपर निर्माण मामले में मालिक व ठेकेदार पर एफआईआर दर्ज

- खाली प्लॉट में मलबा डालने की शिकायत पर प्लॉट मालिक व कचरा डालने वाले पर कार्रवाई के निर्देश

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

गुरुग्राम नगर निगम में शिकायतें सुनते निगमायुक्त डा. नरहरि सिंह बांगड़।

असुरक्षित मकान के ऊपर किए जा रहे अनाधिकृत निर्माण को सील किया गया। साथ ही निर्माणकर्ता ठेकेदार के खिलाफ एफआईआर दर्ज करने के निर्देश दिए गए। इसके अलावा खाली प्लॉट में मलबा डालने की शिकायत की सुनवाई करते हुए प्लॉट मालिक सहित मलबा डालने वाले पर भी कार्रवाई के निर्देश दिए गए। मंगलवार को सेक्टर-52 स्थित हाउसिंग बोर्ड की एक शिकायत पर सुनवाई करते हुए निगमायुक्त डा. नरहरि सिंह बांगड़ ने तुरंत फैसला दिया। शिकायतकर्ता इंद्रजीत कक्कड़ ने बताया कि वे सेक्टर-52 स्थित हाऊसिंग बोर्ड में ग्राउंड फ्लोर पर रहते हैं। उनके मकान के ऊपर रहने वाले व्यक्ति अनाधिकृत रूप से ऊपरी मंजिलों का निर्माण कर रहे हैं। यह निर्माण पूरी तरह से गैर-कानूनी व बिना अनुमोदन और स्वीकृत योजना के किया जा रहा है। अब चौथी मंजिल का काम शुरू कर दिया गया है। शिकायत में बताया गया कि मकान की नींव इतनी मजबूत नहीं है कि वो अपने ऊपर 4 मंजिला इमारत को झेल सके क्योंकि सरकार द्वारा निर्माण केवल ढाई मंजिल ही किया गया है।

सदस्यता अभियान को लेकर कार्यशाला

कुरुक्षेत्र। भाजपा के सदस्यता अभियान को लेकर जिला अध्यक्ष सुशील राणा की अध्यक्षता में हुई कार्यशाला आयोजित। आज पार्टी जिला कार्यलय में एक महत्वपूर्ण कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में आगामी सदस्यता अभियान की रणनीतियों और योजनाओं पर चर्चा की गई। कार्यशाला की अध्यक्षता जिलाध्यक्ष सुशील राणा ने की व मंच संचालन तेजीन्द्र गोल्डी ने किया जिसमें जिला कार्यकर्ताओं और पार्टी के सदस्यों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। इस अवसर पर सदस्ता अभियान के प्रदेश संयोजक अशोक द्वारा कार्यकर्ताओं को नए सदस्यों को जोड़ने के लिए प्रेरित किया गया और अभियान की सफलता के लिए आवश्यक उपायों पर विचार विमर्श किया गया। जिला अध्यक्ष सुशील राणा ने कहा, हमारा लक्ष्य है कि हम अधिक से अधिक लोगों को पार्टी से जोड़ें।

डिजिटल घोटाले

प्रधानमंत्री की चेतावनी

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'डिजिटल अरेस्ट' नामक घोटाले की खतरनाक वृद्धि पर चेतावनी दी है। देश में बड़ी संख्या में लोग 'डिजिटल घोटालों' का शिकार हो रहे हैं। डिजिटल घोटालों की विभीषिका बढ़ रही है जिसमें देश भर के लोगों पर निशाना लगा कर उनकी मेहनत की कमाई लूट ली जाती है। संवाद और लेनदेन के लिए ज्यादा से ज्यादा लोगों के आनलाइन प्लेटफार्मों पर जाने के कारण घोटालेबाज इस डिजिटल परिदृश्य का लाभ उठा कर षडयंत्रकारी योजनायें बनाते हैं। पीड़ितों को यह विश्वास दिलाया दिया जाता है कि वे अपने दुष्कृत्यों के कारण कानूनी जांच के दायरे में हैं और उनको अलग-थलग रहने को कहा जाता है। इस प्रकार घोटालेबाज स्वयं को पुलिस अधिकारी बता कर लोगों को 'डिजिटल अरेस्ट' करते हैं। इससे बाहर निकलने तथा फर्जी आरोप हटाने के लिए वे पैसा वसूल करते हैं। 'डिजिटल अरेस्ट' करने वाले घोटालेबाज लोगों के भय और भ्रम का लाभ उठाते हैं। डिजिटल अरेस्ट जैसे शब्द वैध कानूनी प्रक्रिया लगते हैं। मुद्दे की गंभीरता को देखते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने इस घोटालेबाजी के खिलाफ नागरिकों को जागरूक करने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर चेतावनी जारी की है। उन्होंने स्पष्ट किया कि भारतीय कानून के अंतर्गत 'डिजिटल अरेस्ट' जैसी कोई अवधारणा नहीं है और कोई सरकारी

एजेंसी फोन या वीडियो काल से किसी के व्यक्तिगत विवरण नहीं मांगेगी। प्रधानमंत्री मोदी ने डिजिटल घोटालेबाजों के शिकार किसी व्यक्ति को तीन चरणों वाली कार्ययोजना भी बताई है। पीड़ित को घबराना नहीं चाहिए तथा बातचीत को यथासंभव रिकार्ड करने का प्रयास करना चाहिए ताकि अधिकारियों को बाद में अपराधियों का पता लगाने में आसानी हो। कोई आधिकारिक एजेंसी किसी को धमकी नहीं देगी या आनलाइन मांग नहीं करेगी। अत: ऐसे किसी कृत्य को संदेह से देखा जाना चाहिए। इसके साथ ही नागरिकों को फौरन राष्ट्रीय साइबर हेल्पलाइन तथा स्थानीय पुलिस से इसकी शिकायत करनी चाहिए। देश में 'डिजिटल अरेस्ट' के अनेक मामले सामने आए हैं जिनसे घोटाले की व्यापकता पता चलती है। हाल ही में मलयालम फिल्म अभिनेत्री माला पार्वती भी इस घोखाधड़ी का शिकार हुईं। स्वयं को मुंबई के पुलिस अधिकारी बताते हुए घोटालेबाजों ने उन पर ताइवान से नशे की तस्करी के आरोप लगाए। सौभाग्य से उन्होंने पैसा देने के पहले ही घोटालेबाजों को पहचान लिया। 'डिजिटल अरेस्ट' मामले कुल घोटालों का बहुत छोटा हिस्सा है। रोज लाखों लोग घोटालेबाजों के शिकार बन कर अपना पैसा गंवा देते हैं। 'डिजिटल अरेस्ट' जैसे डिजिटल घोटाले लोगों में कानूनी व्यवस्था के प्रति भय का लाभ उठाते हैं। घोटालेबाज अक्सर स्वयं को पुलिस अधिकारियों, केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो-सीबीआई अधिकारियों या केन्द्रीय बैंक प्रतिनिधियों की तरह पेश करते हैं जिससे उनके द्वारा दी जाने वाली धमकियां विश्वसनीय लगें। 'डीपफेक तकनीक', फर्जी आईडी कार्ड व अच्छी तरह तैयार पृष्ठभूमि उनके दावों को आधिकारिकता प्रदान करती लगती है जिससे वे भय पैदा करते हैं। प्रधानमंत्री मोदी की चेतावनी सामयिक है, पर प्रवर्तन एजेंसियों को साइबर सुरक्षा मजबूत कर घोटालेबाजों को पकड़ना चाहिए। सर्वोच्च स्तर पर साइबर सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता मिलनी चाहिए क्योंकि इसमें राष्ट्रीय सुरक्षा भी शामिल है। इस दिशा में जागरूकता अभियानों, साइबर अपराध हेल्पलाइनों तथा तकनीकी कंपनियों से बेहतर सहयोग कर घोटालेबाजों पर लगाम लगानी जरूरी है।

भारत-चीन सीमा समझौता

भारत-चीन सीमा समझौता बहुत महत्वपूर्ण है, लेकिन चीन से संबंध सामान्य करने का भारत का रास्ता चुनौतियों से भरा है। इनमें विश्वास का संकट तथा जटिल सीमा विवाद शामिल हैं।

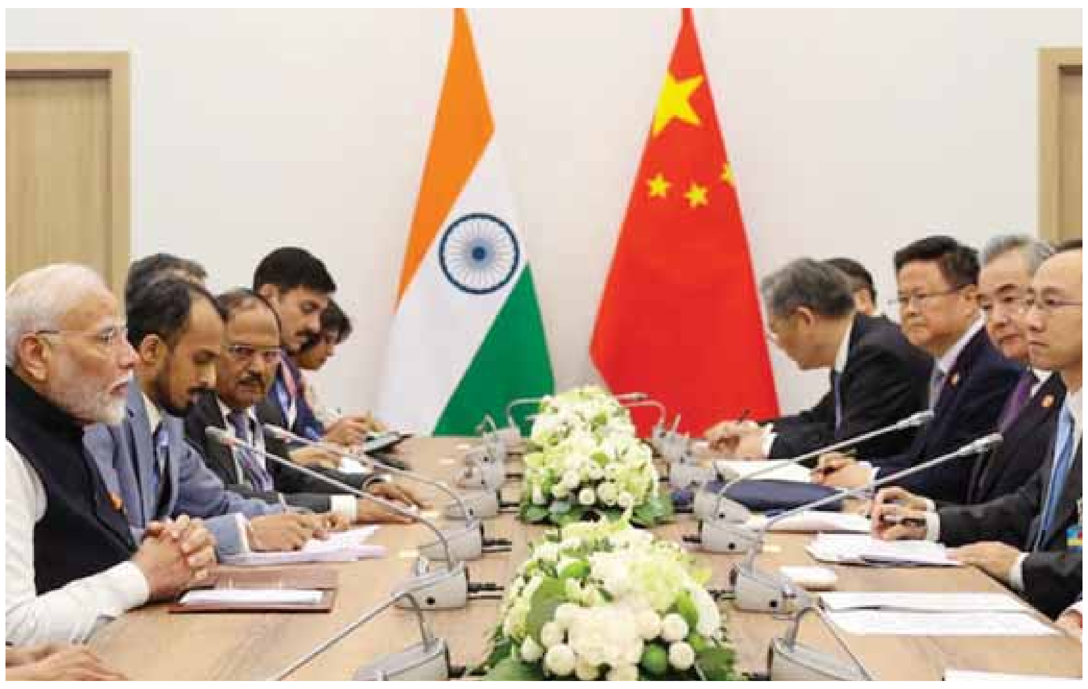

पारुल चंद्रा
(लेखिका, वरिष्ठ पत्रकार हैं)

भारत और चीन के बीच सीमा पर तनाव घटाने तथा डेपसांग व डेमचोक में गश्त फिर शुरू करने का समझौता हुआ है। यह पूर्वी लद्दाख में चार वर्ष से जारी सैनिक टकराव दूर करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। लेकिन क्या नई दिल्ली इस उपलब्धि पर खामोशी से बैठ सकती है? यह तथ्य भी महत्वपूर्ण है कि क्या चीन पर द्विपक्षीय बैठक में हुई सहमति क्रियान्वित करने का विश्वास किया जा सकता है जिसमें हाल ही में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और राष्ट्रपति शी जिनपिंग के बीच ब्रिक्स सम्मेलन के समय हुई बैठक शामिल है? इन सवालों का जवाब स्पष्ट रूप से 'नहीं' है। हालांकि, एशिया के दो बड़े दशों ने फिलहाल पुरानी दुश्मनी को ठंडे बस्ते में डाल दिया है। इसका कारण 22 अक्टूबर को रूस के कजान में सर्वोच्च नेताओं के बीच हुआ द्विपक्षीय समझौता है, लेकिन संबंधों में पैदा खाई इतनी जल्दी समाप्त होने की आशा नहीं है।

निश्चित रूप से इससे वूहान और महाबलिपुरम में 2018 व 2019 में हुई मोदी-शी अनौपचारिक शिखर बैठकों के समय हुई निकटता वापस आने की उम्मीद नहीं है। जब दोनों नेताओं के बीच कजान में बैठक हुई तब इन दोनों अनौपचारिक सम्मेलनों के दौरान पैदा गर्मजोशी का अभाव था। भले ही इस समय संबंधों में सुधार हुआ है, पर द्विपक्षीय संबंधों में गरमाहट पैदा होने में अभी लंबा समय लगेगा। इसके बजाय बीजिंग को इस बार कठोर दृष्टिकोण वाली नई दिल्ली से निपटना होगा जो चीन द्वारा धोखे से क्षेत्रीय आक्रामकता के प्रति काफी सचेत और अनुभवों से भरी है। भारत ने पूर्वी लद्दाख में चीनी आक्रामकता का डट कर मुकाबला किया है।

अत: पूरी बेशर्मी से सीमा संबंधी सभी समझौते तोड़ने के कारण अभी पहले जैसे संबंध नहीं हो सकते हैं। लद्दाख में दोनों देशों की सेनाओं के बीच हुआ टकराव 3,488 किलोमीटर लंबी वास्तविक नियंत्रण रेखा-एलएसी का एक हिस्सा है। पूरी सीमा पर अप्रैल से पहले वाली स्थिति जल्दी बहाल होने की अभी उम्मीद बहुत कम है।

डेपसांग और डेमचोक में चरणबद्ध तनाव घटाने का प्रयास स्वागत योग्य घटना है, पर नई दिल्ली को अपनी चौकसी में कमी नहीं करनी चाहिए। ऐसा कर वह जोखिम उठाएगा क्योंकि पूरी एलएसी पर चीन की रणनीति 'सलामी स्लाइसिंग' वाली बनी रह सकती है जिसके अंतर्गत वह विवादित क्षेत्रों पर कब्जे के प्रयास कर सकता है। वैसे तनाव घटाने का प्रयास केवल इस दिशा में पहला कदम है। इसके बाद सेनाओं के बीच संख्या में कमी भारतीय रोडमैप का हिस्सा है जिससे वह सीमा पर यथास्थिति बनाए रखना चाहता है। उसे चीन के लिए 'लाल रेखा' खींचनी चाहिए क्योंकि यह 'सीमा पर शांति और सद्भाव बनाए रखने' के लिए जरूरी है।

नई दिल्ली के लिए चीन द्वारा पड़ोसी भूटान में आक्रामकता भी चिन्ता का विषय है। उसने इस छोटे से हिमालयी राज्य पर उसके क्षेत्र पर कब्जा करने के लिए दबाव डाला है, जबकि ऐसा कदम भारत के लिए रणनीतिक रूप से हानिकारक है। भारतीय सेना को 2017 में हस्तक्षेप कर चीनी सैनिकों को एक सड़क बनाने से रोकना पड़ा था क्योंकि यह सड़क सिक्किम-भूटान-तिब्बत त्रिकोण पर डोकलाम पठार के निकट थी। हालांकि, 73 घंटे के बाद चीनी सैनिकों को यह क्षेत्र छोड़ना पड़ा था, पर चीन ने स्थाई रूप से इस क्षेत्र के निकट डोकलाम में सैनिकों की तैनाती कर रखी है। 2020 की गर्मियों में चीनी पीएलए द्वारा पूर्वी लद्दाख में बार-बार घुसपैठ भी उसकी सलामी-स्लाइसिंग रणनीति का हिस्सा थी। 15 जून, 2020 को गलवान में खूनी झड़प के बाद द्विपक्षीय संबंधों को गहरा झटका लगा था जिसमें 20 भारतीय सैनिक शहीद हुए थे तथा बड़ी संख्या में चीनी सैनिक भी मारे गए थे। जब तनाव में थोड़ी कमी के बाद भारत को सतर्कता से व्यवहार करना होगा।

संबंधों में सामान्य स्थिति बहाल करने में अभी लंबा समय लगेगा, पर थोड़ा स्थायित्व भी दो विशाल एशियाई देशों के बीच एक सकारात्मक घटना है। भारत के लिए यह तथ्य भी महत्वपूर्ण है कि उसकी पश्चिमी सीमा पर नाभिकीय शक्ति संपन्न पाकिस्तान उसके प्रति लगातार दुश्मनी दिखा रहा है। इस प्रकार भारत को इस क्षेत्र में दो मोर्चों पर सैनिक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। भारत इस समय विश्व शक्ति बनने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है, पर क्षेत्र में यह सैनिक तनाव उसकी महत्वाकांक्षा में बड़ी बाधा बन सकता है।

चीन-पाकिस्तान धुरी और दोनों देशों के बीच मिलीभगत भारत के लिए चुनौती है। पाकिस्तान के साथ खराब संबंधों को देखते हुए भारत को चीन के साथ संबंध सुधारने का प्रयास करना चाहिए। इस दिशा में मोदी और शी के बीच दोनों देशों के विशेष प्रतिनिधियों के बीच बैठक जारी रखने पर सहमति महत्वपूर्ण है। ये विशेष प्रतिनिधि 'सीमा क्षेत्रों में शांति और सद्भाव की निगरानी के साथ सीमा के सवाल पर एक उचित, तार्किक व परपर स्वीकार्य समाधान की भी खोज करेंगे।'

विशेष प्रतिनिधियों के बीच बैठकों की व्यवस्था 2023 में की गई थी जिसकी अब तक 22 दौर की बैठकें हो चुकी हैं। हालांकि, 2019 के बाद इनकी कोई बैठक नहीं हुई है, पर सीमा सवाल की जटिलता तथा बीजिंग द्वारा स्वयं समाधान से पैर पीछे खींचने को देखते हुए विशेष प्रतिनिधि व्यवस्था का महत्व बढ़ जाता है। यह दोनों देशों के बीच संवाद बनाए रखने का एक उचित व प्रभावी माध्यम है। जब नई दिल्ली और बीजिंग तनाव घटाने की दिशा में कदम उठाते रहंगे तब भी सीमा का सवाल संबंधों में बाधा बना रहेगा। भारत में चीन के प्रति अविश्वास का स्तर बहुत ऊंचा है क्योंकि चीन सीमा पर शांति और सद्भाव बनाए रखने के मामले में पुराने समझौतों का पालन करने में विफल रहा है। अपनी ओर से बीजिंग भी सतर्क रहेगा क्योंकि उसे भारत के अमेरिका तथा अन्य क्वाड सदस्य देशों से बढ़ते संबंधों के प्रति चिन्ता है। हिंद-प्रशांत क्षेत्र में भारत और क्वाड की सक्रिय भूमिका को चीन के बढ़ते वर्चस्व का जवाब माना जा रहा है। इससे बीजिंग को चिन्ता है।

लेकिन इन सारे तथ्यों के बावजूद भारत के सामने चीन से संबंध रखने का कोई और विकल्प नहीं है। इसका कारण दोनों देशों की भौगोलिक निकटता के साथ बीजिंग का आर्थिक-औद्योगिक आधार है। द्विपक्षीय आर्थिक और व्यापारिक संबंध चीन के पक्ष में बुरी तरह झुके हैं। भारत ने चीन से 2023-24 में चीन से 101.7 बिलियन डालर की चीजें आयात कीं जो किसी अन्य देश की तुलना में बहुत अधिक हैं। दूसरी ओर चीन को भारत का निर्यात केवल 16.7 बिलियन डालर था।

इस प्रकार नई दिल्ली भारी व्यापार घाटे का शिकार थी। भारत अनेक क्षेत्रों में चीन से आयात पर काफी निर्भर है। इनमें औद्योगिक मशीनें, टेलीकाम, एलेक्ट्रानिक्स, बिजली के उपकरण, रसायन, फार्मास्यूटिकल्स, लोहा, स्टील, आदि शामिल हैं। फार्मास्यूटिकल्स जैसे कुछ क्षेत्रों में भारतीय निर्माताओं को बिना चीन से आयात के काम करना कठिन हो जाएगा। भारत सरकार ने खासकर वर्तमान सीमा समस्या पैदा होने के बाद व्यापार में ज्यादा संतुलन बनाने के लिए अनेक कदम उठाए हैं तथा नीतिगत निर्णय किए हैं, लेकिन यह असंतुलन और बढ़ा है। इस प्रकार अर्थशास्त्र, राजनीति या राष्ट्रवादी भावनाओं पर भारी पड़ रहा है। सैनिक मोर्चे पर भारत को चीन के मुकाबले कठोरता प्रदर्शित करने से पीछे नहीं हटना चाहिए और उसने गलवान में झड़प के बाद ऐसा ही किया है।

इसके साथ ही उसे विभिन्न मद्दों के समाधान के लिए अपने प्रयास और तेज करने चाहिए। इन मुद्दों में अत्यन्त जटिल सीमा समस्या का समाधान भी शामिल है। चीन के साथ क्षेत्र संबंधी विवाद जारी रहना भारत के दीर्घकालीन रणनीतिक हितों के लिए लाभदायक नहीं है क्योंकि इससे द्विपक्षीय संबंधों पर प्रभाव पड़ता है और उनके बिगड़ने की आशंका बनी रहती है। ऐसे में भारत को चीन के साथ विश्वास बहाली के कदम उठाने तथा उसके साथ अपने पूर्व अनुभवों को देखते हुए सतर्कता बरतने के बीच संतुलन बनाए रखना होगा।

आयुर्वेद करता है समग्रता से उपचार

"संतुलन और सामंजस्य के सिद्धांतों पर आधारित आयुर्वेद व्यक्तियों को समग्र स्वास्थ्य प्राप्त करने के लिए मार्गदर्शन करता है।"

प्रतापराव जाधव
(लेखक, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्य मंत्री हैं)

विश्व आयुर्वेद दिवस, जो हर साल भगवान धन्वंतरि जयंती के शुभ अवसर पर मनाया जाता है, भारत की स्वास्थ्य और कल्याण की समृद्ध विरासत का सम्मान करने का एक शानदार अवसर प्रदान करता है। इस वर्ष, 29 अक्टूबर, 2024 को, हम आयुर्वेद को न केवल एक प्राचीन उपचार पद्धति के रूप में बल्कि एक जीवंत परम्परा के रूप में मान्यता देने के लिए एक साथ आते हैं जो दुनिया भर में लोगों के जीवन को प्रेरित और परिवर्तित करती रहती है।

संतुलन और सामंजस्य के सिद्धांतों पर आधारित आयुर्वेद व्यक्तियों को उनके अद्वितीय मन-शरीर की संरचना को समझकर और प्रकृति की लय के साथ तालमेल बिठाकर समग्र स्वास्थ्य प्राप्त करने के लिए मार्गदर्शन करता है। इसका कालातीत ज्ञान निवारक देखभाल, प्राकृतिक उपचार और शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य का समर्थन करने वाली जीवनशैली को बढ़ावा देता है। आयुर्वेद की पहुंच प्राचीन भारत से बढ़कर दुनिया भर के लोगों तक पहुंच गई है, जो दुनिया को भारत के कल्याण के उपहार का प्रतीक है।

जब हम आयुर्वेद दिवस मनाते हैं, तो आइए हम इस अमूल्य विरासत को अपनाने और संरक्षित करने के लिए प्रतिबद्ध हों। आयुर्वेद, जिसे जीवन का विज्ञान माना जाता है, समग्र चिकित्सा की सबसे पुरानी और सबसे व्यापक प्रणालियों में से एक है।

प्राचीन भारत में उत्पन्न, आयुर्वेद शरीर, मन और आत्मा के भीतर संतुलन प्राप्त करने पर ध्यान केंद्रित करता है। हाल के वर्षों में, आयुर्वेद ने उल्लेखनीय वैश्विक मान्यता प्राप्त की है, जो आधुनिक स्वास्थ्य सेवा के साथ आयुर्वेद सहित आयुष प्रथाओं को एकीकृत करने के लिए पीएम मोदी के दूरदर्शी दृष्टिकोण का प्रमाण है।

2014 में एक स्वतंत्र इकाई के रूप में आयुष मंत्रालय की स्थापना द्वारा रेखांकित उनके नेतृत्व ने आयुर्वेद को मुख्यधारा, विश्व स्तर पर सम्मानित स्वास्थ्य सेवा दृष्टिकोण में बदलने के लिए मंच तैयार किया। तब से सरकार ने आयुर्वेद की पहुंच को बढ़ावा देने और विस्तार करने के लिए कई पहल की हैं। दुनिया भर में अनुसंधान संस्थानों, शैक्षणिक केंद्रों और स्वास्थ्य सेवा संगठनों के साथ साझेदारी के माध्यम से, भारत ने आयुर्वेद को व्यापक दर्शकों तक पहुंचाने के लिए साक्ष्य-आधारित अध्ययन, तकनीकी प्रगति और नीति समर्थन पर जोर दिया है।

इसके अलावा, अभिनव सहयोग और अंतर-सांस्कृतिक आदान-प्रदान को प्रोत्साहित करने के सरकार के प्रयासों ने आयुर्वेद के निवारक और समग्र लाभों की अंतर्राष्ट्रीय प्रशंसा को बढ़ावा दिया है। जैसा कि हम वैश्विक स्तर पर आयुर्वेद के विकास को देखते हैं, स्वास्थ्य, प्राकृतिक उपचार और निवारक देखभाल पर इसका जोर पहले से कहीं अधिक है, जो आधुनिक स्वास्थ्य चुनौतियों को संबोधित करता है और चिकित्सा और स्वास्थ्य की दुनिया में भारत के अमूल्य योगदान को फिर से स्थापित करता है। आयुर्वेद, जिसे अक्सर जीवन का विज्ञान माना जाता है, प्राचीन भारतीय दर्शन में गहराई से निहित है, जो दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व के आसपास सनातन दार्शनिक विद्यालयों के मूलभूत विचारों से लिया गया है। इसका विकास वैशेषिक विद्यालय से काफी प्रभावित था, जो प्राकृतिक सिद्धांतों और तत्वों के वर्गीकरण पर ध्यान केंद्रित करने के लिए जाना जाता है, और न्याय विद्यालय, जिसने तर्क, तर्क और संरचित विश्लेषण पर जोर दिया। इन विद्यालयों ने एक ऐसा ढांचा तैयार किया जिसने आयुर्वेद को स्वास्थ्य के लिए एक व्यवस्थित दृष्टिकोण विकसित करने की अनुमति दी, जिसमें प्राकृतिक नियमों के आधार पर निदान, अवलोकन और अनुमान पर जोर दिया गया।

इसके अलावा, आयुर्वेद की वैचारिक नींव सांख्य दर्शन के साथ संरेखित होती है, एक ऐसा विद्यालय जो अस्तित्व, चेतना और मन और पदार्थ के द्वंद्व की प्रकृति में तल्लीन करता है। पुरुष (चेतना) और प्रकृति (पदार्थ) के बीच की अंत:क्रिया में सांख्य की अंतर्दृष्टि ने आयुर्वेद को शरीर-मन के संबंध की व्यापक समझ प्रदान की, जो स्वास्थ्य और कल्याण के प्रति इसके दृष्टिकोण का अभिन्न अंग है। साथ में, इन दार्शनिक प्रभावों ने आयुर्वेद के मानव जीवन के समग्र दृष्टिकोण को विकसित किया, जिसमें स्वास्थ्य को मन, शरीर और पर्यावरण के बीच एक जटिल संतुलन के रूप में माना जाता है।

इस संश्लेषण ने न केवल आयुर्वेद के दोषों (जैविक ऊर्जा) के सिद्धांतों को मजबूत किया, बल्कि इस बात की जागरूकता भी बढ़ाई कि जीवनशैली, आहार और मानसिक स्थितियाँ शारीरिक स्वास्थ्य को कैसे सीधे प्रभावित करती हैं। इस प्रकार, आयुर्वेद एक अंत:विषय विज्ञान के रूप में उभरा, जो अनुभवजन्य अवलोकन पर आधारित है, फिर भी गहराई से दार्शनिक है, अंतत: उपचार का एक ऐसा ढांचा पेश करता है जो आधुनिक स्वास्थ्य को समझने में प्रासंगिक और व्यावहारिक दोनों है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी समकालीन स्वास्थ्य विज्ञान के साथ आयुर्वेद के एकीकरण को बढ़ावा देने में एक महत्वपूर्ण शक्ति रहे हैं, एक ऐसे स्वास्थ्य सेवा मॉडल को बढ़ावा दे रहे हैं जो निवारक और समग्र दोनों दृष्टिकोणों को महत्व देता है। उनकी दृष्टि एक स्थायी स्वास्थ्य सेवा ढांचे को रेखांकित करती है जहां आयुर्वेद जैसी पारंपरिक चिकित्सा प्रणालियाँ जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाने में एक आवश्यक भूमिका निभाती हैं।

यह दृष्टिकोण सभी के लिए स्थायी स्वास्थ्य समाधान के उनके व्यापक एजेंडे के अनुरूप है, जो आयुर्वेद की अद्वितीय निवारक और उपचारात्मक शक्तियों को मान्यता देता है जो सहस्राब्दियों पुराने ज्ञान में निहित हैं। इस दृष्टिकोण के केंद्र में राष्ट्रीय आयुष मिशन और आयुष स्वास्थ्य और कल्याण केंद्रों की स्थापना जैसी पहल हैं जिन्हें अब आयुष आरोग्य मंदिर के रूप में जाना जाता है। इन पहलों का उद्देश्य भारत के स्वास्थ्य सेवा परिदृश्य को नया आकार देना है, आयुष को सामाजिक रूप से व्यवहार्य, किफ़ायती और एलोपैथिक दवा का पूरक विकल्प बनाना है।

आप की बात

प्रदूषण की मार

हाल ही में जारी वायु गुणवत्ता सूचकांक आंकड़ों के अनुसार राजधानी दिल्ली की हवा को सबसे ज्यादा खराब पाया गया। गाजियाबाद, नोएडा, ग्रेटर नोएडा, गुरुग्राम व फरीदाबाद में भी कमोबेश यही स्थिति है। वातावरण में इतना ज्यादा प्रदूषण घुला हुआ है कि आमजन को सांस लेने में आ रही परेशानियों से श्वसन तंत्र दुष्प्रभावित हो रहा है। हवा में मौजूद प्रदूषण के मुख्य कारकों में वाहनों से उत्सर्जित धुंआ, टूटी फूटी सड़कों पर उड़ती धूल, खुले में जलते चूल्हे, औद्योगिक इकाइयों से निकलती जहरीली गैसें, पंजाब व हरियाणा के खेतों में कुछ गैर-जिम्मेदार किसानों द्वारा पराली जलाना, त्योहार मनाने की आड़ में आतिशबाजी एवं पटाखों का चल, आदि शामिल हैं। दीपोत्सव पर्व में पटाखों के प्रयोग को हतोत्साहित करना पर्यावरण संरक्षण के दृष्टिकोण से समय की मांग है। हालांकि, सरकार प्रदूषण पर लगाम लगाने के लिए प्रयास करती है, पर आम जनता को भी इसमें अपना योगदान देना चाहिए। इसके साथ ही प्रदूषण नियंत्रण पर राज्यों व केन्द्र सरकार के बीच राजनीतिक मतभेदों को किनारे रख कर सहमति बननी चाहिए तथा इसका जमीनी क्रियान्वयन सुनिश्चित किया जाना चाहिए। प्रदूषण की मार से त्रस्त जनता को राहत दिलाना सभी राजनेताओं का कर्तव्य है।

युगल किशोर शर्मा, फरीदाबाद

ग्लोबल वार्मिंग का खतरा

राष्ट्रसंघ महासचिव अंटोनिओ गुटरेस ने एक बार फिर से चेतावनी दी है कि पृथ्वी गर्म और अधिक खतरनाक होती जा रही है जहाँ गर्मी की लहरें 50 डिग्री सेल्सियस से अधिक तापमान तक पहुँच रही हैं। उन्होंने कहा कि अत्यधिक गर्मी लोगों की जान ले रही है, अर्थव्यवस्थाओं को कमजोर कर रही है और असमानताओं को बढ़ा रही है। इस पद को संभालने के बाद से ही वे जलवायु परिवर्तन और कार्बन उत्सर्जन के बढ़ते खतरे के बारे में दुनिया को सचेत करते आ रहे हैं। मगर दुनिया के कर्ताधर्ता सिर्फ हर साल संयुक्त राष्ट्र के वार्षिक जलवायु परिवर्तन सम्मेलन- कॉन्फ्रेंस ऑफ द पार्टीज़ में भाग ले कर संतुष्ट हो जाते हैं। इस साल इसका 29वां सम्मेलन अज़रबैजान में आयोजित किया जा रहा है। लेकिन इसमें अच्छे-अच्छे भाषणों के सिवा कोई और उम्मीद नहीं है। बिगड़ते मौसम की मार आम आदमी झेलता आ रहा है और आगे भी झेलता रहेगा। बाढ़, सूखा, जंगलों में आग, तूफ़ान, समुद्री तूफान तथा समुद्र के स्तर में वृद्धि का खामियाजा आम लोगों और समाज के सबसे गरीब लोगों को भुगतना पड़ता है। ग्लोबल वार्मिंग व उससे पैदा प्रदूषण संकट के कारण दुनिया के अनेक भागों में बड़े पैमाने पर विस्थापन भयावह रूप ले रहा है।

- जंग बहादुर सिंह, जमशेदपुर

आयुर्वेद का महत्व

भारतीय ऋषियों द्वारा सदियों से दीर्घ और स्वस्थ जीवन के लिए आयुर्वेदिक औषधियों का प्रयोग किया जा रहा है। एलोपैथिक दवाइयों के मुक़ाबले आयुर्वेदिक दवाई भले ही कुछ धीमा असर करती हों, मगर यह कई असाध्य रोगों को जड़मूल से ख़त्म कर सकती है। उचित मात्रा में उपयोग करने पर आयुर्वेदिक दवाइयों का कोई साइड इफेक्ट नहीं होता जबकि एलोपैथी दवाएं, खासकर एंटीबायोटिक और स्टेरॉयड भयानक साइड इफेक्ट पैदा कर सकती हैं। इनका उपयोग एक बार करने के बाद इनकी आदत पड़ जाती है, जिसके चलते दवा का डोज़ और उसके साइड इफेक्ट भी बढ़ते जाते हैं। आयुर्वेदिक इलाज में किसी प्रकार की महंगी जांच आदि पर कोई पैसा खर्च नहीं करना पड़ता और सस्ते में इलाज हो जाता है। अब लोगों का विश्वास भी आयुर्वेदिक दवाओं के प्रति बढ़नें लगा है। कोरोना काल में आयुष काढ़े का उपयोग करने वालों को बहुत लाभ मिला। इससे अनेक लोगों को मामूली समस्याओं से राहत मिली और अस्पताल नहीं जाना पड़ा। सरकार भी अब आयुर्वेदिक इलाज को बढ़ावा दे रही है। पातंजलि समेत अनेक संस्थाएं इन पर शोध कर रही है जिससे भविष्य में परिष्कृत हो कर आयुर्वेदिक इलाज और अधिक असर कारक होगा।

-विभूति बुपक्या, खाचरोद

मुफ्तखोरी की आदत

मुफ्तखोरी की आदत नागरिकों को पंगु बनती है, मगर वोटों की राजनीति के चलते अब देश भर में सभी राज्य सत्ता में आने के लिए इस अप्रत्यक्ष रिश्वत का उपयोग कर रहे हैं। इसके चलते लगभग सभी राज्य कर्ज में आकंठ डूबे हुए हैं। मगर सत्ता के लिए राजनेता यह सब कुछ दांव पर लगाने को तैयार हैं। मुफ्त की सभी योजनाओं पर सरकार जितने रुपए खर्च कर रही है यदि यही पैसा लोगों को खुद के रोजगार के लिए आवंटित किया जाए तो जनता पूरी तरह आत्मनिर्भर बन सकती है। दूसरे कर्ज माफी के चलते बैंकों की हालत पतली हो रही है, मगर सरकारों को कोई फ़र्क नहीं पड़ता। अब चुनाव आयोग और सुप्रीम कोर्ट को मिलकर ही रेवड़ी कल्चर को सख्ती के साथ बंद करना होगा। यदि राजनीतिक दल मुफ्त की रेवड़ियां बांटना ही चाहते हैं तो अपने पार्टी फंड से बांटे। यदि यही स्थिति रही तो राज्यों को कर्ज मिलने पर रोक लगानी पड़ेगी। मुफ्त की रेवड़ियां बांटने से विकास और निर्माण कार्य के लिए सरकार के पास पैसा नहीं बचता।

सुभाष बुड़ावन वाला, रतलाम

पाठक अपनी प्रतिक्रिया ई-मेल से responsemail.hindipioneer@gmail.com पर भी भेज सकते हैं।

पायनियर
नई दिल्ली, बुधवार, 30 अक्टूबर, 2024

आरोग्यता समाज के विकास की पहली शर्तः मुख्यमंत्री

सरदार पटेलकी 150वीं जयंती पर 'रन फॉर यूनिटी' का आयोजन, सीएम योगी ने दिखाई झंडी, देश की एकता व सुरक्षा की दिलाई शपथ

● कहा, भारत की अंखडता के सूत्रधार थे सरदार पटेल

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय एकता दिवस के मौके पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने 'रन फॉर यूनिटी' को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। पांच कालीदास मार्ग से केडी सिंह बाबू स्टेडियम तक आयोजित इस दौड़ में सैकड़ों युवाओं, बच्चों और आम नागरिकों ने पूरे जोश के साथ भाग लिया। इस दौरान सीएम योगी ने दौड़ में शामिल छोटे-छोटे बच्चों से मुलाकात की और उन्हें चॉकलेट वितरित कर प्रोत्साहित किया। कार्यक्रम के दौरान सीएम योगी ने भगवान धन्वंतरि की जयंती पर प्रदेशवासियों को शुभकामनाएं दीं। उन्होंने समाज के सशक्तिकरण में स्वास्थ्य की अहमियत पर जोर देते हुए कहा कि आरोग्यता समाज के विकास की पहली शर्त है। उन्होंने कहा कि स्वस्थ समाज का निर्माण ही राष्ट्र को मजबूत बनाता है। इस अवसर पर आयोजित रन फॉर यूनिटी का आयोजन न सिर्फ हमारे स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद है बल्कि सरदार पटेल के एकजुट भारत के सपने को भी बल प्रदान करता है। उन्होंने कहा यह न सिर्फ एक एकता की दौड़ है बल्कि स्वस्थ रहने के संकल्प का प्रतीक भी है। उन्होंने कहा कि यह आयोजन हर नागरिक को स्वस्थ और एकजुट रहेने की प्रेरणा देता है। सीएम योगी ने भारत की आजादी और आज के भारत की अखंडता में सरदार पटेल के महान योगदान को स्मरण करते हुए कहा कि उन्होंने ब्रिटिश सत्ता के षड्यंत्र को बेनकाब कर 563 से अधिक रियासतों को भारत गणराज्य में मिलाया। जूनागढ़ के नवाब से लेकर हैदराबाद के निजाम तक सभी को उन्होंने भारतीय एकता के महत्व को समझने पर विवश किया। सरदार पटेल ने अखंड भारत का जो स्वरूप हमें दिया, वह प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में और मजबूत हो रहा है। सीएम योगी ने सरदार पटेल की दूरदर्शिता की प्रशंसा करते हुए कहा कि उनकी सूझबूझ से ही भारत एकजुट राष्ट्र बना। इस वर्ष राष्ट्रीय एकता दिवस का विशेष महत्व है सरदार पटेल की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में 31 अक्टूबर 2024 से 31 अक्टूबर 2025 तक पूरे देश के साथ उत्तर प्रदेश में भी विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। इन आयोजनों के माध्यम से राज्य में सरदार पटेल की विचारधारा को आगे बढ़ाने के साथ-साथ एकता और भाईचारे का संदेश दिया जाएगा।

रन फॉर यूनिटी के माध्यम से सीएम योगी ने सभी को देश की एकता और अखंडता को बनाए रखने की शपथ दिलाई। उन्होंने देश की एकता और सुरक्षा के लिए नागरिकों से सेना के साथ अपनी भी जिम्मेदारी निभाने और सहयोग करने की अपील की। मुख्यमंत्री ने धनतेरस, दीपावली और छठ के अवसर पर सभी को शुभकामनाएं दीं और सरदार पटेल की 150वीं जयंती को विशेष बनाते हुए उनके महान योगदान को नमन किया। उन्होंने कहा कि यह अवसर हमें एकजुट होकर देश की सेवा में योगदान देने का संदेश देता है।

इस अवसर पर उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य, ब्रजेश पाठक, खेल एवं युवा कल्याण मंत्री गिरीश चन्द्र यादव समेत कई प्रदेश सरकार के कई मंत्री और वरिष्ठ अधिकारीगण मौजूद रहे।

प्रदेश के विकास की गाथा को बयां कर रहे 40 लाख करोड़ के निवेश प्रस्तावः योगी

● सीएम ने प्रदेशवासियों को दी धनतेरस और दीपोत्सव की बधाई व शुभकामनाएं

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

साढ़े सात वर्ष पहले उत्तर प्रदेश के सामने पहचान का संकट खड़ा हो गया था। प्रदेश की पहचान देश और दुनिया में दंगे, दुर्दांत माफिया, माफिया गिरोह, राजनीति के अपराधिकरण और शासन के भ्रष्टाचार के रूप में हो गयी थी। इसकी वजह से प्रदेश के युवाओं के सामने नौकरी, सम्मान और स्वाभिमान का संकट खड़ा हो गया था। उस दौरान गुंडागर्दी चरम पर थी। प्रदेश में पर्व और त्योहार के नजदीक आते ही लोगों के मन में भय के साथ दहशत पैदा हो जाती थी। उन्हे डर रहता था कि कब कहां दंगा हो जाए। वहीं आज प्रदेश दंगा और अराजकता मुक्त हो गया है। पहले जहां निवेशक प्रदेश में निवेश नहीं करना चाहता था। वहीं जिसने निवेश भी किया था तो वह यहां से अपना कारोबार समेट कर भागने की फिराक में रहता था। पिछले साढ़े सात वर्षों में प्रदेश की तस्वीर देश और दुनिया में बदली। आज देश और दुनिया के इंवेस्टर प्रदेश में निवेश के लिए आकर्षित हो रहे हैं। यही वजह है कि पिछले वर्ष ग्लोबल इंवेस्टर्स समिट में प्रदेश को 40 लाख करोड़ रुपये के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए। ये निवेश प्रस्ताव उत्तर प्रदेश की बदलती तस्वीर और विकास की गाथा का बयां कर रहे हैं। ये बातें मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मंगलवार को लखनऊ में आयोजित एक कार्यक्रम में कहीं। योगी ने सभी प्रदेशवासियों को धनतेरस और दीपोत्सव की हार्दिक शुभकामनाएं और बधाई दी। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि प्रदेश ने भव्य ग्लोबल इंवेस्टर समिट का आयोजन कर देश के सामने नजीर पेश की है। पूरे देश में आज इसकी चर्चा हो रही है। उन्होंने कहा कि ग्लोबल इंवेस्टर्स समिट में आए प्रस्ताव में से 12 लाख करोड़ की परियोजनाओं की ग्राउंड ब्रेकिंग हो चुकी है। वहीं वर्तमान में 10 लाख करोड़ रुपये के निवेश प्रस्ताव तैयार हैं जबकि शेष पर लगातार काम चल रहा है। सीएम ने कहा कि यह केवल निवेश नहीं है बल्कि प्रदेश के नौजवानों की नौकरी की संभावनाओं को आगे बढ़ाने वाला अवसर है। आज उत्तर प्रदेश देश की अग्रणी अर्थव्यवस्था है। प्रदेश ने तेजी के साथ आगे बढ़ती अर्थव्यवस्था के साथ खुद को स्थापित किया है। वर्ष 2029 तक प्रदेश प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विजन के अनुरुप वन ट्रिलियन डालर इकोनॉमी के रूप में खुद को स्थापित करेगा। इसके लिए सभी प्रदेशवासी संकल्पित हैं। उन्होंने कहा कि आज प्रदेश में निवेश और टूरिज्म के लिए अनुकुल माहौल बना है। यह केवल पॉलिसी और ईज ऑफ डूइंग बिजनेस से नहीं हुआ है बल्कि इसके लिए प्रदेश सरकार को चरणबद्ध तरीके से कार्य करना पड़ा था। इसमें जीरो टॉलरेंस नीति की अहम भूमिका रही है। यही वजह है कि आज कोई भी माफिया और अपराधी कानून के साथ खिलवाड़ नहीं कर सकता है। अगर वह सोचता भी है तो कानून उसकी गर्दन पकड़ने का काम करेगी, जैसी वह कानून की धज्जियां उड़ाने के बारे में सोचता है। इसी का नतीजा है कि प्रदेश में हर किसी को सुरक्षा का माहौल मिल रहा है। उन्होंने कहा कि कभी पहचान के संकट से जूझने वाले उत्तर प्रदेश पर देश-दुनिया के हर व्यक्ति की नजरें हैं। वह प्रदेश में निवेश और टूरिज्म का हिस्सा बनने के लिए उत्सुक हैं। इसके लिए प्रदेश सरकार को कई परिवर्तन करने पड़े। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि प्रदेश को उत्तम प्रदेश बनाने के लिए कई रिफॉर्म करने पड़े। इसके अलावा कई सेक्टोरियल पॉलिसी बनायी गयी। उत्तर प्रदेश में आज निवेशकों के लिए 28 सेक्टर की अलग-अलग पॉलिसी है। इसमें हर एक इंवेस्टर के लिए द्वार खुले हैं। पहली बार प्रदेश में सिंगल विन्डो के जरिये निवेश मित्र एक साथ 450 एनओसी जारी कर रहे हैं। वहीं निवेशकों की मदद के लिए निवेश सरथी पोर्टल बना हुआ है। इसके जरिये निवेशकों को ऑनलाइन इंसेंटिव दिया जा रहा है। उत्तर प्रदेश सरकार ने जो कहा था, वह आज करके दिखा दिया है। इसके लिए सरकार को प्रमाण देने की जरुरत नहीं है बल्कि उसके परिणाम सबके सामने है। पहले जहां प्रदेश के युवाओं को नौकरी के लिए भटकना पड़ता है, वहीं आज उन्हे उनके जिले में ही नौकरी के अवसर मिल रहे हैं। सीएम ने कहा कि पिछले साढ़े सात वर्षों में सात लाख सरकारी नौकरी युवाओं को दी गयी है जबकि करोड़ों युवाओं को निजी क्षेत्र में रोजगार उपलब्ध कराने के साथ उन्हे रोजगार देने वाला बनाया गया है। अब प्रदेश के युवाओं, व्यापारियों, उद्यमियों और सामान्य नागरिक के सामने देश-दुनिया के सामने पहचान का संकट नहीं है बल्कि लोग प्रदेश के हर नागरिक को सम्मान से देखते हैं। वह प्रदेशवासियों से पिछले साढ़े सात वर्षों में बदली तस्वीर के बारे में उत्सुकता से जानना चाहते हैं। सीएम योगी ने कहा कि प्रदेश का एक गौरवशाली इतिहास रहा है। प्रदेश के पर्व और त्योहार धनतेरस-दीपोत्सव इसकी का हिस्सा हैं। उन्होंने कहा कि भगवान धन्वंतरि का जन्म प्रदेश के सबसे प्राचीनतम नगरी वाराणसी में हुआ था, जिसके प्रति आज पूरा देश कृतिज्ञता ज्ञापित करेगा। वहीं अयोध्या में बुधवार को दीपोत्सव का आयोजन होगा। यह पहला आयोजन होगा जबकि 500 वर्षों के बाद रामलला के अपने पावन धाम में विराजमान होने के बाद भव्य दीपोत्सव होगा।

गोआश्रय स्थलों पर गोवर्धन पूजा से पहले चलाया जाए विशेष सफाई अभियान

● योगी सरकार का निर्देश गोपूजन में जनप्रतिनिधियों की मौजूदगी हो सुनिश्चित

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

योगी सरकार ने गोवर्धन पूजा के अवसर पर गोआश्रय स्थलों में भव्य गोपूजन का आयोजन सुनिश्चित करने के लिए निर्देश जारी किए हैं। इस पूजा में गायों के प्रति श्रद्धा और सम्मान व्यक्त करने के लिए सभी आवश्यक व्यवस्थाओं को प्राथमिकता दी जाएगी। निर्देशों के अनुसार अस्थायी गोआश्रय स्थलों, गोसंरक्षण केंद्रों, कान्हा गोशाला और कांजी हाउस में जहां निराश्रित गोवंश संरक्षित हैं, वहां सफाई और स्वच्छता के साथ-साथ स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता भी सुनिश्चित की जाएगी।

योगी सरकार ने सभी जनपदों के अधिकारियों को निर्देशित किया है कि गोवर्धन पूजा से पहले इन स्थलों पर विशेष सफाई अभियान चलाया जाए। यह सुनिश्चित किया जाएगा कि पूजा समारोह में जनप्रतिनिधियों (मंत्री, सांसद-विधायक आदि) की उपस्थिति हर हाल में हो। इस अवसर पर गोवंश की सेवा और संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए विशेष कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।योगी सरकार द्वारा दीपावली, धनतेरस, गोवर्धन पूजा के मौके पर गाय के गोबर से बने दीपों, मूर्तियों और अन्य उत्पादों का उपयोग करने पर जोर दिया जा रहा है। सरकार ने इन उत्पादों के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ बाजारों में उनकी उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए भी कदम उठाने की योजना बनाई है। दीपावली के त्योहार को देखते हुए नगरीय क्षेत्रों में निराश्रित गोवंश के संरक्षण के लिए विशेष अभियान चलाया जा रहा है। इसका उद्देश्य न सिर्फ गोवंश की सुरक्षा करना है, बल्कि लोगों में गाय के प्रति संवेदनशीलता और श्रद्धा को भी जागृत करना है।

वनटांगिया गांव में दिवाली की खुशियां बांटेंगे सीएम योगी

● जिले की कई ग्राम पंचायतों को देंगे 185 करोड़ रुपये के विकास कार्यों का उपहार

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

फाइल फोटो

कुसम्ही वन के बीच बसे वनटांगिया गांव जंगल तिकोनिया नंबर तीन के लोग मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के आगमन की प्रतीक्षा में उल्लसित और उमंगित हैं। कारण, सीएम योगी इस वनटांगिया गांव में दीपोत्सव मनाने आते हैं। यहां दीप योगी के नाम पर प्रज्वलित होते हैं। वनटांगिया गांव जंगल तिकोनिया नंबर तीन में प्रशासन अपनी तैयारियों में जुटा है तो गांव के लोग मुख्यमंत्री की अगवानी के लिए अपने-अपने घर-द्वार को साफ सुथरा बनाने, रंग रोगन करने और सजाने-संवारने में। तैयारी ऐसी मानों उनके घर उनका आराध्य आने वाला हो। सब कुछ स्वतः स्फूर्त और मिलजुलकर। मुख्यमंत्री इस गांव में गुरुवार (31 अक्टूबर) को आकर दीपोत्सव मनाएंगे। वनटांगिया समुदाय के साथ दीपावली की खुशियां साझा करने के साथ मुख्यमंत्री जिले की कई ग्राम पंचायतों को कुल 185 करोड़ रुपये के विकास कार्यों की सौगात देंगे।

वनटांगिया गांव के दीपोत्सव में सीएम योगी उत्तर प्रदेश जल निगम (ग्रामीण) द्वारा 42 गांवों में उपलब्ध कराई गई पेयजल परियोजनाओं का लोकार्पण करेंगे। इस पर 150 करोड़ 35 लाख रुपये की लागत आई है। इसके अलावा वह 32 ग्राम पंचायतों में परफॉर्मेंस ग्रांट से 34 करोड़ 66 लाख की लागत से कराए गए विकास कार्यों का भी लोकार्पण करेंगे। दीपावली के इस समारोह में कार्यक्रम स्थल पर कई विभागों की तरफ से स्टाल लगाकर शासन की जनहित वाली योजनाओं की जानकारी भी दी जाएगी। उधर, मुख्यमंत्री के आगमन को लेकर प्रशासन और ग्रामीण जोरदार तैयारियों में जुटे हुए हैं। सीएम योगी की अगवानी के लिए वनटांगिया समुदाय के लोगों का उत्साह स्वाभाविक है। मुख्यमंत्री योग आदित्यनाथ की ही वजह से वनटांगिया गांव जंगल तिकोनिया नंबर तीन को अब प्रदेश के अति विशिष्ट गांव के रूप में जाना जाता है। योगी यहां वर्ष 2009 से ही बतौर सांसद यहां दीपावली मनाते रहे हैं और 2017 में पहली बार मुख्यमंत्री बनने के बाद भी उन्होंने खुद द्वारा शुरू की गई परंपरा में रुकावट नहीं आने दी है। बतौर मुख्यमंत्री वह गुरुवार को लगातार आठवीं बार वनटांगियों के साथ दीपावली की खुशियां साझा करेंगे। उल्लेखनीय है योगी के कदम पड़ने के साथ ही वनटांगियों की उपेक्षा लगातार पूरी होती उम्मीदों में बदलती गई। बतौर सांसद उन्होंने लोकसभा में वनटांगिया अधिकारों के लिए लड़कर 2010 में अपने स्थान पर बने रहने का अधिकार पत्र दिलाया।

गांधी की हत्या के बाद भाजपा की मातृ संस्था पर सरदार पटेल ने ही लगाया था प्रतिबंधः प्रमोद तिवारी

लखनऊ। राज्यसभा में विपक्ष के उपनेता प्रमोद तिवारी ने देश के प्रथम पूर्व उप प्रधानमंत्री सरदार बल्लभ भाई पटेल को लेकर केन्द्रीय गृह मंत्री के बयान पर तगड़ा पलटवार किया है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस ने आजाद भारत की पहली सरकार में सरदार पटेल को उप प्रधानमंत्री व गृह मंत्री के महत्वपूर्ण ओहदे पर आसीन कर उन्हें सर्वोच्च सम्मान से नवाजा। तिवारी ने गृह मंत्री अमित शाह पर तंज कसते हुए कहा कि सरदार पटेल जैसे देश के महान नेता जिस सरकार में उप प्रधानमंत्री रहे हों भाजपा सत्तर साल के उसी स्वर्णिम शासनकाल की खामियां गिनाते समय रोज सरदार पटेल का अपमान किया करती है।

उन्होंने कहा कि देश के निर्माता के रूप में पंडित जवाहर लाल नेहरू के प्रधानमंत्रित्व कार्यकाल में सरदार पटेल ने अपनी कलम से कई रियासतों का विलीनीकरण कराकर अजेय भारत का शंखनाद किया। कांग्रेस के राज्यसभा सदस्य प्रमोद तिवारी ने गृह मंत्री अमित शाह के बयान को आड़े हाथों लेते हुए कहा कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की गोडसे द्वारा हत्या हुई तब गृह मंत्री के रूप में सरदार पटेल ने ही भाजपा की मातृ संस्था पर साहसिक प्रतिबंध लगाया था। उन्होंने यह भी तंज कसा कि विश्वगुरु की चाहत रखने वाले कांग्रेस के देश को ऐतिहासिक उपलब्धियों के कार्यकाल को कमतर आंक कर सरदार पटेल के योगदान को भी कमतर आंका करते हैं। उन्होंने कहा कि देश कभी नहीं भूलेगा कि महात्मा गांधी, पण्डित नेहरू, सरदार पटेल, एवं बाल गंगाधार तिलक के नेतृत्व में 1942 में आजादी की लड़ाई के समय कांग्रेस के नेतृत्व में अंग्रेजों भारत छोड़ो का शंखनाद हुआ तब किन लोगों ने पत्र लिखकर देशवासियों को अंग्रेजों की सेना में भर्ती का समर्थन किया था।

उपचुनाव में बेईमानी न हुई तो सभी 9 सीटें जीतेगी सपाः अखिलेश

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा है कि 2027 का विधानसभा चुनाव समाजवादी पार्टी का अब तक का सबसे अच्छा चुनाव होगा और प्रचंड बहुमत की सरकार बनेगी। उत्तर प्रदेश में आज जो भी इंफ्रास्ट्रक्चर और विकास दिखाई दे रहा है वह समाजवादियों ने किया है। जनता सब जानती है। नई पीढ़ी प्रोग्रेसिव, डेवलपमेंट और पॉजिटिव राजनीति चाहती है। भाजपा की नकारात्मक राजनीति अब कभी कामयाब नहीं होगी। लोग जान गए हैं कि भाजपा धोखा देती है। झूठ बोलती है। भाजपा नकारात्मक राजनीति करने वाली पार्टी है।

अखिलेश यादव मंगलवार को एक कार्यक्रम में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि भाजपा अपने कार्यकर्ताओं से दंगा और बवाल कराती है फिर उनके खिलाफ एफआईआर लिखवाकर भाजपा उन्हें फंसा देती है। बहराइच का दंगा इसका उदाहरण है। बहराइच के दंगे में उसके विधायक ने भाजपा कार्यकर्ताओं पर एफआईआर कराया। भाजपा सरकार ने उत्तर प्रदेश की कानून व्यवस्था को बर्बाद कर दिया है। पुलिस हिरासत में मौतें हो रही है। इन हत्याओं में पुलिस शामिल है। थानों को अत्याचार गृह बना दिया गया है।

यादव ने कहा कि लखनऊ में मोहित पाण्डेय को पीट-पीटकर थाने में मार दिया गया। उसे पानी तक नहीं दिया। इससे पहले अमन गौतम की थाने में पिटाई से मौत हुई। सुल्तानपुर मामले में मंगेश यादव की पुलिस ने फर्जी एनकाउंटर में हत्या की। फिर उसे बैलेंस करने के लिए एक और हत्या कर दिया। पुलिस हिरासत में मौतों और फर्जी एनकाउंटर पर सरकार चुप क्यों है? जिस प्रदेश के पास अपना परमानेंट डीजीपी न हो वहां कानून व्यवस्था कैसे संभाल सकती है? जीरो टॉलरेंस की बात करने वाली भाजपा सरकार की कानून व्यवस्था जीरो है। भाजपा बचाने वाली पार्टी नहीं, फंसाने वाली पार्टी है। अखिलेश यादव ने कहा कि प्रदेश में 9 सीटों पर हो रहे उपचुनाव में अगर बेईमानी नहीं हुई और निष्पक्ष एवं पारदर्शी तरीके से चुनाव हुआ तो समाजवादी पार्टी सभी सीटें जीतेगी। भाजपा सभी सीटें हार जाएगी। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश में रणनीति के तहत समाजवादी पार्टी सभी 9 सीटों पर चुनाव लड़ रही है। कांग्रेस समाजवादी पार्टी का साथ दे रही है।

यादव ने कहा कि समाजवादी पार्टी लगातार जातीय जनगणना की मांग कर रही है। समाजवादी पार्टी जातीय जनगणना कराने की मांग हमेशा से करती आ रही है। जातीय जनगणना देश के लिए बड़ा काम है। इससे सभी जातियों को सामाजिक न्याय मिलेगा। संविधान में आरक्षण जातीय आधार पर है। सभी को सामाजिक न्याय मिले इसके लिए जातीय जनगणना जरूरी है। जो लोग जातीय जनगणना के खिलाफ हैं, उन्हें मंडल कमीशन की प्रस्तावना पढ़नी चाहिए। उसके बाद उनकी सोंच बदल जायेगी। हमें भरोसा है कि आने वाले समय में जातीय जनगणना जरूर होगी। यादव ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी बेईमानी से चुनाव जीतती है। लोकसभा चुनाव में अगर भाजपा ने बेईमानी नहीं की होती तो इंडिया गठबंधन 50 से ज्यादा सीटें जीतता। भाजपा सरकार ने लोकसभा चुनाव में अधिकारियों पर दबाव बनाकर फर्रूखाबाद, फूलपुर, अलीगढ़ समेत कई अन्य सीटों पर परिणाम बदलवा दिया था। फर्रूखाबाद में तो रात भर पुलिस लाठीचार्ज करती रही। डीएम ने बिजली कटवायी। वहां परिणाम बदला गया। सभी लोग यह जानते हैं।

यादव ने कहा कि इंडिया गठबंधन और पीडीए की रणनीति से समाजवादी पार्टी आगे भी सकारात्मक राजनीति करती रहेगी। समाजवादी पार्टी ने पीडीए को जोड़ा है और पीडीए जीत भी रहा है।

पुलिस हिरासत में मृत मोहित के आवास पहुंचे प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अजय राय

● परिजनों से मिलकर प्रकट की शोक-संवेदना

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष अजय राय पुलिस हिरासत में हुई दुर्भाग्यपूर्ण मौत पर संवेदना प्रकट करने स्वर्गीय मोहित पांडेय के आवास पहुंचे। राय ने शोक संतप्त परिजनों को ढांढ़स बंधाया और कांग्रेस पार्टी की ओर से हर तरीके के सहयोग का आश्वासन भी दिया।

आवास के बाहर पत्रकारों से बात करते हुए अजय राय ने कहा कि योगीराज में पुलिस पूरी तरह निरंकुश हो गई है। पंद्रह दिन के अंदर राजधानी में हिरासत में हत्या का ये दूसरा मामला है। अभी थोड़े दिन पहले विकासनगर के अमन गौतम की मौत पुलिस हिरासत में हुई थी। राय ने कहा कि चारों तरह दीवाली की रोशनी है और योगी की पुलिस ने इस घर में हमेशा के लिए अंधेरा कर दिया। संवेदनहीनता इतनी की अमन के घर सरकार का कोई नुमाइंदा नहीं गया न किसी तरह की कोई सरकारी सहायता की गई। सीएम योगी यहां भी नहीं आए। बाकी पीड़ित परिवार को फोटो सेशन के लिए अपने यहां बुलवाया और दुर्भाग्य देखिए सरकारी नौकरी की तो बात ही नहीं की, सहायता राशि भी अभी तक सिर्फ हवा में ही है। राय ने कहा कि जनता अब योगी सरकार की अक्षमता से ऊब चुकी है और बदलाव चाहती है।

दीपोत्सव बनाएगा नया विश्व कीर्तिमान, 55 घाटों पर सजाए गए 28 लाख दीप

● 25 लाख से अधिक दीए जलाएंगे 30 हजार वालंटियर्स

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ/ अयोध्या

रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के बाद पहला दीपोत्सव नया विश्व कीर्तिमान बनायेगा। वहीं योगी सरकार के दीपोत्सव के आठवें संस्करण में डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. प्रतिभा गोयल के प्रबंधन में दीपोत्सव-2024 को ऐतिहासिक बनाने के लिए 30 हजार वालंटियर्स के सहयोग से 25 लाख से अधिक दीयों को प्रज्ज्वलित करने की तैयारी पूरी की गई। मंगलवार को गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड टीम के कंसल्टेंट निश्चल बरोट की अगुवाई में 30 सदस्यों ने सरयू के 55 घाटों के दीप की गणना पर्यवेक्षक, घाट प्रभारी, समन्वयक व गणना वालंटियर की मौजूदगी में शुरू की।

विवि प्रशासन द्वारा दीपोत्सव को अलौकिक और भव्य बनाने के लिए वालंटियर्स एवं पदाधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश प्रदान कर दिए गए हैं।

30 अक्टूबर को दीपोत्सव के दिन दीये में तेल भरने के लिए एक-एक लीटर सरसों की बोतल उपलब्ध कराई जायेगी। वालंटियर 28 लाख बिछाये गए दीप में सावधानीपूर्वक तेल डालेंगे। घाट पर तेल न गिरे, इसका विशेष ध्यान रखा जायेगा। विवि प्रशासन ने सरयू के 55 घाटों पर 28 लाख दीयों को सजाने के कार्य को अंतिम रूप दे दिया। इसकी तैयारियों को लेकर विश्वविद्यालय ने पर्यवेक्षक, घाट प्रभारी, गणना वालंटियर्स के साथ दो हजार से अधिक भारी भरकम टीम उतार दी है। इनकी निगरानी में दीपोत्सव में 25 लाख से अधिक दीये प्रज्ज्वलित होंगे। दीपोत्सव की भव्यता विश्व पटल पर दिखे, इसके लिए विश्वविद्यालय परिसर के वालंटियर द्वारा घाट नं. 10 पर 80 हजार दीए से स्वास्तिक सजाया गया है। इससे पूरी दुनिया में शुभता का संदेश जायेगा। यह आकर्षण का केन्द्र होगा। विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो0 प्रतिभा गोयल के कुशल मार्गदर्शन में 30 हजार वालंटियर द्वारा 55 घाटों पर 16 गुणे 16 दीए का ब्लाक बनाया गया है, जिसमें 256 दीए सजाये गये हैं। इनमें एक वालंटियर को 85 से 90 दीए प्रज्ज्वलित किए जाने का लक्ष्य दिया गया है। दीपोत्सव नोडल अधिकारी प्रो0 संत शरण मिश्र ने बताया कि उत्तर प्रदेश शासन, जिला प्रशासन के सहयोग से विश्वविद्यालय प्रशासन द्वारा कार्य को अंतिम रूप दे दिया गया है।

राम नगरी के 55 घाटों पर दीयों की सुरक्षा पुलिस प्रशासन व विश्वविद्यालय के सुरक्षा कर्मियों द्वारा की जा रही है। घाटों पर सुरक्षा सख्त कर दी गई है। बिना आई कार्ड के प्रवेश प्रतिबंधित कर दिया गया है। 30 अक्टूबर को दीपोत्सव के दिन प्रातः 10 बजे से पर्यवेक्षक, घाट प्रभारी, समन्वयक व गणना वालंटियर्स की देखरेख में 25 लाख से अधिक दीयों में तेल डालने, बाती लगाने व देर शाम शासन द्वारा नियत समय पर दीए प्रज्जवलित किए जायेंगे।

कल रामनगरी आएंगे मुख्यमंत्री दीपोत्सव में होंगे शामिल

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ/ अयोध्या

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ बुधवार को आठवें दीपोत्सव कार्यक्रम में शामिल होंगे। मुख्यमंत्री 2.40 बजे अयोध्या पहुंचेंगे। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ अपने राजकीय विमान से रामकथा पार्क में बने हेलीपैड पर उतरेंगे। इसके पश्चात मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ रामकथा पार्क में संस्कृति विभाग द्वारा लगाई गई प्रदर्शनी एवं झांकियों का अवलोकन करेंगे। वे रामकथा पार्क हेलीपैड पर भरत मिलाप कार्यक्रम में उपस्थित रहेंगे।इसके बाद मुख्यमंत्री रामकथा पार्क में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में सम्मिलित होंगे। तत्पश्चात राम की पैड़ी सरयू तट पर सरयू आरती में शामिल होंगे। इसके बाद वहां से निकलकर राम की पैड़ी अयोध्या में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में प्रतिभाग कर फायर क्रैकर शो का अवलोकन करेंगे। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ राम की पैड़ी से निकलकर मुख्य मंच रामकथा पार्क में अंतरराष्ट्रीय/ भारतीय रामलीलाओं का मंचन देखेंगे। इसके बाद वह सरयू अतिथि गृह में रात्रि विश्राम करेंगे।

गुरुवार को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ सरयू अतिथि गृह से निकलकर हनुमानगढ़ी व श्रीराम जन्मभूमि परिसर में दर्शन पूजन करेंगे। तत्पश्चात मणिरामदास छावनी, कारसेवकपुरम में संतगणों के साथ बैठक करेंगे। तत्पश्चात वहां से निकलकर रामकथा पार्क हेलीपैड से गोरखपुर के लिए रवाना हो जायेंगे।

पायनियर
नई दिल्ली, बुधवार, 30 अक्टूबर, 2024

जनपद में परंपरागत ढंग से मनाया धनतेरस पर्व

● गुलजार रहीं बाजारें, महंगाई का नहीं दिखा असर

● सोने-चांदी के आभूषण सहित अन्य सामानों की जमकर हुई खरीददारी

फतेहपुर। जनपद में धनवंतरि (धनतेरस) महापर्व धूमधाम से मनाया गया। परंपरागत ढंग से लोगों ने विभिन्न धातुओं से निर्मित वस्तुएं खरींदी। खासकर आभूषणों और बर्तनों की दुकानों में ज्यादा भीड़ रही। जनपद मुख्यालय की मुख्य बाजार चौक में अर्द्धरात्रि के बाद भी खरीददारों की खासी भीड़ जमा थी और लोग दुकानों में अपनी-अपनी पसंद का सामान खरीदने के लिए पहुंचे। धनतेरस का पर्व अपने आपमें एक परम्परा का अंग है। जो दीपावली के दो दिन पूर्व मनाया जाता है। धन के देवता कुबेर एवं मृत्यु देवता यमराज की सनातन धर्म के अनुयायियों ने पूजा-अर्चना कर गृहस्थी में धन सम्पदा अर्जित करने के लिए सोने-चांदी के जेवरात, सिक्के एवं गृहस्थी के सामानों की खूब जमकर खरीदारी कर धार्मिक त्योहार की परम्पराओं का निर्वहन किया।

धनतेरस पर चौक बाजार की व्यस्तता एक बार फिर शीर्षता को स्पर्श कर रही थी। धातु बाजार में तो जैसे तिल भर की भी जगह नहीं बची थी। यही नहीं बाजार के दूसरी ओर लइया, गट्टा, पट्टी, खिलौने आदि की दुकानों में दोपहर से जो सघन खरीददारी का दौर शुरू हुआ वह देर रात तक जारी रहा। व्यस्त जीवन से शाम को निजात पाने वाले नौकर पेशा लोग अपने परिवारों के साथ अमूमन सूर्यास्त के बाद ही यहां खरीदारी को निकलते हैं। इस बार भी कुछ ऐसा ही हुआ। शाम ढलते ही सोने चांदी की दुकानों में सहसा रौनक बढ़ गयी और दोपहर तक मायूस दिख रही बर्तन मंडी में भी भीड़ ने जैसे कदम रखा बर्तन बाजार के संचालकों का उत्साह बढ़ गया। धनतेरस का पर्व पूरे जनपद में परम्परागत ढंग से हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

धातु और खानपान के सामानों के साथ लोगों ने गणेश लक्ष्मी की मूर्तियां खासकर जो मिट्टी और पीओपी से निर्मित थी उनकी खरीददारी की। बच्चों का खिंचाव तो खिलौने के साथ-साथ पटाखों की ओर था। इन दुकानों में भी जमकर खरीददारी हुई। यही नहीं इलेक्ट्रानिक दुकानों में दोपहर से ही भीड़ लगी थी। शहर की लगभग सभी इलेक्ट्रानिक दुकानों में दीवाली धमाका और बम्पर धमाका आफर पेश किया गया। चार पहिया से लेकर मोटर साइकिल, टीवी, फ्रिज, वाशिंग मशीन आदि इलेक्ट्रानिक सामानों की जमकर खरीदारी हुई। वैसे भी धनतेरस के दिन इन सामानों की खरीददारी का खास महत्व होता है। ऐसे में महीनों से इस दिन का इंतजार कर रहे लोगों ने जी भर कर सामान खरीदे। कहने को तो महंगाई से हर कोई आहत था लेकिन बाजार की व्यस्तता और भीड़ से कहीं से भी नहीं लग रहा था कि महंगाई का खरीददारों पर कोई असर पड़ा।

भगवान धनवंतरि की पूजा कर मांगा आशीर्वाद: धन-संपदा एवं सुख-समृद्धि प्रदान करने वाली मां लक्ष्मी तथा निरोगी काया प्रदान करने के लिए देवताओं के वैद्य भगवान धनवंतरि की हिन्दू समुदाय के लोगों ने विधि-विधान से पूजा अर्चना कर तेरह दीप जलाए। अश्वनी माह की तेरस को समुद्र मंथन कर निकले अमृत कलश को लाने वाले भगवान धनवंतरि की जयंती पर्व पर एवं देवताओं के वैद्य से सुख-समृद्धि की कामना करने के साथ-साथ आज के दिन गृहोपयोगी वस्तुएं बर्तन, सोने-चाँदी, हीरे-जवाहरात के आभूषण खरीदकर धन की देवी लक्ष्मी एवं भगवान धनवन्तरि की पूजा-अर्चना कर तेरह दीप जलाकर सभी मनोरथ पूर्ण होने की कामना किया।

विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण कार्यक्रम का हुआ शुभारंभ

फतेहपुर। निर्वाचक नामावलियों के विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ ठाकुर युगराज सिंह डिग्री कॉलेज में किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में एडीएम/उप जिला निर्वाचन अधिकारी डॉ अविनाश त्रिपाठी, विशिष्ट अतिथि के रूप में एसडीएम सदर प्रदीप कुमार रमन व एसडीएम श्वेता सिंह रहीं। शुभारंभ मां सरस्वती की प्रतिमा में माल्यार्पण व दीप प्रज्जवलित कर मंचासीन अतिथियों ने किया। एडीएम को स्वीप आइकॉन व उप जिलाधिकारी को सदर तहसीलदार ने पुष्पगुच्छ भेंटकर सम्मानित किया। संचालन स्वीप आइकॉन डॉ. अनुराग श्रीवास्तव ने किया। स्वीप आइकॉन ने विधानसभा वार विधानसभा 240 फ़तेहपुर, विधानसभा 241 अयाह शाह का विवरण बताया। विधानसभा 240 में बीएलओ की संख्या 383, सुपरवाइजर 39, मतदेय स्थल 383, मतदान केंद्र 214 व विधानसभा 241 में बीएलओ 306, सुपरवाइजर 32, मतदेय स्थल 306, मतदान केंद्र 194 हैं।

डीएम ने विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण कार्यक्रम का प्रा. विद्यालय सीधामऊ पहुंचकर लिया जायजा, दिये निर्देश

कानपुर देहात। डीएम आलोक सिंह के द्वारा विधान सभा निर्वाचन क्षेत्रों की निर्वाचक नामावलियों के विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण कार्यक्रम का तहसील अकबरपुर अन्तर्गत प्राथमिक विद्यालय सीधामऊ पहुंचकर जायजा लिया गया। जिलाधिकारी ने निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार अभियान संचालित करने के निर्देश बीएलओ को दिये। इस मौके पर ग्रामीणजनों को अवगत कराया गया कि मतदाताओं की सुविधा हेतु 09 नवम्बर, 10 नवम्बर, 23 नवम्बर, 24 नवंबर को समस्त मतदेय स्थलों पर मतदाताओं के पंजीकरण हेतु विशेष कैम्प का आयोजन किया जायेगा, जिसमें जनसामान्य हेतु दावे व आपत्तियां प्राप्त की जायेंगी। ऐसे सभी पात्र मतदाता जो 01.01.2025 से 18 वर्ष व उससे अधिक आयु प्राप्त कर चुके है, विशेष अभियान 09.11.2024 (शनिवार), 10.11.2024 (रविवार), 23.11.2024 (शनिवार) एवं 24.11.2024 (रविवार) को अपने मतदेय स्थल पर जाकर निर्वाचक नामावली में अपना नाम दर्ज कराने के लिए निर्धारित प्रारूप भरकर जमा कर सकते हैं अथवा वोटर हेल्पलाइन मोबाइल ऐप के माध्यम से डाउनलोड एवं आवेदन कर सकते हैं।

तत्पश्चात जिलाधिकारी द्वारा प्राथमिक विद्यालय के छात्र.छात्राओं द्वारा बनायी गयी रंगोली का अवलोकन किया गया। जिलाधिकारी ने छात्र.छात्राओं का प्रोत्साहन किया तथा उनसे वार्ता कर पठन पाठन के बारे में जानकारी ली। उपस्थित शिक्षक शिक्षिकाओं को बच्चों के सर्वांगीण विकास हेतु आवश्यक दिशा निर्देश दिये। इस मौके पर नायब तहसीलदार, बीएलओ, ग्रामीणजन आदि उपस्थित रहे।

मृतक के बेटे की शादी में डीजे पर तमंचा लेकर कर रहे डांस वाले व्यक्ति को किया अपमानित

● उसने दूल्हे के पिता को एक वर्ष बाद फरसे से कई टुकड़े कर डालें

बांदा। उत्तर प्रदेश के बांदा में मृतक के बेटे की शादी में डीजे पर तमंचे पर डांस करने पर हुआ विवाद गुस्सा, दोस्त फरसे से दोस्त के कई टुकड़े. कर किया हत्या पुलिस ने इस बात की पुष्टि 24 घंटे के अंदर कातिल को किया फरसे सहित गिरफ्तर आपको बताते चलें कि थाना कमासिन क्षेत्र अन्तर्गत कस्बे में एक व्यक्ति की फरसे से कई टुकड़े कर के हत्या करने वाले अभियुक्त को थाना कमासिन पुलिस द्वारा किया गया गिरफ्तार। कब्जे से आलाकत्ल फरसा बरामद। पुलिस उपाधीक्षक बबेरू ने अपनी वीडियो बाइट में बताया की मृतक के पुत्र की शादी के दौरान डीजे में अवैध तरीके से शास्त्रों के प्रदर्शन के साथ डांस करने में भयंकर झगड़ा हुआ मृतक द्वारा इसका पुरजोर विरोध किया गया और कातिल को उसे समय वहां से मारपीट कर भगा दिया गया कातिल के दिमाग में अपनी बेइज्जती होने की बात दिमाग में बैठ चुकी थी और वह काफी समय से इस तक में था किस समय मौका मिले और मैं इस व्यक्ति को मौत के घाट उतार दूं वह अपने मंसूबे में कामयाब हो गया और उसने फरसे के द्वारा मृतक के कई टुकड़े कर दिए क्योंकि उसके दिमाग में गुस्सा भरी हुई थी पुलिस का कहना है कि बदले की भावना के तहत यह कत्ल किया गया ना कोई पूर्व में ऐसी रंजिश थी। मात्र डीजे में तमंचे पर डांस नहीं करने दिया गया इसी के चलते कातिल ने हत्या को अंजाम दिया अपने अपमान का बदला ले लिया जनपद में अपराध एवं अपराधियों पर नियंत्रण लगाये जाने हेतु दो टीमें बनाई गई थी अभियुक्तों की गिरफ्तारी हेतु चलाये जा रहे अभियान के क्रम में आज 28 अक्टूबर को थाना कमासिन पुलिस द्वारा फरसे से वार कर व्यक्ति की हत्या करने वाले अभियुक्त को गिरफ्तार किया गया है।

बैंकों की जिलास्तरीय समीक्षा समिति एवं जिलास्तरीय परामर्शदात्री समिति की हुई बैठक, दिये गए निर्देश

● ऋण पत्रावलियों को बैंकर्स अनावश्यक न रखें लंबित, ससमय करें स्वीकृत

● आरसेटी के अन्तर्गत अधिक से अधिक लोगों को दिलायें प्रशिक्षण

कानपुर देहात। डीएम आलोक सिंह की अध्यक्षता व सीडीओ लक्ष्मी एन. की उपस्थिति में बैंकों की जिला स्तरीय समीक्षा समिति (डीएलआरसी) एवं जिला स्तरीय परामर्शदात्री समिति (डीसीसी) की बैठक माँ मुक्तेश्वरी देवी सभागार कक्ष कलेक्ट्रेट में आयोजित हुई। वित्तीय वर्ष 2024-25 के लिए वार्षिक ऋण योजना सहित अन्य योजनाओं में जनपद के बैंकों को आवंटित लक्ष्य के सापेक्ष योजनावार प्रगति की जानकारी सम्बंधित विभागीय अधिकारी एवं बैक के प्रतिनिधि से प्राप्त करते हुए निर्देशित किया कि ऋण पत्रावलियों को बैंकों में लम्बित न किया जाएए अपूर्ण पत्रावली को सम्बंधित विभाग बैंक एवं आवेदक के साथ समन्वय स्थापित कर पूर्ण कराते हुए नियमानुसार ऋण पत्रावलियों को शीघ्र स्वीकृत किया जाये। सरकार द्वारा चलाई जा रहीं कल्याणकारी योजनाओं को क्रियान्वित करने में बैंकों का बहुत बड़ा योगदान हैए इसमें रूचि लेते हुए बैंक अधिकारी लम्बित पत्रावलियों का अबिलम्ब निस्तारित करना सुनिश्चित करें। कृषकों, पशुपालकों, मत्स्य पालकों की अधिक से अधिक केसीसी बनाई जाए। विभिन्न बैंकों को ऋण जमानुपात बढ़ाने के निर्देश दिये। ऋण जमा अनुपात में अपेक्षित वृद्धि, वार्षिक ऋण योजना, किसान क्रेडिट कार्ड, प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के पात्र किसानों को किसान क्रेडिट कार्ड से संतृप्त करनाए दीनदयाल अन्त्योदय योजना.राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन, प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम, पीएम स्ट्रीट वेंडर्स आत्मनिर्भर निधि योजना, प्रधानमंत्री मुद्रा योजना, मुख्यमंत्री ग्रामोद्योग रोजगार योजना, एक जनपद एक उत्पाद योजना में जिले की उपलब्धि, मुख्यमंत्री युवा स्वरोजगार योजना, स्वतः रोजगार योजना, दीनदयाल अंत्योदय योजना राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन सहित सरकार द्वारा प्रायोजित योजनाओं में बैंकवार आंवटित लक्ष्य एवं प्रगति की विस्तृत समीक्षा की गयी। आरसेटी के अन्तर्गत अधिक से अधिक लोगों को प्रशिक्षण दिलाया जायेए जिससे की उनको स्वरोजगार उपलब्ध हो सके। औद्योगिक क्षेत्र की मांग के अनुरूप प्रशिक्षण कराया जाये। सीडीओ लक्ष्मी एन., डीसी एनआरएलएम गंगाराम वर्मा, उप निदेशक कृषि रामबचन राम, जिला खादी ग्रामोद्योग अधिकारी, एलडीएम राकेश कुमार, रिजर्ब बैंक के पदाधिकारी, नाबार्ड के पदाधिकारी सहित बैंकर्स आदि उपस्थित रहे।

नौकरी लगवाने के नाम पर सवा करोड़ की ठगी

फर्रुखाबाद। मऊदरवाजा थाने के ग्राम शमशेर नगर बरौन निवासी शेर सिंह राजपूत आदि के साथ नौकरी लगवाने के नाम पर सवा करोड़ की ठगी की गई। ठगी करने वालों के विरुद्ध रिपोर्ट दर्ज कराई है। शेर सिंह ने दर्ज कराई रिपोर्ट में कहा है कि मेरा पुत्र आर्मी की तैयारी कर रहा था साथ में अन्य लड़के भी आर्मी की भर्ती के लिये तैयारी करते थे। 28 जनवरी 23 को गांव के रिश्तेदार ध्रुव कुमार राजपूत निवासी पंजूखिरिया थाना जहानगंज जो कि आर्मी में सेवारत है ने गांव आकर मुझसे बातचीत की। मेरे एक मित्र रविकांत यादव धनपुर जिला चंदौली निवासी है। जो भारतीय सेना में अफसर है वह आर्मी में नौकरी लगवाते है। अगर आप अपने बच्चे की नौकरी लगवाना चाहते है तो रविकांत यादव से बात की जाये। मैने विश्वास करके बात करने को कहा तो रविकांत यादव ने फोन पर बताया कि आर्मी नर्सिंग के 11 लाख रूपये प्रति व्यक्ति है। आर्मी अग्निवीर के 5 लाख रूपये प्रति व्यक्ति के हिसाब से लेकर लखनऊ पहुच जाना।

क्विक न्यूज

डीएम ने तहसील अकबरपुर के ग्राम सीधामऊ में फसल धान की क्राप कटिंग का किया स्थलीय निरीक्षण

कानपुर देहात। जिलाधिकारी आलोक सिंह ने ग्राम सीधामऊ के गाटा संख्या 130 व 145 में जाकर फसल धान की क्राप कटिंग का निरीक्षण किया एवं निरीक्षण के दौरान 10 मीटर भुजा के समबाहु त्रिभुज जिसका क्षेत्रफल 43.3 वर्गमीटर में क्रमशः 25.170 किलोग्राम व 21.290 किलोग्राम वजन पाया गया। क्राप कटिंग सभी जनपदों मे किये जाते हैं और इसमें रेण्डम आधार पर कुछ खेतों को चुना जाता हैए जिसकी उत्पादकता का ऑकलन त्रिकोणीय आकृति में खेत को काटकर उसमें कितनी उत्पादकता हुयी है यह देखी जाती है। इससे दो लाभ होते हैं। प्रथम जनपद का जो औसत निकलता है उससे यहां की उत्पादकता का पता चलता है और उसके ऑकड़े शासन को भी प्रेषित किये जाते है, द्वितीय उत्पादकता यदि कम होती है तो उन किसानों को जिन्होंने फसल बीमा योजना के अन्तर्गत बीमा करा रखा है, अगर जनपद में उत्पादकता मानकों से कम रहती है तब उन किसानों को फसल बीमा योजना के अन्तर्गत लाभ दिया जाता है।

सर्पदंश से किसान की मौत

राठ (हमीरपुर)। खेत पर काम कर रहे किसान को जहरीले सांप ने काट लिया। किसान की मौके पर ही मौत हो गई। पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम कराया है। महोबा के पनवाड़ी थाने के किल्हौवा गांव निवासी 51 वर्षीय मुन्नालाल पुत्र रतिराम सोमवार शाम करीब साढ़े तीन बजे अपने खेत में काम कर रहा था। तभी अचानक उसी दौरान जहरीले सर्प ने उसे काट लिया। किसान की हालत बिगड़ने गई। इलाज के लिए सीएचसी ले गए। जहां डॉ चंद्रशेखर सिंह ने उसे मृत घोषित कर दिया।

ट्रक की टक्कर से महिला की मौत

राठ (हमीरपुर)। सड़क किनारे कूड़ा फेंकने आईं महिला को तेज रफ्तार ट्रक ने रौंद दिया। जहां महिला की मौत हो गई। पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम कराया है। मुस्करा थाने के भगवानदास पुत्र शिवलाल ने बताया कि मंगलवार की सुबह करीब सात बजे उसकी मां 50 वर्षीय सुमित रानी सड़क किनारे कूड़ा फेंकने के लिए गई थी। तभी मुस्करा की ओर से आ रहे तेज रफ्तार ट्रक ने उसकी मां को रौंद दिया। इलाज के लिए सीएचसी ले गए। जहां चिकित्सक ने मेडिकल कालेज झांसी रेफर कर दिया। उनकी झांसी ले जाते समय मौत हो गई।

ट्रेन से कटकर ठेकेदार की मौत

संडीला (हरदोई)। नगर पालिका परिषद संडीला के एक ठेकेदार की किसी ट्रेन की चपेट में आकर दर्दनाक मौत हो गयी। उनकी मृत्यु से लोगों में गहरा शोक छा गया है। नगर के मोहल्ला महतवाना मूसापुर रोड निवासी ठेकेदार अमित शर्मा सुबह के समय मॉर्निंग वॉक के लिए जाया करते थे। वह घर से मॉर्निंग वॉक के लिए निकले और संभवतः ट्रेन की पट्टी पार करते हुए किसी ट्रेन की चपेट में आ गए जिससे उनकी दुखद मृत्यु हो गयी। दिवंगत अमित शर्मा समाजसेवा से भी जुड़े थे। उनके असामायिक निधन की सूचना मिलते ही तमाम लोग उनके घर पर पहुंचे और गहरा शोक व्यक्त किया। पोस्टमॉर्टम के बाद दिवंगत अमित शर्मा का शव परिजन को सौंप दिया गया है।

अज्ञात वाहन की टक्कर से वृद्ध की मौत

फतेहपुर। खागा कस्बा के संग्रामपुर सानी गांव निवासी 60 वर्षीय रामपाल का पुत्र गया सिंह मंगलवार की सुबह मेला देखकर गांव वापस आ रहे थे। जब वह एनएच-2 पर पहुंचा तभी अज्ञात वाहन ने उसे टक्कर मार दिया जिससे वह बुरी तरह घायल हो गया। वृद्ध को उपचार के लिए जिला चिकित्सालय में भर्ती कराया। जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई।

ट्रैक्टर की चपेट में आकर बाइक सवार की मौत

फतेहपुर। बिंदकी कोतवाली क्षेत्र के बरदरा गांव निवासी गया पाल का पुत्र हिमांशु बाइक से बहन के यहां कानपुर नगर के डुकरूपुर गया था। लौटते समय जब वह बकेवर के फुटहापुल के समीप पहुंचा तभी तेज रफ्तार ट्रैक्टर ने बाइक में टक्कर मार दिया जिससे उसकी मौके पर मौत हो गई।

पिकअप की टक्कर से पूर्व सैनिक की मौत

फर्रुखाबाद। पिकअप की टक्कर से पूर्व सैनिक गंभीर रूप से घायल हो गया । उसे उपचार के लिए उसे सेना के अस्पताल में ले जाया गया जहाँ कुछ देर बाद उसकी मौत हो गयी। मैनपुरी के भोगांव भसुआहार निवासी 40 वर्षीय राजकुमार राजपूत वर्तमान में थाना कादरी गेट के ग्राम पपियापुर में मकान बनाकर रह रहे थे । बीते दो साल पूर्व ही वह सेना से सेवानिवृत हुए थे। घर पर ही इलेक्ट्रानिक की दुकान किये हैं। मंगलवार को सुबह वह अपनी दुकान के बाहर खड़े थे। उसी दौरान पीछे से तेज रफ्तार पिकअप चालक ने टक्कर मार दी। और फरार हो गया।

दलित पिता पुत्र से मारपीट कर दी धमकी

गुरसहायगंज, कन्नौज। क्षेत्र के ग्राम खाड़ेदेवर निवासी राजकुमार पुत्र सुरेश चंद्र द्वारा कोतवाली में दी गई तहरीर में कहा गया है कि विगत 26 अक्टूबर को वह कंपाईन मशीन लेकर अपने पिता के साथ पड़ोसी जनपद हरदोई जा रहा था। जैसे ही ग्राम जसौरा के निकट पहुंचा तभी गांव के पास पहले से मौजूद अबनीश यादव, संतोष यादव, विनय यादव, अजय यादव, अनुराग यादव ने जबरन रोककर कंपाईन से नीचे उतार लिया ओर अपने साथियों सुन्दरम यादव, सत्यम, विपिन यादव को फोन करके बुलाया उनके साथ अज्ञात लोग भी थे जिन्होनें उसे व उसके पिता के साथ जाति सूचक गाली गलौज करते हुए लाठी-डण्डों लात घूसों से मारनें लगे और कहा कि जान से मार देगें। उन्होनें किसी तरह भागकर अपनी जान बचाई और डायल 112 पुलिस को सूचना दी जिसपर उक्तगण जान से मारनें की धमकी देकर भाग गये। घटना के संबंध में कोतवाली पुलिस द्वारा मुकदमा दर्ज कर घटना की जांच शुरू कर दी गई है।

डीएम-एसपी ने किया जिला कारागार का निरीक्षण

● वृद्ध व अशक्त बंदियों के उपचार में लापरवाही न बरतें: जिलाधिकारी

गुरसहायगंज, कन्नौज। डीएम शुभ्रांत कुमार शुक्ला व पुलिस अधीक्षक अमित कुमार आनन्द द्वारा सम्पूर्ण कारागार का संयुक्त रूप से निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान कारागार के सभी अहातों की बैरकों में निरूद्ध बंदियो से उनकी समस्याओं के सम्बन्ध में पूछताॅछ की गयी, बैरकों की तलाशी करायी गयी, तलाशी के दौरान कोई निषिद्व वस्तु नहीं पायी गयी।

गुरूवार को जिला कारागार में जनपदीय अधिकारियों द्वारा पाकशाला का निरीक्षण किया गया जिसमें बनाये गये भोजन की गुणवत्ता को चेक किया गया। कारागार में पर्याप्त सफाई पायी गयी। निरीक्षण के दौरान जेल की सुरक्षा व्यवस्था से जुड़े उपकरणों विशेष रूप से सीसीटीवी कैमरें की क्रियाशीलता को देखा गया। सभी उपकरण क्रियाशील मिले। अस्पताल में निरीक्षण के दौरान चिकित्साधिकारी को बीमार बंदियों के उपचार में किसी भी प्रकार की कोई लापरवाही न बरतनें एवं वृद्ध व अशक्त बंदियों पर विशेष निगरानी रखे तथा उनका नियमित रूप से परीक्षण कर समुचित उपचार सुनिश्चित करनेके लिये निर्देशित किया। कौशल विकास केन्द्र में बंदियों द्वारा बनायी जा रही जगमग झालर लाईटे, मोमवत्ती, मिट्टी के दीपक व फोटो फ्रेम पर गणेश लक्ष्मी व विभिन्न प्रकार के फोटो लगाकर एलईडी लाइटे व विभिन्न रंगों के कपड़े के कैरी बैग की प्रशंसा की गयी। जनपदीय अधिकारियों द्वारा कारागार को सुगमतापूर्वक संचालन हेतु निर्देशित किया गया। जेल अधीक्षक मो. अकरम खॉ, कारापाल विजय कुमार शुक्ला, उपकारापाल श्रीरामबहाल दुवे, उपकारापाल उर्मिला सिंह, उपकारापाल आशादेवी पाण्डेय, चिकित्साधिकारी डा0 अनिल यादव, प्रभारी मुख्य कार्यालय पंकज कुमार, शिक्षक मनोज कुमार कटियार के साथ सभी प्रशासनिक कर्मचारी उपस्थित थे।

पत्रकारों के साथ मारपीट के बाद चेयरमैन ने एससी एसटी व तमंचा लेकर धमकाने की दर्ज करायी रिपोर्ट

● पत्रकारों का समूह मिला पुलिस अधीक्षक व जिलाधिकारी से

डाक्टरी परीक्षण कराते पत्रकार

हमीरपुर। चेयरमैन व उनके गुर्गों ने पत्रकारों को घर बुलाकर मारपीट कर जख्मी कर दिया पत्रकारों द्वार रिपोर्ट दर्ज कराने के बाद चेयरमैन ने अपने परिवारिक भतीजे से पत्रकारों के खिलाफ तमंचा लेकर धमकाने व एससीएसटी की रिपोर्ट दर्ज करा दी है। भाजपा नगर पंचायत अध्यक्ष सरीला पवन अनुरागी की गुंडई के चर्चे रोजाना हो रहे है, नगर पंचायत के स्वच्छता कार्यक्रम की असलियत लिखने से नाराज चेयमैन पवन अनुरागी ने पत्रकार अमित दिवेदी व शैलेंद्र मिश्रा को एक साजिश के तहत घर बुलाकर कमरे में बंद कर लिया कमरे में पहले से ही एक दर्जन लोग मौजूद थे जैसे ही दोनो कमरे में अंदर घुसे वैसे ही पहले से घात लगाये लोगो ने दोनो पत्रकारों पर हमला कर दिया। जिसमे हमलावरो में पवन अनुरागी, अखिलेश राजपूत,विक्रम यादब, नरेंद्र विश्वकर्मा, आरके सोनी, आकाश अनुरागी निवासी सरीला आदि लोग शामिल थे। इसमे तीन हिस्ट्रीशीटर अपराधी बताये जाते है। यही नही दोनो पत्रकारों को जख्मी करने के बाद चेयरमैन व उसके गुर्गों ने पत्रकारों के हाथ में तमंचा थमाने के बाद उसका बीडियों बनाया । इस साजिश में नगरपंचायत सरीला का एक निर्वतमान लिपिक भी शामिल है। सभासदो का कहनाहै कि इसके पहले भी चेयरमैन कई लोगो पर हमला करा चुके है दारोगा के साथ मारपीट की थी। भाजपा का दामन थामने के कारण वह हर मर्तवा बच निकलते है। दोनो पत्रकारों ने जरिया थाने जाकर पुलिस में रिपोर्ट दर्ज करायी है। पुलिस ने डाक्टरी परीक्षण कराकर कार्यवाही शुरु कर दी है, इसके बाद पुलिस पर दबाव बनाकर पवन अनुरागी ने परिवारिक भतीजा कहे जाने वाले आकाश के द्वारा पत्रकारों के खिलाफ तमंचा लेकर धमकाने व जाति सूचक शब्द कहे जाने का मुकदमा दर्ज कराया है इस मामले को लेकर आज पत्रकारों का समूह पुलिस अधीक्षक व डीएम से मिलकर अपनी पीड़ा बतायी है पुलिस अधीक्षक ने पत्रकारों को न्याय दिलाये जाने का भरोसा दिलाया है अपर पुलिस अधीक्षक से जांच कराने को कहा है।

धन्वंतरि जयंती: वृहद आयुष चिकित्सा शिविर का कलेक्ट्रेट परिसर में भव्य आयोजन, डीएम ने किया शुभारंभ

● आयुर्वेद, योग, यूनानी, होम्योपैथी चिकित्सा शिविर के लगे स्टॉल बांटी गई आयुर्वेदिक औषधियां

लखीमपुर खीरी। नवम आयुर्वेद दिवस भगवान धन्वंतरि जयंती के अवसर पर कलेक्ट्रेट परिसर में डीएम दुर्गा शक्ति नागपाल ने दीप प्रज्वलित कर भगवान धन्वंतरि जी को पुष्प अर्पित करते हुए बृहद आयुष चिकित्सा शिविर का शुभारंभ किया। डीएम ने आयुर्वेद के महत्व को समझाते हुए कहा कि आज आयुर्वेद वैश्विक स्वास्थ्य के लिए नवाचार बन चुका हैए आयुष औषधियों के प्रयोग से कोई दुष्प्रभाव नहीं है इसलिए हम सभी को ज्यादा से ज्यादा आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति को अपनाना चाहिए। इस आयुष पद्धति को पहुंचाने की जिम्मेदारी आयुष विभाग के माध्यम से निभाई जा रही है। क्षेत्रीय आयुर्वेदिक एवं यूनानी अधिकारी डॉण्सुरेश कुमार सचान ने डीएम को पुष्प गुच्छ भेंट कर स्वागत किया। आयुष विभाग के प्रभारी चिकित्सा अधिकारियों समेत कार्यालय स्टाफएवं योग प्रशिक्षक तथा अन्य कर्मचारी गण उपस्थित रहे। क्षेत्रीय आयुर्वेदिक एवं यूनानी अधिकारी डॉ. सुरेश कुमार सचान, कार्यक्रम नोडल प्रभारी डॉ अशोक कुमार गौतम, प्रभारी चिकित्साधिकारी, डॉ. राजेंद्र प्रसाद, डॉ. योगेंद्र वर्मा, डॉ. वैभव गंगवार, होम्योपैथिक प्रभारी चिकित्साधिकारी डॉ. अजय वैश्य. डॉ. विनोद वर्मा, यूनानी प्रभारी चिकित्साधिकारी, डॉ. अबरार आलम सहित फार्मासिस्ट देवेंद्र कुमार चौबे, अजीत कुमार सिंह, हुबलाल यादव, जिला कार्यक्रम प्रबंधक सुरेंद्र कुमार सिंह, कार्यालय स्टॉफ आलोक अवस्थी, अवधेश कुमार वर्मा, रवींद्र कुमार, रवींद्र कुमार द्वितीय, तौहीद फातिमा, पूनम गुप्ता, शादाब एवं योग प्रशिक्षक कुलदीप वर्मा, अमित कुमार उपस्थित रहे।

हत्यारोपी को पुलिस ने भेजा जेल

मौदहा। हमीरपुर। कोतवाली क्षेत्र के बिहरका गाँव में सोमवार को दिनदहाड़े गोलीमार पारिवारिक दादा को मौत के घाट उतारने वाले आरोपी व उसके चाचा के खिलाफ कोतवाली पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर मुख्य आरोपी को मैं आला कत्ल के जेल भेज दिया। गांव में भय का माहौल है। दहा के बिहरका गाँव निवासी लवकुश पुत्र कुंवर बहादुर सिंह ने पुरानी आपसी मामूली जमीनी विवाद को लेकर सोमवार की दोपहर बाद अपने परिवारिक दादा विक्रम सिंह 46 पुत्र रामशरण सिंह की गोली मारकर हत्या कर दी थी। कोतवाली पुलिस ने मौके पर पहुंच घटना की जांच पड़ताल करते हुए आरोपी लवकुश को मैं आला कत्ल एक बंदूक बारह बोर तथा तीन कारतूस के खोका के गिरफ्तार कर लिया था। जिस आज जेल भेज दिया। पुलिस ने मृतक के पुत्र सत्येंद्र सिंह उर्फ लकी की तहरीर पर आरोपी लवकुश सिंह व उसके चाचा विनोद सिंह के खिलाफ हत्या समेत अन्य धाराओं में मामला दर्ज कर लव कुश को जेल भेज दिया है।

जिलाधिकारी ने की मतदाता सूची के पुनरीक्षण अभियान के अंतर्गत मतदाता पंजीकरण अभियान की शुरुआत, जानें कैसे बनें नए वोटर

● डीएम ने किया वोटर लिस्ट में नाम जुड़वाने के लिए युवाओं का आह्वान

● 09, 10, 23, 24 नवंबर को चलेगा विशेष अभियान

लखीमपुर खीरी। जिले में मंगलवार से मतदाता सूची के पुनरीक्षण अभियान के अंतर्गत मतदाता पंजीकरण अभियान की शुरुआत हुई। डीएम दुर्गा शक्ति नागपाल ने शहर के भगवानदीन आर्यकन्या महाविद्यालय में अभियान का शुभारंभ करते हुए मतदाता सूची में नाम जुड़वाने के लिए युवाओं का आह्वान किया। एक जनवरी 2025 को जिनकी उम्र 18 वर्ष की हो जाएगी उन्हें मतदाता बनाने के लिए अभियान में विशेष फोकस किया जाएगा। इस दौरान 09, 10, 23, 24 नवंबर को विशेष अभियान चलेगा। सभी पोलिंग बूथ पर मतदाताओं के नाम जोड़नेए संशोधन व हटाने के लिए विशेष कैंप लगेंगे।

शहर के महिला महाविद्यालय के मतदान केंद्र पर मंगलवार को डीएम दुर्गा शक्ति नागपाल ने पहुंचकर दीप प्रज्वलित कर निर्वाचक नामावलियों के विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ किया। कॉलेज की छात्राओं ने स्वागत गीत प्रस्तुत कर डीएम का स्वागत किया। डीएम ने कॉलेज की 18 वर्ष की उम्र पूर्ण कर चुकी 11 बालिकाओं से उनका फॉर्म 6 भरा हुआ आवेदन पत्र प्राप्त किया। एक छात्रा से ऑनलाइन फॉर्म 6 भरवा कर नाम बढ़ाने के लिए आवेदन किया गया।

डीएम ने कहा कि 29 अक्टूबर से 28 नवंबर तक पूरे जिले में मतदाताओं के नाम जोड़ने व काटने के लिए अभियान चलाया जाएगा। एक जनवरी 2025 को 18 वर्ष की उम्र पूरी कर रहे युवाओं को मतदाता बनाने के लिए विशेष फोकस रहेगा। युवा ऑनलाइन माध्यम से या फिर ऑफलाइन माध्यम से आवेदन कर सकते हैं। मतदाता सूची का आलेख्य प्रकाशन कर दिया गया है। मतदाता सूची में नाम जुड़वानेए संशोधन व नाम कटवाने के लिए दावे और आपत्तियां 29 अक्टूबर से 28 नवंबर तक ली जाएंगी। प्राप्त दावे और आपत्तियों का निस्तारण करते हुए मतदाता सूची का अंतिम प्रकाशन 06 जनवरी 2025 को किया जायेगा। सभी युवाओं से वोटर हेल्पलाइन एप डाउनलोड करने व ऑनलाइन पंजीकरण कराने पर जोर दिया।

डीएम ने की मैं हूं ना के अंतर्गत क्यूआर कोड फार वोटर हेल्पलाइन ऐप पोस्टर की लांचिग

कार्यक्रम में डीएम दुर्गा शक्ति नागपाल ने एसडीएम सदर अश्विनी कुमार सिंह, तहसीलदार सुशील प्रताप सिंह, प्राचार्य, प्रोफेसर गीता शुक्ला, सहायक जिला निर्वाचन अधिकारी, तौसीफ अहमद के संग आनलाइन आवेदन के लिए क्यूआर कोड फार वोटर हेल्पलाइन ऐप की जिले में लांचिग करते हुए कहा कि भारत निर्वाचन आयोग ने आनलाइन आवेदन के लिए क्यूआर कोड फार वोटर हेल्पलाइन ऐप भी प्रदान की है। इसके जरिए अब मतदाता सूची में पंजीकरण, संशोधन व नाम चेक कर सकते हैं।

राजनीतिक स्वार्थ के चलते दिल्ली, बंगाल की सरकारें आयुष्मान भारत योजना लागू नहीं कर रहीं : मोदी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने राजनीतिक स्वार्थ के चलते आयुष्मान भारत स्वास्थ्य बीमा योजना लागू नहीं करने को लेकर मंगलवार को दिल्ली और पश्चिम बंगाल की सरकारों पर निशाना साधा और कहा कि उन्हें इस बात का दुख है कि इन दोनों राज्यों के बुजुर्गों को इसके विस्तारित कार्यक्रम के तहत मुफ्त इलाज का लाभ नहीं मिल पाएगा। राजधानी स्थित अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान (एआईआईए) में आयोजित एक कार्यक्रम में मोदी ने आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना में 70 वर्ष और इससे अधिक आयु के नागरिकों को भी शामिल करने की योजना की शुरुआत करने के बाद अपने संबोधन में यह बात कही। इस योजना से सभी आय वर्गों के वरिष्ठ नागरिकों के लिए स्वास्थ्य सुविधाएं सुलभ होंगी।

मैं दिल्ली और पश्चिम बंगाल के 70 वर्ष से अधिक उम्र के हर बुजुर्ग से क्षमा मांगता हूं कि मैं आपकी सेवा नहीं कर पाऊंगा। मुझे पता तो चलेगा कि आपको कष्ट है, लेकिन मैं आपकी मदद नहीं कर पाऊंगा। कारण...अपने राजनीतिक स्वार्थ के कारण दिल्ली और पश्चिम बंगाल की सरकार आयुष्मान भारत योजना से जुड़ नहीं रही है। उन्होंने कहा कि राजनीतिक स्वार्थ के लिए अपने ही राज्य के बीमार लोगों के साथ जुल्म करने की प्रवृत्ति मानवता की दृष्टि से किसी भी तराजू पर खरी नहीं उतरती। मोदी ने कहा कि 70 वर्ष से अधिक आयु के लोगों को अस्पतालों में मुफ्त इलाज मिलेगा और उन्हें आयुष्मान वय वंदना कार्ड दिया जाएगा, मगर अफसोस है कि वह अन्य राज्यों में लोगों की सेवा तो कर पाएंगे, लेकिन दिल्ली और पश्चिम बंगाल में नहीं।

उन्होंने कहा, मैं देश के लोगों की सेवा तो कर पा रहा हूं लेकिन राजनीतिक स्वार्थ की दीवारें मुझे दिल्ली और पश्चिम बंगाल के बुजुर्गों की सेवा करने से रोक रही हैं। मेरे दिल में कितना दर्द होता होगा, इसे मैं शब्दों में बयान नहीं कर पाऊंगा। दिल्ली में 2025 और पश्चिम बंगाल में 2026 में चुनाव होने हैं। धन्वन्तरी जयंती और 9वें आयुर्वेद दिवस के अवसर पर लगभग 12,850 करोड़ रुपए की स्वास्थ्य क्षेत्र से संबंधित कई परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास करने के बाद मोदी ने कहा कि इस साल के आम चुनावों के दौरान उन्होंने वादा किया था कि 70 वर्ष और उससे अधिक उम्र के लोगों को आयुष्मान भारत स्वास्थ्य बीमा योजना के तहत लाया जाएगा।

आज आज धनवंतरी जयंती के दिन ए गारंटी पूरी हो रही है। मोदी ने कहा कि जब तक देश का गरीब और मध्यम वर्ग महंगे इलाज के बोझ से मुक्त नहीं हो जाता, तब तक वह चैन से नहीं बैठेंगे। आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना (एबी-पीएमजेएवाई) के तहत लगभग चार करोड़ गरीब लोगों ने लाभ उठाया है। अगर यह योजना नहीं होती तो उन्हें (गरीबों को) अपनी जेब से लगभग 1.25 लाख करोड़ रुपए खर्च करने पड़ते। उन्होंने कहा, मैं अक्सर आयुष्मान भारत योजना के लाभार्थियों के साथ बातचीत करता हूं और उनके अनुभव सुनता हूं...।

मुजफ्फनगर दंगा मामलाः गैर जमानती वारंट के बाद कई भाजपा नेता अदालत में पेश

मुजफ्फरनगर (उप्र)। मुजफ्फरनगर दंगा मामले में गैर-जमानती वारंट जारी होने के बाद उप्र के मंत्री कपिल देव अग्रवाल, पूर्व मंत्री सुरेश राणा और अशोक कटारिया, भाजपा के पूर्व विधायक अशोक कंसल, पूर्व सांसद भारतेंदु सिंह सहित कई भाजपा नेता मंगलवार को मुजफ्फरनगर में विधायक/ सांसद अदालत में पेश हुए। विशेष न्यायाधीश देवेंद्र फौजदार ने आरोपियों के खिलाफ आरोप तय करने के लिए 16 नवंबर की तारीख तय की है। डासना मंदिर के पुजारी यति नरसिंहानंद अदालत में पेश नहीं हुए और उनके खिलाफ फिर से गैर-जमानती वारंट जारी किया। अदालत ने सभी आरोपियों को तय तारीख पर पेश होने का आदेश दिया। उप्र के मंत्री कपिल देव अग्रवाल, पूर्व केंद्रीय मंत्री संजीव बालियान, विहिप नेता साध्वी प्राची, पूर्व मंत्री सुरेश राणा, पूर्व सांसद भारतेंदु सिंह, पूर्व विधायक उमेश मलिक और अशोक कंसल, डासना मंदिर के पुजारी यति नरसिंहानंद समेत 20 लोगों के खिलाफ मामला दर्ज किया गया था। आरोपियों ने अगस्त 2013 में नगलामाडोर गांव में एक पंचायत में भाग लिया और भड़काऊभाषण दिया था। मुजफ्फरनगर और शामली जिलों में 2013 के सांप्रदायिक दंगों में 60 से अधिक लोग मारे गए थे और 40,000 से अधिक लोग विस्थापित हुए।

पटना में मेट्रो निर्माण कार्य के दौरान क्रेन के ब्रेक फेल होने से दो लोगों की मौत, छह अन्य घायल

भाषा। पटना

पटना शहर के पीरबहोर थाना क्षेत्र में मेट्रो निर्माण कार्य के दौरान सोमवार-मंगलवार की दरमियानी रात एक क्रेन के ब्रेक फेल होने के कारण हुई दुर्घटना में दो लोगों की मौत हो गई तथा छह अन्य व्यक्ति घायल हो गए। पुलिस उप महानिरीक्षक एवं पटना के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक (एसएसपी) राजीव मिश्रा ने बताया कि इस संबंध में मेट्रो प्रशासन अपने स्तर पर जांच कर रहा है और पटना जिला प्रशासन की ओर से भी मामले की जांच कराई जा रही है। उन्होंने कहा कि जांच रिपोर्ट के आधार पर कार्वाई की जाएगी।

पटना के जिलाधिकारी चन्द्रशेखर सिंह ने बताया कि पटना मेट्रो रेल निगम से प्राप्त सूचना के अनुसार सोमवार रात लगभग 10 बजे पटना विश्वविद्यालय और पीएमसीएच के बीच मेट्रो सुरंग में एक लोकोमोटर वाहन के ब्रेक फेल होने के कारण हुई दुर्घटना में एक चालक और एक श्रमिक की मौत हो गई जो ओडिशा के रहने वाले थे। उन्होंने बताया कि इस हादसे में घायल छह अन्य लोगें का इलाज मेडिवर्सल अस्पताल में किया जा रहा है जिनमें से एक गहन चिकित्सा इकाई (आईसीयू) में भर्ती है। उन्होंने बताया कि उसकी हालत गंभीर बताई जा रही है और अन्य घायलों की हालत खतरे से बाहर है।

दुर्घटना के कारणों की जांच करने, उनका पता लगाने तथा सुरक्षा उपाय लागू करने के लिए सुझाव देने हेतु अधिकारियों की एक तीन सदस्ईय टीम भी गठित की गई है। इस समिति में अपर जिला दंडाधिकारी विधि-व्यवस्था, श्रम अधीक्षक एवं कार्यपालक अभियंता शामिल हैं। अपर जिला दंडाधिकारी और अन्य अधिकारियों को घटनास्थल पर भेजा गया। जिला प्रशासन एवं पटना मेट्रो रेल निगम के अधिकारी घटनास्थल पर डेरा डाले हुए हैं। इससे पहले पटना मेटो रेल निगम के प्रवक्ता ने दावा किया था कि सभी घायलों को इलाज के बाद अस्पताल से छुट्टी दे दी गई है। हालांकि, अधिकारी कुछ प्रत्यक्षदर्शियों द्वारा लगाए गए इस आरोप पर चुपी साधे रहे जिनमें कहा गया था कि जब काम किया जा रहा था तब सुरंग के अंदर कोई इंजीनियर या पर्यवेक्षक नहीं था।

डीके पांडा उर्फ दूसरी राधा ने 381 करोड़ रुपए की धोखाधड़ी की प्राथमिकी दर्ज कराई

भाषा। प्रयागराज

पूर्व पुलिस महानिरीक्षक एवं दूसरी राधा के नाम से प्रख्यात डीके पांडा ने धूमनगंज थाना में अज्ञात के खिलाफ करीब 381 करोड़ रुपए की धोखाधड़ी की प्राथमिकी दर्ज कराई है। पांडा ने पुलिस को बताया कि उन्होंने लंदन की कंपनी फिमनिक्स ग्रुप के साथ ऑनलाइन व्यापार कर करीब 381 करोड़ रुपए कमाए थे और 25 अक्टूबर को उनके मोबाइल पर आरव शर्मा नाम के व्यक्ति ने साइप्रस से व्हॉट्सएप कॉल की तथा अपशब्द कहते हुए धमकी दी। शिकायत के मुताबिक, पांडा, आरव शर्मा नाम के व्यक्ति से कभी नहीं मिले और लंदन की कंपनी फिमनिक्स के वित्त विभाग में कार्यरत राहुल गुप्ता के माध्यम से वह आरव शर्मा के संपर्क में आए।

पांडा ने तहरीर में बताया, मैंने लंदन की कंपनी में कमाए लाभ को प्रयागराज में अपने बैंक खाता में अंतरित कराने का प्रयास किया, लेकिन ऐसा नहीं हो पाया। इसके बजाय, कंपनी के लोगों ने कई तरह के शुल्क का भुगतान करने की मांग की। इसी दौरान, आरव शर्मा से मामले से जुड़ा। पांडा का आरोप है कि आरव शर्मा ने उनके करीब 381 करोड़ रुपए खुद वसूल लिए और उनसे आठ लाख रुपए देने की मांग की। उन्होंने आरोप लगाया कि रुपए देने से मना करने पर आरव ने धमकी दी कि वह उनकी धनराशि को आतंकियों को उपलब्ध करा देगा और उन्हें फंसा देगा।

पांडा की तहरीर पर धूमनगंज थाना में 26 अक्टूबर 2024 को अज्ञात के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता की धारा 351(4) और 318(4) के तहत मुकदमा दर्ज किया गया। ओड़िशा के निवासी एवं 1971 बैच के भारतीय पुलिस सेवा के अधिकारी देबेन्द्र किशोर पांडा (डीके पांडा) ने सपने में भगवान कृष्ण को देखने का दावा किया जिससे उनके जीवन में परिवर्तन आया और वह दूसरी राधा बन गए। पांडा के मांग में सिंदूर लगाने और साड़ी पहनने से पुलिस विभाग का उपहास उड़ाया जाने लगा। अपनी सेवानिवृत्ति से दो वर्ष पूर्व ही पांडा ने 2005 में पद से त्यागपत्र दे दिया था।

राजस्थान में निजी बस के दुर्घटनाग्रस्त होने से 12 लोगों की मौत, अनेक घायल

भाषा। जयपुर

राजस्थान के सीकर जिले में मंगलवार अपराह्न एक भीषण सड़क हादसे में 12 लोगों की मौत हो गई और कम से कम 30 अन्य घायल हो गए। पुलिस ने यह जानकारी दी। पुलिस ने बताया कि घटना लक्ष्मणगढ़ में अपराह्न करीब दो बजे की है जब सालासर से आ रही एक निजी बस अनियंत्रित होकर फ्लाईओवर के नीचे दीवार से टकरा गई जिससे इससे बस का चालक की तरफ वाला हिस्सा तहस नहस हो गया।

सीकर के पुलिस महानिरीक्षक सत्एंद्र सिंह ने संवाददाताओं से कहा, 12 लोगों की मौत की सूचना है। जो घायल हैं उनमें से कुछ को जयपुर रेफर किया गया है। बाकी का स्थानीय अस्पताल में इलाज किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि चिकित्सकों की टीम लगी हुई है और प्रशासन ने तमाम व्यवस्थाएं की हैं। उन्होंने बताया कि बस में सवार अधिकांश यात्री स्थानीय थे। सिंह ने बताया कि मृतकों और घायलों की पहचान कर उनके परिजनों को सूचित किया जा रहा है और घटना के वास्तविक कारणों की जांच की जा रही है।

जिला पुलिस अधीक्षक भुवन भूषण यादव ने बताया कि सालासर से लक्ष्मणगढ़ आ रही निजी बस फ्लाईओवर के पास से मुड़ना था लेकिन संभवतः तेज गति के कारण चालक बस को मोड़ नहीं पाया और चालक की तरफ वाला हिस्सा फ्लाईओवर की दीवार से जा टकराया। उन्होंने बताया कि हादसा इतना भीषण था कि बस का एक तरफ का हिस्सा तहस नहस हो गया। मृतकों में विनीता (32), सीमा (22), किरण कंवर, कमला (35), बनारसी (55), आदित्य (16) तथा प्रमोद सिंह (35) शामिल हैं।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने हादसे पर शोक जताते हुए घायलों के समुचित इलाज के निर्देश दिए हैं। उन्होंने सोशल मीडिया मंच एक्स पर पोस्ट कर कहा, सीकर के लक्ष्मणगढ़ क्षेत्र में बस दुर्घटना में हुई जनहानि अत्यंत दुखद एवं हृदयविदारक है। मेरी गहरी संवेदनाएं मृतकों के शोक संतप्त परिवारजनों के साथ हैं।

शर्मा के अनुसार, संबंधित अधिकारियों को घायलों का समुचित उपचार सुनिश्चित करने हेतु निर्देशित किया गया है। कांग्रेस की प्रदेश इकाई के अध्यक्ष एवं लक्ष्मणगढ़ से विधायक गोविंद सिंह डोटासरा ने भी हादसे पर शोक जताया है और एक्स पर पोस्ट कर कहा, लक्ष्मणगढ़ में भीषण सड़क दुर्घटना में कई लोगों की मौत का हृदयविदारक समाचार सुनकर आहत हूं। दुखद एवं दुर्भाग्यपूर्ण हादसे में अपनों को खोने वालों के प्रति मेरी गहरी संवेदना है। उन्होंने कहा, दुर्घटना संज्ञान में आते ही घायलों के त्वरित उपचार एवं हर संभव सहायता के लिए स्थानीय प्रशासनिक अधिकारियों से बात की है।

माकपा नेता दिव्या को एडीएम आत्महत्या मामले में हिरासत में लिया गया

कन्नूर (केरल)। कन्नूर के अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट नवीन बाबू की आत्महत्या के मामले में आरोपी मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (माकपा) की नेता पी. पी. दिव्या को मंगलवार को केरल पुलिस ने हिरासत में ले लिया। हिरासत में लिए जाने से कुछ घंटे पहले एक अदालत ने दिव्या की अग्रिम जमानत याचिका खारिज कर दी थी। कन्नूर शहर के पुलिस आयुक्त अजित कुमार ने यहां संवाददाताओं को बताया, उन्हें (दिव्या) हिरासत में ले लिया गया है। मामले में दिव्या पर नवीन बाबू को आत्महत्या के लिए उकसाने का आरोप लगाया गया है। इससे पहले दिन में थालास्सेरी के प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश के. टी. निसार अहमद ने दिव्या की अग्रिम जमानत याचिका खारिज कर दी। दिव्या 14 अक्टूबर को कथित रूप से बिना आमंत्रण के बाबू के विदाई समारोह में शामिल हुई थीं और चेंगलाई में एक पेट्रोल पंप की मंजूरी में कई महीनों की देरी करने का आरोप लगाते हुए उनकी आलोचना की थी। साथ ही दिव्या ने टिप्पणी की थी कि उन्होंने स्थानांतरण के दो दिन बाद ही इसकी मंजूरी दे दी थी। इस तरह से दिव्या ने इसका संकेत दिया था कि वह अचानक इस मंजूरी के पीछे के कारणों को जानती हैं। इसके अगले दिन बाबू कन्नूर स्थित अपने आवास पर मृत पाए गए थे। आत्महत्या के सिलसिले में दिव्या के खिलाफ मामला दर्ज होने के बावजूद उन्हें हिरासत में लेने में कथित देरी के बारे में पूछे गए सवालों का जवाब देते हुए आयुक्त ने कहा, हमने मामले में इसलिए हस्तक्षेप नहीं किया क्योंकि यह न्यायिक विचाराधीन था। उन्होंने कहा कि 38 पन्नों का आदेश था और उसके आधार पर, जैसे ही अग्रिम जमानत याचिका खारिज हुई, हमने आरोपी का पता लगाने के लिए अपनी टीम भेजी और इस प्रक्रिया में उसे हिरासत में ले लिया। अदालत ने दिव्या की अग्रिम जमानत याचिका को खारिज करते हुए कहा कि परिस्थितियां ही उसे गिरफ्तारी-पूर्व जमानत की राहत से वंचित करती हैं। अदालत ने अपने आदेश में, उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालय के विभिन्न निर्णयों का हवाला देते हुए कहा कि याचिकाकर्ता (दिव्या) का कृत्य एक पूर्व नियोजित और सोचा-समझा था, जिसका एकमात्र उद्देश्य एक उच्च प्रतिष्ठित उच्च पदस्थ सरकारी अधिकारी का अपमान करना और उसे अपमानित करना था। अदालत ने कहा, जैसा कि सरकारी वकील ने कहा है, यदि ऐसे व्यक्ति को गिरफ्तारी-पूर्व जमानत की राहत दी जाती है, तो निश्चित रूप से इससे समाज को गलत संदेश जा सकता है। उसकी राजनीतिक शक्ति को देखते हुए कोई यह अनुमान लगा सकता है कि उसके द्वारा अपने प्रभाव का उपयोग करके गवाहों को प्रभावित करने की पूरी आशंका है। अदालत ने उच्चतम न्यायालय के एक फैसले का हवाला दिया जिसमें कहा गया था कि अग्रिम जमानत एक असाधारण विशेषाधिकार है जिसे केवल असाधारण मामले में ही दिया जाना चाहिए। अदालत ने कहा कि अपराध की गंभीरता, आरोपी द्वारा निभाई गई सक्रिय भूमिका सहित सभी पहलुओं पर विचार करने के बाद, उसकी राय है कि यह गिरफ्तारी-पूर्व जमानत देने के लिए उपयुक्त मामला नहीं है। अदालत ने दिव्या की याचिका खारिज करते हुए कहा, याचिकाकर्ता यह साबित नहीं कर पाई कि यह एक असाधारण मामला है और उसे गिरफ्तारी से पहले जमानत मिलनी चाहिए। एडीएम को आत्महत्या के लिए उकसाने के आरोप में पुलिस द्वारा भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता (बीएनएसएस) की धारा 108 के तहत मामला दर्ज किए जाने के बाद दिव्या ने 19 अक्टूबर को थालास्सेरी सत्र अदालत का रुख किया था। माकपा की जिला समिति सदस्य दिव्या को गिरफ्तार करने के लिए वाम सरकार पर दबाव बढ़ गया था। फैसले पर प्रतिक्रिया देते हुए बाबू की पत्नी मंजूषा ने कहा, हमारे जीवन को बर्बाद करने के लिए जिम्मेदार व्यक्ति को गिरफ्तार किया जाना चाहिए और हम न्याय पाने के लिए किसी भी हद तक जाएंगे। मंजूषा ने पथनमथिट्टा जिले के मलयालप्पुषा में अपने निवास पर संवाददाताओं से कहा, मेरे पास कहने के लिए और कुछ नहीं है, लेकिन हम न्याय के लिए किसी भी हद तक जाएंगे। घटना के बाद पहली बार अपनी चुप्पी तोड़ते हुए, तहसीलदार मंजूषा ने कहा कि यह पता लगाने के लिए जांच जरूरी है कि रिश्तेदारों के आने से पहले बाबू का पोस्टमार्टम करने में लापरवाही हुई या नहीं। उन्होंने कहा कि जिला कलेक्टर को दिव्या को कन्नूर कलेक्ट्रेट में विदाई समारोह में शामिल होने की अनुमति नहीं देनी चाहिए थी। उन्होंने कहा कि एक स्थानीय चैनल के माध्यम से दिव्या के भाषण को रिकॉर्ड करना भी अनुचित था। केरल विधानसभा में विपक्ष के नेता वी डी सतीशन ने कहा कि अदालत द्वारा दिव्या की अग्रिम जमानत याचिका को खारिज करने के बाद उन्हें तुरंत गिरफ्तार किया जाना चाहिए था।

उत्तराखंड हाईकोर्ट ने कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग के सचिव को अवमानना नोटिस भेजा

नैनीताल। उत्तराखंड उच्च न्यायालय ने भारतीय वन सेवा के एक अधिकारी की याचिका पर कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग (डीओपीटी) के सचिव डॉ. विवेक जोशी को अवमानना नोटिस जारी किया। अदालत ने अधिकारी को केंद्र के पैनल में शामिल किए जाने को लेकर एक आदेश जारी किया था। न्यायमूर्ति आलोक कुमार वर्मा ने विभाग को यह नोटिस 23 अक्टूबर को भारतीय वन सेवा के अधिकारी संजीव चतुर्वेदी द्वारा दायर याचिका पर जारी किया था। चतुर्वेदी ने याचिका में आरोप लगाया कि पैनल में शामिल किए जाने के अदालत के आदेश की जानबूझकर अवज्ञा की गई। उच्च न्यायालय की एक खंडपीठ ने केंद्र सरकार को सितंबर में निर्देश दिया था कि वह चतुर्वेदी को संयुक्त सचिव (जेएस) के रूप में पैनल में शामिल होने के दस्तावेज उपलब्ध कराए। केंद्र सरकार ने संयुक्त सचिव या उसके समकक्ष किसी पद पर आसीन किए जाने हेतु चतुर्वेदी को पैनल में शामिल किए जाने को मंजूरी नहीं दी थी,

बोतल तोड़कर फेंकने की कोई मंशा नहीं थीः कल्याण बनर्जी

नई दिल्ली। वक्फ विधेयक पर संसद की संयुक्त समिति की बैठक से एक दिन के लिए निलंबित किए गए तृणमूल कांग्रेस के सदस्य कल्याण बनर्जी ने मंगलवार को कहा कि पिछले सप्ताह समिति की बैठक में भाजपा के सांसद अभिजीत गंगोपाध्याय ने उन्हें उकसाया और कांच की बोतल फोड़कर फेंकने की उनकी कोई मंशा नहीं थी। बनर्जी ने यहां संवाददाताओं से कहा, मैंने बैठक में कहा था कि समिति के अध्यक्ष पर इसे (टूटी बोतल) फेंकने की मेरी कोई मंशा नहीं थी और मुझे खेद है।

वक्फ संशोधन विधेयक पर विचार कर रही संसद की संयुक्त समिति की बैठक में बनर्जी ने कांच की बोतल तोड़कर समिति के अध्यक्ष जगदंबिका पाल की ओर फेंक दी थी। इसके बाद उन्हें समिति की बैठक से एक दिन के लिए निलंबित कर दिया गया था। भाजपा सांसदों ने लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला को पत्र लिखकर तृणमूल कांग्रेस के लोकसभा सदस्य को सदन से निलंबित करने और उनके खिलाफ प्राथमिकी दर्ज करने की मांग की थी।

उस दिन के घटनाक्रम पर पहली बार सार्वजनिक रूप से अपना पक्ष रखते हुए बनर्जी ने कहा कि वह 22 अक्टूबर को वक्फ (संशोधन) विधेयक पर संसद की संयुक्त समिति की बैठक में गंगोपाध्याय को उनके आरोपों और व्यक्तिगत हमलों पर जवाब देने के लिए मजबूर थे। टीएमसी नेता ने आरोप लगाया, जब गंगोपाध्याय बोल रहे थे, तो मैंने उनसे सवाल किया। फिर उन्होंने मेरे और मेरे परिजनों के खिलाफ अभद्र भाषा का इस्तेमाल किया। मैंने जवाब दिया उन्होंने अभद्र भाषा का इस्तेमाल जारी रखा...। बनर्जी ने आरोप लगाया कि अध्यक्ष का रुख उनके प्रति कठोर और गंगोपाध्याय के प्रति उदार था। वरिष्ठ अधिवक्ता और टीएमसी नेता ने कहा, इससे निराशा हुई.. इसे (जिसने) शुरू किया, उसकी नहीं बल्कि मेरी खिंचाई की गई...तब मैं निराश हो गया, नाराज नहीं था।

अनुसूचित जातियों के बीच आंतरिक आरक्षण हेतु शीघ्र ही एक सदस्ईय आयोग गठित होगाः सिद्धरमैया

भाषा। बेंगलुरु

कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धरमैया ने मंगलवार को कहा कि अनुसूचित जातियों के बीच आंतरिक आरक्षण प्रदान करने के लिए अनुभव आधारित आंकड़े एकत्र करने हेतु शीघ्र ही एक सदस्ईय आयोग का गठन किया जाएगा। सिद्धरमैया ने कहा, हमने कल मंत्रिमंडल में आंतरिक आरक्षण के बारे में निर्णय लिया है। सैद्धांतिक रूप से हम आंतरिक आरक्षण देने पर सहमत हो गए हैं। उच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त न्यायाधीश का एक सदस्ईय आयोग बनाया जाएगा, आयोग को तीन महीने में रिपोर्ट देनी होगी।

उन्होंने यहां संवाददाताओं से कहा, कुछ लोगों की राय है कि कोई अनुभवजन्य आंकड़ा नहीं है। अनुसूचित जातियों का एक वर्ग, विशेषकर अनुसूचित जाति-बायां (अज-बायां), आंतरिक आरक्षण की मांग कर रहा है तथा आरोप लगा रहा है कि केवल कुछ प्रभावशाली उप-जातियां ही अधिकांश लाभ हड़प रही हैं, जबकि कई समुदाय अभी भी हाशिए पर हैं।

विधानसभा चुनाव से बस पहले पिछली भाजपा सरकार के मंत्रिमंडल ने केंद्र सरकार को अनुसूचित (बायां) के लिए छह प्रतिशत आंतरिक आरक्षण, अनुसूचित (दायां) के लिए 5.5 प्रतिशत आरक्षण और स्पृश्य (बंजारा, भोवी, कोरचा, कुरूमा, आदि) के लिए 4.5 प्रतिशत आरक्षण की सिफारिश करते हुए आंतरिक आरक्षण का निर्णय लिया था। बताया जाता है कि अनुसूचित (बायां) ऐतिहासिक रूप से अनुसूचित (दायां) से अधिक पिछड़ रहे हैं।

सोमवार का मंत्रिमंडल का फैसला उच्चतम न्यायालय द्वारा एक अगस्त को सुनाए गए ऐतिहासिक निर्णय का आलोक में किया गया है। उच्चतम न्यायालय ने कहा था कि राज्यों को सामाजिक रूप से विषम वर्गीय अनुसूचित जातियों के भीतर उप-वर्गीकरण करने का संवैधानिक अधिकार है, ताकि सामाजिक और शैक्षणिक रूप से अधिक पिछड़ी जातियों के उत्थान के लिए आरक्षण दिया जा सके।

मुख्यमंत्री ने कहा, अनुभवजन्य आंकड़े जुटाने के लिए हम तत्काल एक आयोग गठित करेंगे और तीन महीने में उससे रिपोर्ट प्राप्त करेंगे। आयोग के लिए नियम एवं शर्तें तय की जाएंगी। जिन भर्तियों के लिए अधिसूचनाएं पहले ही जारी हो चुकी हैं, उनके अलावा बाकी भर्तियों के लिए अधिसूचनाएं जारी नहीं की जाएंगी (ऐसा तबतक के लिए किया जाएगा जब तक कि आंतरिक आरक्षण प्रदान नहीं किया जाता)।

पेज 1 का शेष

अखनूर...

25 मई, 2020 को जन्मे फैंटम अगस्त 2022 में सेना में शामिल हुए और सुंदरबनी सेक्टर में आतंकवादियों का पीछा करने वाली टीम का हिस्सा थे। दुश्मन के ठिकानों की ओर आगे बढ़ने में सुरक्षा बलों की मदद करते हुए वह शहीद हो गए। फैंटम की भूमिका का सम्मान करते हुए, व्हाइट नाइट कॉर्प्स ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर भावभीनी श्रद्धांजलि पोस्ट की। कॉर्प्स ने पोस्ट किया, 'हम अपने सच्चे नायक-एक बहादुर भारतीय सेना के कुत्ते, फैंटम के सर्वोच्च बलिदान को सलाम करते हैं।' सेना ने कहा, जब हमारे सैनिक फंसे हुए आतंकवादियों के करीब पहुंच रहे थे, तो फैंटम ने दुश्मन की गोलीबारी का सामना किया, जिससे उसे घातक चोटें आईं। उसके साहस, निष्ठा और समर्पण को कभी नहीं भुलाया जा सकेगा।

16 दिन..

भी अनुरोध किया। अधिकारी ने कहा कि उड़के द्वारा 21 अक्टूबर को रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव को भेजे गए ईमेल और डीजीपी और आरपीएफ को भेजे गए ईमेल के बाद रेलवे स्टेशनों पर सुरक्षा उपाय किए गए। इस बीच, हाल ही में एयरलाइनों को धमकी भरे कॉल में उल्लेखनीय वृद्धि के मद्देनजर, राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) ने पूरे देश में अपने सुरक्षा प्रयासों को तेज कर दिया है। इन बढ़ते खतरों से निपटने के लिए, एनआईए की साइबर विंग ने इन विदेशी धमकी भरे कॉल का व्यापक विश्लेषण शुरू किया है। यह जांच इन कॉल के पीछे के उद्देश्यों को समझने और उनकी प्रामाणिकता का आकलन करने पर केंद्रित है। एयरलाइनों को बम से जुड़ी झूठी धमकियों की पृष्ठभूमि में, आईटी मंत्रालय ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स से उचित परिश्रम करने और आईटी नियमों के तहत निर्धारित सख्त समयसीमा के भीतर गलत सूचनाओं तक पहुंच को तुरंत हटाने या अक्षम करने के लिए कहा है। साथ ही, नागरिक उड्डयन मंत्रालय एयरलाइनों को बम से जुड़ी झूठी धमकियों के खतरे से निपटने के लिए विधायी कार्रवाई करने पर विचार कर रहा है। रविवार को, नागरिक उड्डयन मंत्री के राममोहन नायडू ने कहा कि केंद्र उन अपराधियों पर प्रतिबंध लगाने के लिए कदम उठा रहा है, जो बम से जुड़ी झूठी धमकियों का सहारा लेते हैं।

अंतिम चरण..

उन्होंने कहा कि आखिरकार, क्षेत्रों और गश्त की स्थिति को अप्रैल 2020 से पहले के स्तर पर वापस ले जाने की उम्मीद है। एक सूत्र ने बताया कि गश्त सशस्त्र कर्मियों द्वारा की जाएगी और हटाए जाने वाले ढांचों में अस्थायी शेड और टेंट शामिल हैं। यह प्रक्रिया पूर्वी लद्दाख में एलएसी पर गश्त और सैनिकों की वापसी पर दोनों देशों के बीच हुए समझौते के बाद की गई है, जो चार साल से अधिक समय से चल रहे गतिरोध को समाप्त करने की दिशा में एक बड़ी सफलता है। जून 2020 में गलवान घाटी में हुई भीषण झड़प के बाद दोनों एशियाई देशों के बीच संबंधों में खटास आ गई थी, जो दशकों में दोनों पक्षों के बीच सबसे गंभीर सैन्य संघर्ष था। विदेश सचिव विक्रम मिस्री ने 21 अक्टूबर को यहां कहा था कि पिछले कई हफ्तों से चल रही बातचीत के बाद समझौते को अंतिम रूप दिया गया है और इससे 2020 में उठे मुद्दों का समाधान निकलेगा। 23 अक्टूबर को, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने रूस के कज़ान में ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के दौरान अपनी द्विपक्षीय बैठक के दौरान पूर्वी लद्दाख में एलएसी पर गश्त और वापसी पर समझौते का समर्थन किया।

वकीलों..

रूम में कुर्सियां भी फेंकी गईं। इस घटना में कुछ वकीलों को मामूली चोटें आईं हैं और बार एसोसिएशन ने इस घटना को लेकर बैठक बुलाई है। लाठीचार्ज से गुस्साए वकीलों ने जमकर हंगामा किया। उन्होंने कोर्ट परिसर में पुलिस चौकी में तोड़फोड़ की और कोर्ट के बाहर धरने पर बैठ गए। वकीलों ने जज के खिलाफ नारेबाजी की। इस बीच, जजों ने दुर्व्यवहार के विरोध में अपना काम बंद कर दिया है। घटना के बाद सभी जजों ने कोर्ट में काम करना बंद कर दिया और बार एसोसिएशन ने बैठक बुलाई। जुलाई 2023 में वकीलों के दो समूहों के बीच झड़प के बाद दिल्ली के तीस हजारी कोर्ट परिसर में अफरातफरी मच गई थी। कुछ वीडियो सामने आए, जिसमें कुछ वकीलों को देसी पिस्तौल जैसी दिखने वाली गोली चलाते हुए दिखाया गया, जिसमें कम से कम पांच से छह राउंड गोलियां चलाई गईं, जिससे लोग घबरा गए और छिपने के लिए भाग गए।

गाजियाबाद..

नरेन्द्र मोदी ने किया। इस मौके पर मुख्यमंत्री ने कहा कि ओडीओपी (एक जिला, एक उत्पाद) में मेरठ खेल में विश्व में पहचान बना रहा है। प्रदेश का खेल विश्वविद्यालय मेरठ में बन रहा है। खेल विश्वविद्यालय जब बनकर तैयार होगा तब ओलिंपियन पैदा करेंगे और नए खिलाड़ी तराशे जाएंगे। मुख्यमंत्री योगी कंकरखेड़ा के मार्शल पिच पर ईएसआईसी अस्पताल के शिलान्यास के मौके पर संबोधित कर रहे थे। योगी ने कहा कि मेरठ के श्रमिकों को लखनऊ और गोरखपुर के अस्पताल की तरह सुविधा प्राप्त होगी। वर्ष 2017 के बाद 75 जिलों में मेडिकल कॉलेज बन गया है या बना रहे हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि श्रमिकों के बच्चों के लिए प्रेत्यक आयुक्तालयों में आवासीय विद्यालय बनाया गया है। इसमें बच्चों के लिए नि : शुल्क अध्ययन, रहने एवं उनके सर्वांगीण विकास के लिए काम किया जा रहा है। आदित्यनाथ ने कहा कि वह स्वयं मेरठ की हवाई पट्टी पर उतरे हैं क्योंकि मेरठ में संभावना है। ज़ेवर में सबसे बड़ा अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा बनेगा और मेरठ को उसका लाभ मिलेगा। अयोध्या में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के बाद यह पहली दीवाली होगी। मुख्यमंत्री ने लोगों से आह्वान करते हुए कहा कि रामलला के आगमन पर अयोध्या के साथ आपके घरों में दीप जलना चाहिए।

केरल...

कारण अभी ज्ञात नहीं है। लेकिन प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि आतिशबाजी के दौरान पटाखों से निकली चिंगारी पास में रखे पटाखों के भंडार में गिरी जिससे विस्फोट हुआ और थेय्यम प्रस्तुति देख रहे लोगों में दहशत फैल गई। घटना केरल के उत्तरी जिले कासरगोड में नीलेश्वरम के निकट वीरारकावू मंदिर में हुई। आधिकारिक सूत्रों ने बताया कि मंगलवार रात करीब एक बजे वीरारकावू मंदिर में मुलंकुली चामुंडी थेय्यम उत्सव हो रहा था और बड़ी संख्या में श्रद्धालु मौजूद थे। नीलेश्वरम पुलिस ने आतिशबाजी से दुर्घटना के संबंध में विस्फोटक पदार्थ अधिनियम और भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की विभिन्न धाराओं के तहत मामला दर्ज किया है। पुलिस के एक वरिष्ठ अधिकारी ने पीटीआई-भाषा से कहा, इस घटना के संबंध में आठ लोगों पर मामला दर्ज किया गया है और ये सभी मंदिर समिति के सदस्य हैं। उन्होंने आशंका जताई कि सुरक्षा नियमों एवं दिशानिर्देशों का पालन किए बिना ही आतिशबाजी की गई थी। मंदिर में थेय्यम देखने के लिए महिलाओं और बच्चों समेत सैकड़ों लोग जमा हुए थे। थेय्यम केरल के मालाबार (उत्तरी केरल) क्षेत्र के मंदिरों और कावु (पवित्र उपवनों) में आयोजित किया जाने वाला सदियों पुराना अनुष्ठान है। मोबाइल फोन पर फुटेज, टेलीविजन चैनलों पर प्रसारित तस्वीरों में मंदिर परिसर में धमाके की आवाज सुनाई देती है और आग का गोला उठते हुए तथा वहां जमा असहाय भीड़ दहशत में इधर उधर भागते दिख रही है। प्रत्यक्षदर्शियों ने आशंका जताई कि घटना संभवतः मंदिर परिसर में एक शेड में पटाखों के भंडार में दुर्घटनावश आग लग जाने के कारण हुई। पुलिस के अनुसार घटना में 150 से अधिक लोग घायल हुए हैं जिनमें से करीब 108 लोगों का कासरगोड, कन्नूर और कोझिकोड जिलों में और पड़ोसी कर्नाटक जिले के मंगलुरु में विभिन्न अस्पतालों में उपचार हो रहा है। जिलाधिकारी ने मंगलवार को बताया कि दुर्घटना में गंभीर रूप से घायल हुए लोग 80 प्रतिशत तक झुलस गए हैं।

वीआईपी..

उसने कहा, 'वीआईपी मूवमेंट के कारण बदरपुर फ्लाईओवर पर दिल्ली की ओर जाने वाला ट्रैफिक पिछले 25 से 30 मिनट से रुका हुआ है। यह कैसी व्यवस्था है कि एंबुलेंस तक फंसी हुई हैं।' आईटीओ, बंगाली मार्केट, कनॉट प्लेस और मंडी हाउस जैसे सेंट्रल दिल्ली के इलाकों में, जहां लोग बड़ी संख्या में खरीदारी करने और त्योहार मनाने के लिए निकले थे, ऐसी ही स्थिति बनी रही। एक यात्री ने बताया, 'आईटीओ रेड लाइट पर महत्वपूर्ण समय बर्बाद हो रहा है। सायरन बजाती एंबुलेंस ट्रैफिक कर्मियों के कानों पर जूं तक नहीं रेंग रही है।' दिल्ली ट्रैफिक पुलिस के लिए जारी ट्रैफिक एडवाइजरी के अनुसार मेजर ध्यानचंद नेशनल स्टेडियम से शुरू हुई 'रन फॉर यूनिटी' में करीब 7,700 लोगों ने हिस्सा लिया।

सरकार हर युवा को अवसर दिलाने की व्यवस्था में लगी : मोदी

भाषा। नई दिल्ली

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मंगलवार को कहा कि उनकी सरकार अधिक से अधिक युवाओं को रोजगार मुहैया कराने के लिए प्रतिबद्ध है तथा अब ऐसी व्यवस्था बनाई जा रही है, जिससे हर युवा को अवसर मिले और वे अपनी आकांक्षाओं को पूरा कर सकें।यहां रोजगार मेले के तहत वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से आयोजित एक कार्यक्रम में हाल में चयनित 51,000 से अधिक अभ्यर्थियों को नियुक्ति पत्र वितरित करने के बाद प्रधानमंत्री ने उन्हें संबोधित किया। प्रधानमंत्री ने अपने संबोधन में रोजगार के नए अवसरों को सृजित करने के लिए नई प्रौद्योगिकियों और अंतरिक्ष तथा सेमीकंडक्टर जैसे आधुनिक क्षेत्रों को बढ़ावा देने के अपनी सरकार के प्रयासों के बारे में बात की। मोदी ने कहा कि पूर्ववर्ती सरकारों में नीति और नीयत का अभाव था जिसकी वजह से भारत आधुनिक प्रौद्योगिकियों समेत उभरते क्षेत्रों में दुनिया से पीछे होता जा रहा था। उन्होंने कहा कि तब पुरानी और अनुपयोगी हो चुकी तकनीकों को देश में लाया जाता था।उन्होंने कहा, एक मानसिकता मौजूद थी जो मानती थी कि आधुनिक प्रौद्योगिकियां हमारे देश में विकसित नहीं हो सकतीं। इस मानसिकता ने हमें बहुत नुकसान पहुंचाया। उन्होंने जोर देकर कहा कि अगर आधुनिक दुनिया में रोजगार पैदा करने वाले उद्योग देश में नहीं होते हैं तो रोजगार के नए अवसर पैदा करना मुश्किल होता है।मोदी ने कहा, हमने देश को पिछली सरकारों की पुरानी मानसिकता से मुक्त करने के लिए काम शुरू किया। उन्होंने कहा कि सरकार की नीतियों और फैसलों का असर सीधे तौर पर रोजगार पर पड़ता है।साल 2022 में प्रधानमंत्री ने रोजगार मेला योजना की शुरुआत की थी। इसके तहत अब तक 7.5 लाख लोगों को सरकारी नौकरियों के लिए नियुक्ति पत्र सौंपा जा चुका है।प्रधानमंत्री ने देश में एक्सप्रेसवे,

राजमार्ग, बंदरगाह, रेल नेटवर्क और हवाई अड्डों के निर्माण जैसे चौतरफा बुनियादी ढांचे के कार्यों का हवाला देते हुए कहा कि उनकी सरकार अधिक से अधिक लोगों को नौकरियां देने के लिए प्रतिबद्ध है।उन्होंने कहा कि पानी और गैस के लिए पाइपलाइन बिछाई जा रही है और स्कूल-विश्वविद्यालय खोले जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि विकास कार्य न केवल लोगों को सुविधाएं दे रहे हैं, बल्कि रोजगार के अवसर भी पैदा कर रहे हैं।धनतेरस के अवसर पर लोगों को शुभकामनाएं देते हुए उन्होंने कहा, यह दिवाली इसलिए खास होने जा रही है क्योंकि यह पहली बार होगा जब भगवान राम अयोध्या में अपने भव्य मंदिर में होंगे। इस पल का इंतजार करते हुए कई पीढ़ियां बीत गईं। रोजगार के अधिक अवसर सृजित करने के लिए अपनी सरकार के प्रयासों को रेखांकित करते हुए उन्होंने घरेलू विनिर्माण को प्रोत्साहित करने के लिए उत्पादन से जुड़े प्रोत्साहन (पीएलआई) योजना का उल्लेख किया।मोदी ने कहा, भारी निवेश हो रहा है, जिससे रिकॉर्ड अवसरों का सृजन हो रहा है। उन्होंने युवाओं के लिए प्रधानमंत्री इंटर्नशिप योजना का उल्लेख करते हुए कहा कि उनकी सरकार की निगरानी में 1.5 लाख से अधिक स्टार्टअप शुरू किए गए हैं, जिसका उद्देश्य अगले पांच वर्षों में एक करोड़ से अधिक युवाओं को इसमें शामिल करना है।प्रधानमंत्री ने कहा कि उनकी सरकार ने लाखों युवाओं को स्थाई सरकारी नौकरी की पेशकश की है और बड़ी संख्या में उन राज्यों में भी नियुक्ति पत्र दिए गए हैं जहां भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और उसके सहयोगी दलों की सरकारें हैं। उन्होंने कहा, इन दिनों हरियाणा में एक उत्सव का माहौल है, नौजवान प्रसन्न हैं।

इस बार की दीपावली ऐतिहासिक होगी, अयोध्या राम मंदिर में हजारों दीप जलाए जाएंगे: प्रधानमंत्री मोदी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मंगलवार को कहा कि इस साल की दीपावली ऐतिहासिक होगी क्योंकि 500 साल के इंतजार के बाद इस त्योहार पर अयोध्या में रामलला के जन्मस्थान पर बने मंदिर मे हजारो दीप जलाए जाएंगे।मोदी ने कहा ए ऐसी दीपावली होगी जब भगवान राम एक बार फिर अपने घर आए हैं और इस बार ए प्रतीक्षा 14 वर्षो के बाद नही, बल्कि 500 वर्षो बाद पूरी हो रही है।प्रधानमंत्री ने यह टिप्पणी स्वास्थ्य क्षेत्र की करीब 12,850 करोड़ रुपए की विभिन्न विकास परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास करने के बाद अपने संबोधन मे की।इससे पहले, एक अन्य कार्यक्रम मे प्रधानमंत्री ने कहा, इस साल की दीपावली बहुत खास है, बहुत विशेष है...500 वर्षो के बाद प्रभु श्री राम अयोध्या के अपने भव्य मंदिर में विराजमान हैं। और उस भव्य मंदिर मे विराजमान होने के बाद ए पहली दीपावली है। उन्होने कहा कि इस दीपावली की प्रतीक्षा मे कई पीढ़ियां गुजर गईं, लाखो लोगो ने बलिदान दिए और यातनाएं झेली।उन्होंने कहा, हम सभी बहुत सौभाग्यशाली हैं जो ऐसी विशेष, खास, भव्य दीपावली के साक्षी बनेंगे। इस साल जनवरी मे अयोध्या मंदिर मे रामलला की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा की गई थी। प्रधानमंत्री मोदी ने इस कार्यक्रम का नेतृत्व किया था।

मणिपुर सरकार ने कभी किसी समुदाय के खिलाफ काम नहीं किया: मुख्यमंत्री

इंफाल। मणिपुर के मुख्यमंत्री एन. बीरेन सिंह ने मंगलवार को कहा कि उनकी सरकार ने राज्य के किसी भी मूल निवासी समुदाय के खिलाफ कभी काम नही किया। उन्होने वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियों को अवैध आव्रजन व मादक पदार्थो से बचाने के लिए अपनी प्रतिबद्धता पर जोर दिया।सिंह ने थौबल जिला अस्पताल मे नौवें आयुर्वेद दिवस समारोह को संबोधित करते हुए अवैध प्रवासियो के मुद्दे को रेखांकित किया और दावा किया कि नकली आधार कार्ड वाले लोग पिछले 40 वर्षो से मूल आबादी पर हावी होने की साजिश कर रहे हैं।उन्होंने कहा, जब लोग समझेंगे कि मणिपुर संघर्ष क्यों छिड़ा, तो नया साहस और आत्मविश्वास पैदा होगा। पिछले 40 या 50 वर्षो से बहुत कम लोगो ने देखा है कि कैसे अवैध प्रवासी राज्य मे बस गए हैं और मूल आबादी पर हावी होने का प्रयास किया गया है। यह मुद्दा केवल पहाड़ियों तक ही सीमित नही बल्कि हर इलाके को प्रभावित करता है। उन्होंने कहा कि भूमि सौदों की निगरानी अब मंत्रिमंडल उपसमिति करती है। यह उपसमिति इस बात की जांच करती है कि खरीदार 1961 से पहले राज्य में रहते थे या नही।सिंह ने कहा, अगर ए कदम 50 साल पहले उठाया जाता तो हमें आज जैसी चुनौतियों का सामना नही करना पड़ता। सत्ता को बनाए रखने के उद्देश्य से तुष्टीकरण की पिछली प्रणाली आज की कठिनाइयो के लिए जिम्मेदार है। सिंह ने पिछले कुछ दशको मे कुछ समुदायो के विधायकों की संख्या मे वृद्धि पर भी बात की।मुख्यमंत्री ने कहा, जिस पार्टी के पास पहले सिर्फ पांच विधायक थे अब उसके पास 10 विधायक है। किसी ने यह नही पता लगाया कि यह वृद्धि कैसे हुई और ए लोग कैसे चुने गए। इन सवालो को उठाने के लिए मुझे आलोचनाओ का सामना करना पड़ा।

पुरी जगन्नाथ मंदिर अमेरिका में असामयिक रथ यात्रा का मुद्दा इस्कॉन के समक्ष उठाएगा

भुवनेश्वर। ओडिशा के कानून मंत्री पृथ्वीराज हरिचंदन ने कहा कि पुरी स्थित जगन्नाथ मंदिर प्रबंधन समिति, अंतरराष्ट्रीय कृष्ण भावनामृत संघ (इस्कॉन) के भारतीय प्राधिकारियों से अमेरिका मे असमय रथ यात्रा आयोजित करने की उसकी योजना के संबंध मे बात करेगी। उन्होने कहा कि कई सामाजिक-सांस्कृतिक संगठनो के प्रतिनिधियो ने उनसे मुलाकात की और इस्कॉन की ह्यूस्टन इकाई द्वारा नवंबर में भगवान जगन्नाथ की स्नान यात्रा तथा रथ यात्रा आयोजित करने की योजना पर चिंता व्यक्त की। यह योजना पुरी के मंदिर की सामान्य प्रथा से अलग है जहां कुछ समय पहले ही एक तय समय पर रथ यात्रा निकाली गई थी। कानून मंत्री ने सोमवार को कहा कि जगन्नाथ मंदिर के पुजारियो सहित कई लोगो की यह राय है कि दुनिया भर मे भगवान जगन्नाथ के सभी अनुष्ठान पुरी मे आयोजित धार्मिक प्रथाओ के अनुसार ही किए जाने चाहिए। पुरी जगन्नाथ मंदिर राज्य सरकार के विधि विभाग के अधिकार क्षेत्र मे आता है। हरिचंदन ने कहा, श्री जगन्नाथ मंदिर प्रशासन इस्कॉन के साथ बातचीत करेगा और मुझे उम्मीद है कि इसका सकारात्मक परिणाम निकलेगा। इस्कॉन की ह्यूस्टन इकाई की वेबसाइट के अनुसार, स्नान यात्रा और रथ यात्रा क्रमशः तीन तथा नौ नवंबर को आयोजित की जाएगी। पुरी की प्रथा के अनुसार, स्नान यात्रा ज्येष्ठ माह की पूर्णिमा को आयोजित की जाती है, जो आमतौर पर जून में होती है। इसी प्रकार, रथ यात्रा या रथ उत्सव आषाढ़ माह के शुक्ल पक्ष की द्वितीया को मनाया जाता है, जो जून या जुलाई मे होता है। इस्कॉन ह्यूस्टन इकाई की वेबसाइट पर कहा गया है, प्रसिद्ध रथ यात्रा परेड का यह पुनः मंचन, जिसे रथो के उत्सव के रूप में भी मनाया जाता है, प्राचीन भारत की भक्ति परंपरा मे निहित है। यह भारत के ओडिशा के पवित्र शहर पुरी मे तीन हजार से अधिक वर्षो से प्रतिवर्ष मनाया जाता रहा है।

अड्डा-247 ने यूजीसी नेट 2024 में हासिल की असाधारण सफलता, 4000 छात्रों ने परीक्षा क्लीयर की

ग्लोबल। गूगल वेस्टब्रिज इंफो ऐज और आशा इम्पेक्ट द्वारा समर्थित भारत के प्रमुख बहुभाषी एजुकेशनल प्लेटफ़ॉर्म अड्डा247 ने यूजीसी नेट 2024 परीक्षा में अपने छात्रों की असाधारण सफलता की घोषणा की। अड्डा247 के 4,000 से अधिक छात्रों ने यूजीसी नेट परीक्षा क्लीयर की है जिसमें 450 छात्रों का चयन जूनियर रिसर्च फ़ेलोशिप-जेआरएफके लिए हुआ है। यह उपलब्धि कंपनी को रु1 टेस्ट.प्रेप प्लेटफ़ॉर्म के रूप में स्थापित करती है। ये परिणाम अड्डा247 की ऑनलाइन पाठ्यक्रमों के माध्यम से उत्कृष्ट शिक्षा परिणाम प्रदान करने के समर्पण का प्रमाण हैए जिसके लिए ऑफलाइन कोचिंग की आवश्यकता नहीं है।अड्डा247 भारत में यूजीसी.नेट श्रेणी में सबसे बड़ा खिलाड़ी है और कंपनी ने अपने यूट्यूब चैनलों के माध्यम से 5 लाख से अधिक छात्रों को पढ़ाया हैए साथ ही अपने ऐप पर पेड कोर्सेज भी चलाए हैं। परिणाम पर टिप्पणी करते हुएए अड्डा247 के फाउंडर व सीईओए अनिल नागर ने कहा कि अड्डा247 में हम अपने छात्रों की यूजीसी नेट 2024 परीक्षा में मेहनत और उपलब्धियों पर गर्व महसूस करते हैं। हमारा उद्देश्य हमेशा से यह सुनिश्चित करना रहा है कि देश के हर कोने के छात्रों को सर्वश्रेष्ठ शैक्षिक संसाधन और सहयोग प्राप्त हो।

राकांपा सांसद मोहम्मद फैजल की सांसदी बहाल करने के मामले में एक पुनर्विचार याचिका खारिज

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) के नेता मोहम्मद फैजल की लोकसभा सदस्यता बहाल करने के मामले मे दायर एक पुनर्विचार याचिका खारिज कर दी है। शीर्ष अदालत ने फैजल की सदस्यता बहाली को चुनौती देने वाली वकील अशोक पांडेय की याचिका खारिज कर दी थी, जिसके बाद उन्होने इस फैसले पर फिर से विचार करने के लिए पुनर्विचार याचिका दायर की थी। हालांकि न्यायालय ने इसे खारिज कर दिया और कानून की प्रक्रिया के दुरुपयोग के लिए उनपर एक लाख रुपए का जुर्माना भी लगाया गया था। न्यायमूर्ति बी. आर. गवई, न्यायमूर्ति अरविंद कुमार और न्यायमूर्ति पी.के. मिश्रा की पीठ ने कहा कि पुनर्विचार याचिका पर विचार करने का कोई कारण नही है। पीठ ने 23 अक्टूबर को कहा, पुनर्विचार याचिका और संबंधित दस्तावेजो का सावधानीपूर्वक अध्ययन करने के बाद, हमे पुनर्विचार याचिका पर विचार करने का कोई उचित कारण नही मिला। तदनुसार, पुनर्विचार याचिका खारिज की जाती है। पांडेय ने दलील दी थी कि एक बार जब कोई सांसद आपराधिक मामले मे दोषी ठहराए जाने के कारण पद खो देता है, तो वह उच्च न्यायालय द्वारा बरी किए जाने तक अयोग्य बना रहेगा। शीर्ष अदालत ने कहा, भारत के संविधान के अनुच्छेद 32 के तहत दायर की गई वर्तमान याचिका और कुछ नही, बल्कि कानून की प्रक्रिया का दुरुपयोग है, क्योंकि याचिकाकर्ता के किसी भी मौलिक अधिकार का उल्लंघन नही किया गया है, ताकि वह भारत के संविधान के अनुच्छेद 32 के तहत असाधारण अधिकार क्षेत्र का आह्वान कर सके।

विद्याज्ञान स्कूल ने छात्रों के करियर का मार्गदर्शन देने के लिए करियर मेले का आयोजन किया

सीतापुर। सीतापुर के विद्याज्ञान स्कूल ने आज ऐसे करियर मेले का आयोजन किया जिसका मकसद छात्रों और उनके माता.पिता को कई करियर विकल्पों के बारे में सही जानकारी देना था। कार्यक्रम को इस तरह तैयार किया गया था कि छात्र और उनके माता.पिता दोनों ही अलग.अलग तरह के करियर तथा उसमें आने वाले पड़ाव को सही तरह से समझ सकेंए जिससे छात्रों की आकांक्षाओं पर वह क्या चाहते हैए उस पर खुलकर बातचीत हो सके।मेले की शुरुआत एक रोचक नुक्कड़ नाटक के साथ हुई। यह नाटक करियर जागरूकता पर आधारित था। साथ ही इसने आम करियर से जुड़े पक्षपात को भी चुनौती दी। उसके बाद एक सेशन हुआ जिसमें परिवारों को वित्तीय योजना से जुड़े व्यावहारिक सुझाव दिए गएए ताकि वे अपने बच्चों के भविष्य की शैक्षिक खर्चों का सही तरीके से प्रबंधन कर सकें। इस कार्यक्रम की खास बात विद्याज्ञान के पूर्व छात्रों की सक्रिय भागीदारी रहीए जो अपने अनुभव साझा करने और छात्रों व अभिभावकों से सीधा संवाद करने के लिए आए थे। उस बातचीत से कई करियर मार्गों के ठोस उदाहरण सामने आए जिससे वहां मौजूद लोगों को काफी प्रेरणा मिली।विद्याज्ञान स्कूल सीतापुर की प्रिंसिपल स्वाति शालिग्राम ने कार्यक्रम की अहमियत पर ज़ोर डालते हुए बताया कि श्करियर मेला हमारे छात्रों को कई करियर विकल्पों के बारे में जानने में सही मार्गदर्शन देने और इन अहम फैसलों में उनके माता.पिता की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए आयोजित किया गया है। करियर काउंसलिंग स्टॉल भी कार्यक्रम में मुख्य आकर्षण का केंद्र रहा। जहां तीन बूथों पर उभरते करियर विकल्पों की जरूरी जानकारी दी गई। जानकारी देने वाले हैंडआउट्स अंग्रेजी और हिंदी दोनों भाषाओं में उपलब्ध थे। ताकि यह सुविधा सभी के लिए सुलभ हो सके।

वेरांडा लर्निंग 600 करोड जुटाएगा

मुंबई। एंड.टू.एंड सॉल्युशन्स पेश करने वाली एक लिस्टेड एजुकेशन टेक्नोलोजी कंपनी वेरांडा लर्निंग सॉल्यूशंस लिमिटेड वित्त वर्ष 2025 में 600 करोड रूपए के राजस्व का लक्ष्य हासिल करने का उद्देश्य रख रही है। कंपनी की स्थापना 2018 में कल्पति एजीएस ग्रु द्वारा की गई थी जिसकी कंपनी में लगभग 55 प्रतिशत हिस्सेदारी है। अधिग्रहण के जरिए कंपनी का तेजी से विस्तार हुआ है। मई 2023 मेंए इसने 400 करोड़ रूपए मूल्य की सात कंपनियों का अधिग्रहण किया। 27 सितंबरए 2024 को छठी वार्षिक आम बैठक मेंए कंपनी ने अपनी वृद्धि और विस्तार योजनाओं को वित्तपोषित करने के लिए नोन.कन्वर्टिबल डिबेंचरए बांड या अन्य इंस्ट्रुमेन्ट्स जारी करने के माध्यम से 1,000 करोड रूपए तक की बढ़ी हुई उधार सीमा को मंजूरी दी। कंपनी ने रोमांचक विकास के अवसरों का लाभ उठाते हुए वित्त वर्ष 2025 की पहली तिमाही में में मजबूत परिचालन और वित्तीय प्रदर्शन जारी रखा है। वित्त वर्ष 2025 की पहली तिमाही के दौरानए कंपनी का परिचालन राजस्व 118,99 करोड रूपए दर्ज किया गया, जो पिछले वर्ष की समान अवधि के रु68.90 करोड से 72.69 प्रतिशत अधिक है। वित्त वर्ष 2025 की पहली तिमाही के दौरान कंपनी की एबिटा 5 गुना बढ़कर 27.61 करोड रूपए हो गईए जो पिछले साल की समान तिमाही में दर्ज रुए .64 करोड से काफी अधिक है। वेरांडा लर्निंग सॉल्यूशंस के कार्यकारी निदेशक और अध्यक्ष सुरेश कल्पति ने बताया किए श्कंपनी ने रोमांचक विकास के अवसरों का लाभ उठाते हुए वित्त वर्ष 2025 की पहली तिमाही में मजबूत परिचालन और वित्तीय प्रदर्शन जारी रखा है। परंपरागत रूप से ऑफसीजन अवधि होने के बावजूद पहली तिमाही में शानदार वृद्धि हुई। यह पर्याप्त वृद्धि कंपनी की बढ़ी हुई परिचालन दक्षता और उसकी रणनीतियों के प्रभावी कार्यान्वयन को उजागर करती है।

मिजोरम सरकार सरकारी कर्मचारियों की सेवाओं की समीक्षा करेगी

आइजोल। मिजोरम के मुख्यमंत्री लालदुहोमा ने मंगलवार को कहा कि राज्य सरकार के कर्मचारियों की सेवाओं की अधिकारी समीक्षा करेंगे ताकि उन लोगों का पता लगाया जा सके जो सेवा जारी रखने के लिहाज से फिट नही है। लालदुहोमा ने यहां एक आर्थिक सम्मेलन में कहा कि सभी विभागों को सेवा समीक्षा समिति की ओर से निर्देश दिए गए है। उन्होने कहा, समितियां उन कर्मचारियों की पहचान करेंगी जो अपनी सेवा जारी रखने के लिए फिट नहीं है या राज्य सरकार के तहत नियोजित होने के लिए उपयुक्त नही है। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार यदि जरूरत पड़ी तो ऐसे कर्मचारियों को बर्खास्त करेगी। लालदुहोमा ने कहा कि मिजोरम सरकार ने राज्य में सभी विकास परियोजनाओं की सख्ती से निगरानी करने का भी फैसला किया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि अब से सभी विभाग राज्य के योजना विभाग के माध्यम से केंद्र को परियोजना प्रस्ताव सौंपेंगे।

टाटा प्ले बिंज दिवाली का मनोरंजन का साथी

मुंबई। देश में दिवाली की जगमगाती रोशनी आतिशबाजी और मिठाई के बीच बॉलिवुड के दो सबसे बड़े सितारों, शाहरुख खान और ऐश्वर्या राय बच्चन के जन्मदिन आ रहे हैं, जो त्योहारों की खुशी को और ज्यादा बढ़ा देंगे। रोमांस के बादशाह, शाहरुख खान और सौंदर्य की प्रतिमाए ऐश्वर्या राय ने सिनेमा स्क्रीन पर अपनी प्रतिभा का जलवा बिखेरा है और दर्शकों के दिलों पे राज किया है। यादगार रोमांटिक फिल्मों से लेकर पुरस्कार विजेता प्रदर्शनों तक उन्होंने भारतीय सिनेमा में एक अलग पहचान बनाई और विश्व में एक विरासत स्थापित की। त्योहारों की खुशी के बीच टाटा प्ले बिंज इन दो महान कलाहारों का जन्मदिन क्रमशः 1 और 2 नवंबर को मना रहा है, जहाँ इन दिग्गजों की बेहतरीन फ़िल्में एक ही टाटा प्ले बिंज प्लेटफ़ॉर्म में देखी जा सकेंगी। ऐ दिल है मुश्किल . अमेज़न प्राईम वीडियो, जोश ,सोनीलिवएदेवदास. एप्पल टीवीए मोहब्बतें . अमेज़न प्राईम वीडियो ये सारे ओटीटी ऐप देखने के लिए टाटा प्ले बिंज की सदस्यता लें और एक ही सदस्यता में 30 से ज्यादा राष्ट्रीयए अंतर्राष्ट्रीयए क्षेत्रीय ओटीटी ऐप्स एवं गेम्स का आनंद लें।

पारिख फ्लेक्सी कैप बना सबसे बड़ा एक्टिवली इक्विटी फंड

मुंबई। अग्रणी म्यूचुअल फंड कंपनी पी पी एफ ए एस म्यूचुअल फंड द्वारा संचालित पराग पारिख फ्लेक्सी कैप फंड इंडिया का सबसे बड़ा एक्टिवली मैनेज्ड इक्विटी फंड बन चुका है। कंपनी के सितंबर फैक्टशीट के अनुसार इस स्कीम की टोटल एसेट अंडर मैनेजमेंट 82441 करोड़ है। इस स्कीम ने पिछले 10 वर्षो में 18.72 पर सेंट और पांच वर्षो में 26.30 पर सेंट का रिटर्न दिया है। पी पी एफए एस के फंड मैनेजर राज मेहता ने बताया हम पराग पारिख फ्लेक्सी कैप की परफॉर्मेंस से बहुत खुश है और साथ ही साथ हमारी लेटेस्ट स्कीम पराग पारिख डायनेमिक एसेट एलोकेशन को लेकर काफी उत्साहित है। कम्पनी इस स्कीम को मार्केट के उतार चढ़ाव के साथ डायनामिकली मैनेज करती है। जो निवेशक अपने पोर्टफोलियो में लंबी अवधि के लिए डेब्ट एलोकेशन चाहते है अथवा रिटायरमेंट के नजदीक है और एस डब्ल्यू पी करना चाहते है उनके लिए यह स्कीम बहुत ही उत्तम विकल्प है। टैक्सेशन के हिसाब से भी लॉन्ग टर्म में सिर्फ 12ण्5ः का कर लगेगा। पराग पारिख फ्लेक्सी कैप स्कीम के अलावा कंपनी और पांच स्कीम का संचालन करती है जिसमे पराग पारिख टैक्स सेवर फंडए पराग पारिख कंजर्वेटिव हाइब्रिड फंडए पराग पारिख डायनेमिक एसेट एलोकेशन फंडए पराग पारिख आर्बिट्रेज फंड और पराग पारिख लिक्विड फंड सम्मिलित हैं।

राष्ट्रपति भवन के अमृत उद्यान में कोणार्क चक्र की बलुआ पत्थर निर्मित प्रतिकृति स्थापित

नई दिल्ली। राष्ट्रपति भवन के सांस्कृतिक केंद्र और अमृत उद्यान में कोणार्क चक्र की बलुआ पत्थर निर्मित चार प्रतिकृति स्थापित की गई हैं। आधिकारिक बयान में मंगलवार को यह जानकारी दी गई। बयान में कहा गया कि कोणार्क चक्र की प्रतिकृतियों की स्थापना का उद्देश्य देश की समृद्ध विरासत को बढ़ावा देना और आगंतुकों को इससे परिचित कराना है। राष्ट्रपति कार्यालय की ओर से जारी बयान में कहा गया कि यह पहल राष्ट्रपति भवन में पारंपरिक सांस्कृतिक और ऐतिहासिक चीजों को प्रदर्शित करने के लिए उठाए जा रहे कई कदमों का हिस्सा है।

वक्फ भूमि विवाद: सिद्धरमैया ने कहा, किसी भी किसान को बेदखल नहीं किया जाएगा

भाषा। बेंगलुरु

कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धरमैया ने मंगलवार को कहा कि विजयपुरा जिले में किसी भी किसान को उसकी जमीन से बेदखल नहीं किया जाएगा तथा उन्हें जारी किए गए नोटिस वापस ले लिए जाएंगे। विजयपुरा जिले के किसानों के एक वर्ग ने आरोप लगाया है कि उनकी जमीन को वक्फ संपत्ति के रूप में चिह्नित किया गया है। सिद्धरमैया ने कहा, किसी भी किसान को उसकी जमीन से बेदखल नहीं किया जाएगा। कल राजस्व मंत्री (कृष्णा बायरे गौड़ा), एम बी पाटिल

(उद्योग मंत्री और विजयपुरा जिले के प्रभारी मंत्री) और वक्फ मंत्री जमीर अहमद खान ने संयुक्त रूप से कहा है कि विजयपुरा के किसी भी किसान को उसकी जमीन से बेदखल नहीं किया जाएगा। उन्होंने यहां पत्रकारों से बात करते हुए कहा कि यदि किसानों को नोटिस जारी किए गए हैं तो उन्हें वापस ले लिया जाएगा। यादगीर और धारवाड़ जिलों में भी किसानों को इसी तरह के नोटिस जारी किए जाने के सवाल पर मुख्यमंत्री ने कहा, मैं राजस्व मंत्री से इस पर गौर करने को कहूंगा, कहीं भी किसानों को बेदखल नहीं किया जाएगा। टिकोटा तालुक के होनावडा में 1,200 एकड़ जमीन को वक्फ संपत्ति के रूप में चिह्नित किए जाने को लेकर भ्रम को स्पष्ट करने की कोशिश करते हुए, उद्योग मंत्री एमबी पाटिल ने हाल में कहा था कि यह एक त्रुटि के कारण था। उन्होंने यह भी कहा था कि 1,200 एकड़ में से सिर्फ 11 एकड़ ही वक्फ संपत्ति है और मुद्दों को सुलझाने के लिए उपायुक्त की अध्यक्षता में एक कार्य बल का गठन किया जाएगा। वक्फ बोर्ड ने 2019 से 2022 के बीच विजयपुरा जिले में किसानों को नोटिस भेजे थे, जब भाजपा सत्ता में थी। पाटिल ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर भाजपा शासन के दौरान जारी किए गए नोटिसों की प्रतियां पोस्ट की तथा विपक्षी दल की आलोचना करते हुए कहा कि वह अपने कार्यकाल के दौरान राज्य के विकास पर ध्यान देने के बजाय विभाजनकारी राजनीति में लिप्त रही।

एनजीटी ने जिलाधिकारी को 60 दिन में कार्रवाई करने का निर्देश दिया

प्रयागराज में अवैध भूजल दोहन

भाषा। नई दिल्ली

राष्ट्रीय हरित अधिकरण (एनजीटी) ने उस याचिका पर सुनवाई के दौरान प्रयागराज के जिलाधिकारी को 60 दिन के भीतर कार्रवाई करने का निर्देश दिया, जिसमें दावा किया गया है कि जिले में भूजल के अवैध दोहन पर लगाम लगाने के लिए कुछ नहीं किया गया है। एनजीटी अध्यक्ष न्यायमूर्ति प्रकाश श्रीवास्तव, न्यायिक सदस्य न्यामूर्ति अरुण कुमार त्यागी और विशेषज्ञ सदस्य ए सेंथिल वेल की पीठ ने 17 अक्टूबर को पारित आदेश में कहा कि चूंकि, उसने 13 अगस्त, 2024 के आदेश में समयसीमा निर्धारित नहीं की थी, इसलिए याचिकाकर्ता की शिकायत को संबोधित नहीं किया गया। पीठ ने कहा, इसलिए, हम जिलाधिकारी को इस आदेश की प्रति प्राप्त होने की तारीख से 60 दिन के भीतर आवश्यक कार्रवाई करने का निर्देश देते हुए निष्पादन याचिका का निपटारा करते हैं। याचिका में दावा किया गया था कि प्रयागराज में जिला भूजल प्रबंधन परिषद से अनापत्ति प्रमाण पत्र (एनओसी) प्राप्त किए बिना और उत्तर प्रदेश भूजल (प्रबंधन एवं विनियमन) अधिनियम का उल्लंघन करते हुए भूजल का दोहन किया जा रहा है। एनजीटी ने अपने पिछले आदेश में जिलाधिकारी को इस मुद्दे पर विचार करने, सही तथ्यात्मक स्थिति का पता लगाने और जल्द उचित कार्वाई करने का निर्देश दिया था।

पाटिल ने कथित सिंचाई घोटाले में खुली जांच का आदेश देकर मेरी पीठ में छुरा घोंपा था: अजित पवार

भाषा। पुणे

महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री अजित पवार ने मंगलवार को आरोप लगाया कि उनके करीबी सहयोगी और तत्कालीन गृहमंत्री आरआर पाटिल ने कई करोड़ रुपए के कथित सिंचाई घोटाले में उनके खिलाफ खुली जांच का आदेश देकर पीठ में छुरा घोंपा था। पवार ने दावा किया कि जांच का आदेश देने वाली पाटिल की टिप्पणी का उल्लेख करने वाली एक फाइल उन्हें 2014 में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) नेता देवेंद्र फडणवीस ने मुख्यमंत्री बनने के बाद दिखाई थी। उन्होंने ए दावे राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) उम्मीदवार संजय काका पाटिल के समर्थन में एक रैली को संबोधित करते हुए किए। काका पाटिल सांगली जिले की तासगांव सीट से दिवंगत नेता आरआर पाटिल के बेटे रोहित के खिलाफ मैदान में हैं। पवार ने दावा किया, सिंचाई घोटाले में मेरे खिलाफ आरोप लगाए गए। मुझे बदनाम करने की कोशिश की गई। सिंचाई परियोजना में 70,000 करोड़ रुपए के घोटाले का आरोप लगाने का फैसला किया गया। परियोजना में वेतन का कुल खर्च 42,000 करोड़ रुपए था, जबकि 70,000 करोड़ रुपए की अनियमितता का आरोप लगाया गया। राकांपा प्रमुख ने कहा कि परियोजना के लिए वास्तविक व्यय 43,000 करोड़ रुपए था, लेकिन 70,000 करोड़ रुपए का घोटाला दिखाने के लिए मामला बनाया गया। अजित पवार 1999-2009 के दौरान राज्य के जल संसाधन विकास मंत्री थे, जब महाराष्ट्र में कांग्रेस-राकांपा गठबंधन की सरकार थी। उन्होंने विदर्भ सिंचाई विकास निगम के अध्यक्ष के रूप में भी काम किया था, जिसने सिंचाई परियोजनाओं को मंजूरी दी थी, जिनमें कथित अनियमितताएं थीं। उन्होंने दावा किया, एक फाइल तैयार की गई और (आर आर पाटिल की अध्यक्षता वाले) गृह विभाग को भेज दी गई। उन्होंने मेरे खिलाफ खुली जांच को मंजूरी दी और फाइल नोट में इसका उल्लेख किया। यह पूरी तरह से पीठ में छुरा घोंपने का मामला था। मैं बहुत परेशान हो गया, क्योंकि वह (आरआर पाटिल) मेरे करीबी सहयोगी थे। उन्होंने कहा कि इसके बाद राकांपा (अविभाजित) ने पृथ्वीराज चव्हाण के नेतृत्व वाली सरकार से समर्थन वापस ले लिया और राष्ट्रपति शासन लगा दिया गया। उन्होंने दावा किया, तत्कालीन राज्यपाल ने फाइल (खुली जांच के लिए) पर हस्ताक्षर करने से इनकार कर दिया और कहा कि नए मुख्यमंत्री को इस पर हस्ताक्षर करने दें।

अजित पवार ने घोषित की 45.37 करोड़ रुपए की चल-अचल संपत्ति, दो कारों के हैं मालिक

पुणे। बारामती से विधानसभा चुनाव लड़ रहे महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री अजित पवार के पास 8.22 करोड़ रुपए से अधिक की चल संपत्ति है, जबकि उनकी अचल संपत्ति का मूल्य 37.15 करोड़ रुपए है। उन्होंने यह जानकारी निर्वाचन आयोग को सौंपे गए हलफनामे में दी है।पवार द्वारा पुणे जिले की सीट से दाखिल किए गए नामांकन पत्र के साथ प्रस्तुत हलफनामे के अनुसार, राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) के प्रमुख के पास चल संपत्ति के रूप मे दो कार-टोयोटा कैमरी, होंडा सीआरवी, एक ट्रैक्टर, चांदी की वस्तुएं, सावधि जमा, शेयर, बॉण्ड तथा अन्य वस्तुएं शामिल है। अपने गृह क्षेत्र से आठवी बार चुनाव लड़ रहे अजित पवार (65) ने सोमवार को राकांपा उम्मीदवार के रूप मे अपना नामांकन पत्र दाखिल किया। हलफनामे के अनुसार, उनकी पत्नी एवं राज्यसभा सदस्य सुनेत्रा पवार के पास 14.57 करोड़ रुपए की चल संपत्ति है, जबकि उनके नाम पर 58.39 करोड़ रुपए मूल्य की अचल संपत्ति है। चुनाव मे अजित पवार के मुख्य प्रतिद्वंद्वी उनके भतीजे युगेंद्र पवार है जिन्हे राकांपा (शरदचंद्र पवार) ने अपना उम्मीदवार बनाया है और वह पारिवारिक सीट से चुनावी राजनीति की शुरुआत कर रहे है। युगेंद्र ने भी सोमवार को अपना नामांकन पत्र दाखिल किया। उन्होने 39.79 करोड़ रुपए की चल संपत्ति घोषित की है। नामांकन पत्र के साथ दाखिल किए गए हलफनामे के अनुसार, युगेंद्र के पास 10.79 करोड़ रुपए की अचल संपत्ति है। दस्तावेज के अनुसार, उनकी अचल संपत्ति मे मुंबई मे 2,000 वर्ग फुट से अधिक का एक फ्लैट और पुणे जिले के मुलशी और बारामती मे भूखंड शामिल है। महाराष्ट्र की 288 सदस्यीय विधानसभा के लिए मतदान 20 नवंबर को होगा और मतो की गिनती 23 नवंबर को होगी।

रेलवे व्यवस्था टूट रही है, यात्रियों की कोई सुनने वाला नहीं: राहुल

भाषा। नई दिल्ली

लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने दीपावली के समय रेल यात्रा में बहुत सारे लोगों को पेश आ रही दिक्कतों का हवाला देते हुए मंगलवार को दावा किया कि रेलवे व्यवस्था टूट रही है और यात्रियों की ज़रूरतों को पूरा करने में असमर्थ है।उन्होंने यह भी कहा कि इस समय कोई लोगों की सुनने वाला नहीं है। राहुल गांधी ने एक वीडियो साझा करते हुए एक्स पर पोस्ट किया, इस दिवाली पर करोड़ों भारतीय अपने परिवार से मिलने रेल से यात्रा करेंगे। दैनिक यात्री हो या पर्यटक, शहरी हो या ग्रामीण, श्रमिक हो या उद्योगपति - रेलवे हर भारतीय की ज़िंदगी का एक बड़ा हिस्सा या आधार है। अगर हमारी ट्रेनें रुक जाएं, तो भारत थम जाएगा। उन्होंने

कहा कि भारत को ऐसी बेहतरीन रेल सुविधा चाहिए जो सभी लोगों के लिए हो। राहुल गांधी ने आरोप लगाया, आज बालासोर से बांद्रा तक, हमारी रेलवे व्यवस्था टूट रही है और यात्रियों की ज़रूरतों को पूरा करने में असमर्थ है। इस समय, जब लोगों की बात सुनी जानी चाहिए तब कोई सुनने वाला नहीं है। उन्होंने कहा, एक बेहतर भारत बनाने के लिए मैं आप सभी से आग्रह करता हूं कि आप अपनी आवाज उठाएं। यदि आपको रेल व्यवस्था में कोई कमी दिखती है, या आपके पास सुधार के लिए कोई सुझाव है, तो कृपया अपने अनुभव हमारे साथ साझा करें। आइए हम सब मिलकर अपने सपनों का भारत बनाएं।

नवाब मलिक ने राकांपा उम्मीदवार के तौर पर नामांकन दाखिल किया

मुंबई। महाराष्ट्र के पूर्व मंत्री नवाब मलिक ने मंगलवार को मुंबई के मानखुर्द-शिवाजी नगर विधानसभा क्षेत्र से राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) उम्मीदवार के रूप में नामांकन दाखिल किया। भाजपा की मुंबई इकाई के अध्यक्ष आशीष शेलार ने मलिक की उम्मीदवारी के खिलाफ बयान दिया था, जिसके कुछ दिनों बाद मलिक ने नामांकन दाखिल कर दिया।महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के लिए 20 नवंबर को मतदान होना है। शेलार ने कहा था, हम अंडरवर्ल्ड डॉन दाऊद इब्राहिम से जुड़े किसी भी व्यक्ति को टिकट देना स्वीकार नहीं करेंगे। उन्होंने कहा था, हम नवाब मलिक का समर्थन नहीं करेंगे और हमारा रुख अलग होगा।मलिक ने नामांकन दाखिल करने के बाद कहा, मैंने तय किया था कि अगर मुझे अपनी पार्टी से नामांकन पत्र नहीं मिला तो मैं निर्दलीय के तौर पर चुनाव लड़ूंगा। मैंने राकांपा उम्मीदवार के तौर पर अपराह्न दो बजकर 55 मिनट पर (नामांकन पत्र) दाखिल किया। विधानसभा चुनाव के लिए नामांकन दाखिल करने का आखिरी दिन मंगलवार था।अभी तक यह स्पष्ट नहीं है कि मलिक की उम्मीदवारी को लेकर भाजपा के रुख पर पुनर्विचार हुआ है या नहीं।भाजपा, अजित पवार के नेतृत्व वाली राकांपा के साथ गठबंधन में राज्य में सत्ता साझा करती है।उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने कहा कि उन्हें मलिक के राकांपा उम्मीदवार के रूप में नामांकन दाखिल करने की आधिकारिक सूचना की जानकारी नहीं हैउन्होंने कहा, जब मुझे आधिकारिक सूचना मिलेगी तब मैं इस पर प्रतिक्रिया दूंगा। णुशक्ति नगर से मौजूदा विधायक मलिक ने यह सीट अपनी बेटी सना के लिए छोड़ दी।सना राकांपा उम्मीदवार के रूप में राजनीति में कदम रख रही हैं।नवाब मलिक, महाविकास आघाडी सरकार में मंत्री थे लेकिन 2022 में राष्ट्रीय अन्वेषण अभिकरण (एनआईए) द्वारा दाऊद और उसके साथियों छोटा शकील व टाइगर मेमन के खिलाफ दर्ज मुकदमे में उन्हें गिरफ्तार किया गया था।

उत्तरी गाजा में इजराइली हमले में 60 की मौत

भाषा। दीर अल-बला (गाजा पट्टी)

उत्तरी गाजा पट्टी में विस्थापित फलस्तीनियों के आश्रय वाली पांच मंजिला एक इमारत पर मंगलवार सुबह इजराइली हमले में कम से कम 60 लोगों की मौत हो गई। मरने वालों में आधे से अधिक महिलाएं और बच्चे हैं। यह जानकारी गाजा के स्वास्थ्य मंत्रालय ने दी। एक अलग घटनाक्रम में, लेबनान के आतंकवादी समूह हिजबुल्ला ने कहा कि उसने पिछले महीने इजराइली हवाई हमले में हसन नसरल्ला के मारे जाने के बाद शेख नईम कासिम को अपना नया शीर्ष नेता चुना है। हिजबुल्ला ने जीत हासिल होने तक नसरल्ला की नीतियों को जारी रखने का संकल्प लिया।इजराइल को सहायता समूहों से भी कड़ी आलोचना का सामना करना पड़ा, क्योंकि उसकी संसद ने एक ऐसा विधेयक पारित किया है, जो फलस्तीनी शरणार्थियों के लिए संयुक्त राष्ट्र एजेंसी की फलस्तीनी क्षेत्रों में काम करने की क्षमता को व्यापक रूप से रोक सकता है। संयुक्त राष्ट्र राहत एवं कार्य एजेंसी (यूएनआरडब्ल्यूए) के नाम से जानी जाने वाली यह एजेंसी गाजा में सबसे बड़ी सहायता प्रदाता है। संयुक्त राष्ट्र बाल एजेंसी के एक प्रवक्ता ने कहा कि इस फैसले का मतलब है कि बच्चों को मारने का एक नया तरीका खोज लिया गया है। हिजबुल्ला के नए नेता ने इजराइल से लड़ते रहने की कसम खाई है। हिजबुल्ला ने एक बयान में कहा कि उसकी निर्णय लेने वाली शूरा परिषद ने तीन दशकों से उपनेता कासिम को नया महासचिव चुना है। कासिम (71) लेबनान पर इजराइल के 1982 के आक्रमण के बाद स्थापित समूह का संस्थापक सदस्य है। नसरल्ला के मारे जाने के बाद से कासिम संगठन के कार्यवाहक के रूप में काम कर रहा था। उसने टेलीविज़न पर कई भाषण दिए हैं,

जिसमें उसने संकल्प जताया कि झटकों के बावजूद हिजबुल्ला लड़ता रहेगा। सात अक्टूबर, 2023 को गाजा से हमास के इजराइल में अचानक हमले के बाद हिजबुल्ला ने इजराइल पर रॉकेट दागना शुरू कर दिया। हमास के इजराइल पर हमले के बाद से ही युद्ध शुरू हो गया था। दोनों समूहों का समर्थन करने वाले ईरान ने भी दो मौकों पर इजराइल पर गोलीबारी की है। हिजबुल्ला के साथ तनाव सितंबर महीने में बढ़ गया था, जब इजराइल ने भारी हवाई हमले करके नसरल्ला और उसके कई बड़े कमांडरों को मार डाला था। इजराइल ने अक्टूबर की शुरुआत में लेबनान में जमीनी आक्रमण शुरू किया था। अधिकारियों ने बताया कि हिजबुल्ला ने मंगलवार को उत्तरी इजराइल में दर्जनों रॉकेट दागे, जिससे उत्तरी शहर मालोट-तरशीहा में कम से कम एक व्यक्ति की मौत हो गई। उत्तरी गाजा में हमला ऐसे समय हुआ है जब इजराइल वहां एक बड़ा अभियान चला रहा है। हालांकि हाल के सप्ताहों में ध्यान लेबनान और ईरान पर केंद्रित हो गया है, फिर भी इजराइल ने उत्तरी गाजा में एक बड़ा अभियान संचालित करना और पूरे क्षेत्र में हवाई हमले करना जारी रखा है।

सेटेलाइट तस्वीरों से इजराइली हमले में ईरान के महत्वपूर्ण सैन्य अड्डे को नुकसान पहुंचने का पता चला

दुबई। सेटेलाइट तस्वीरों से मंगलवार को पता चला कि इजराइल के हमले में ईरान के रिवोल्यूशनरी गार्ड के महत्वपूर्ण सैन्य अड्डे को क्षति पहुंचने की संभावना जताई गई है, जिसमें बैलिस्टिक मिसाइल का निर्माण किया जाता है और उसके अंतरिक्ष कार्यक्रम के तहत रॉकेट प्रक्षेपण के लिए भी इस स्थान का उपयोग किया जाता है। शाहरूद में सैन्य अड्डे पर हुए नुकसान ने इजराइल द्वारा शनिवार तड़के ईरान पर किए हमले को लेकर नए सवाल खड़े कर दिए हैं, खासकर इसलिए क्योंकि यह हमला ऐसे क्षेत्र में हुआ, जिसे लेकर तेहरान ने पहले कोई बात नहीं कही है। ईरान ने केवल इलम, खुजेस्तान और तेहरान प्रांतों में होने वाले इजराइली हमलों की पहचान की है। उसने ग्रामीण सेमनान प्रांत में हमले के बारे में कुछ नहीं कहा है, जहां सैन्य अड्डा स्थित है।

हिजबुल्ला ने नईम कासिम को अपना नया नेता चुना

बेरूत। लेबनान के हिजबुल्ला चरमपंथी समूह ने नईम कासिम को अपना नया नेता चुना है, जो पिछले महीने एक इजराइली हवाई हमले में मारे गए हसन नसरल्लाह की जगह लेगा। हिजबुल्ला ने यह जानकारी दी। कासिम लंबे समय से नसरल्लाह का सहायक था और उसकी मौत के बाद से वह इस चरमपंथी समूह के कार्यवाहक नेता के रूप में काम कर रहा है। समूह ने एक बयान में बताया कि हिजबुल्ला की निर्णय लेने वाली शूरा परिषद ने तीन दशक से अधिक समय तक नसरल्लाह के उपनेता रहे कासिम को नया महासचिव चुना है।

ईरानी मूल के जर्मन कैदी को आतंकवादी मामले में फांसी

दुबई। ईरानी सुरक्षा बलों द्वारा दुबई में 2020 में अगवा किए गए ईरानी मूल के जर्मन कैदी जमशीद शर्महद को आतंकवाद के आरोप में दोषी ठहराए जाने के बाद ईरान में फांसी दे दी गई। देश की न्यायपालिका ने सोमवार को यह जानकारी दी। 69 वर्षीय शर्महद हाल के वर्षों में विदेश में रह रहे कई ईरानी असंतुष्टों में से एक थे, जिन्हें या तो धोखे से या अपहरण करके ईरान वापस लाया गया था, क्योंकि तेहरान ने विश्व शक्तियों के साथ 2015 के परमाणु समझौते के टूटने के बाद असंतुष्टों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करना शुरू कर दिया था। शर्महद की फांसी पश्चिम एशिया में जारी युद्ध के बीच इजराइल द्वारा ईरान के खिलाफ जवाबी हमला शुरू करने के दो दिन बाद हुई है। हालांकि न्यायपालिका ने सीधे तौर पर हमले से उसकी फांसी को नहीं जोड़ा, लेकिन उस पर आरोप लगाया कि वह ईरान में हमलों की कथित साजिश रचते समय पश्चिमी खुफिया एजेंसियों, अमेरिका और बाल-हत्या करने वाली जायोनिस्ट हुकूमत के आकाओं के आदेश पर काम कर रहा था। शर्महद कैलिफोर्निया में रहता था। न्यायालय की मिजान समाचार एजेंसी ने बताया कि उसे सोमवार सुबह फांसी दी गई।

चीन में जनसांख्यिकी संकट : सरकार ने अधिक प्रजनन को प्रोत्साहित करने के लिए कदमों की घोषणा की

बीजिंग। चीन ने बच्चे पैदा होने पर सब्सिडी देने और अभिभावकों की कर देनदारी में कटौती सहित कई नीतियों की घोषणा की है ताकि दंपतियों को अधिक बच्चे पैदा करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके और जनसांख्यिकी संकट से निपटा जा सके। स्टेट काउंसिल या चीन की मंत्रिमंडल द्वारा सोमवार को जारी निर्देश में प्रसव सहायता सेवाओं को बढ़ाने, बाल देखभाल प्रणालियों का विस्तार करने, शिक्षा, आवास और रोजगार में सहायता को मजबूत करने तथा प्रसव के अनुकूल सामाजिक माहौल बनाने के लिए 13 लक्षित उपायों की रूपरेखा तैयार की गई है।जन्म दर में गिरावट के कारण पिछले वर्ष चीन विश्व का सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश के मामले में भारत से पिछड़ गया। सरकारी मीडिया की रिपोर्ट के मुताबिक नवीनतम पहल में प्रसव पर सब्सिडी देने की व्यवस्था में सुधार और प्रसव से संबंधित व्यक्तिगत आयकर राहत भी शामिल है।प्रमुख प्रावधानों में मातृत्व बीमा योजना का लाभ लचीले रोजगार वाले व्यक्तियों और ग्रामीण प्रवासी श्रमिकों को भी प्रदान करना शामिल है, जो पहले से ही बुनियादी चिकित्सा बीमा योजना का हिस्सा है।सरकारी सीजीटीएन की खबर के मुताबिक उपयुक्त प्रसव पीड़ा निवारण और सहायक प्रजनन तकनीकसेवाओ को बीमा प्रतिपूर्ति के लिए पात्र चिकित्सा सेवाओं की सूची में जोड़ा जाएगा।

दुनियाभर में ये काली काली आँखें की होगी शुरुआत

ग्लोबाल। प्यार और जुनून की ट्विस्टेट कहानी ष्ये काली काली आँखेंष् अपने सीज़न 2 के साथ वापसी कर रही है। एजस्टॉर्म वेंचर्स प्राईवेट लिमिटेड द्वारा निर्मित और निर्देशक लेखक एवं शोरनर सिद्धार्थ सेन द्वारा निर्देशित इस सीरीज़ में ताहिर राज भसीन श्वेता त्रिपाठी आँचल सिंह सौरभ शुक्लाए वरुण बडोला, गुरमीत चौधरी, ब्रजेंद्र काला, अरुणोदय सिंह, सूर्य शर्मा,अनंत जोशी, सुनीता रजवार,शशि वर्मा, अंजुमन सक्सेनाए और हेतल गडा मुख्य भूमिकाओं में हैं। नए सीज़न के बारे में इस सीरीज़ के क्रिएटर और डायरेक्टरए सिद्धार्थ सेनगुप्ता ने बतायाकि सीज़न 1 में विक्रांत पूर्वा और शिखा के बीच प्रेम का त्रिकोण सीज़न 2 में असाधारण चतुर्भुज में बदलने वाला है। पहले सीज़न में प्यार के जुनूनए संगीत और मसालेदार कहानी को बहुत अच्छी प्रतिक्रिया मिली। इस बार हम हर किरदार में और ज्यादा गहराई से उतर रहे हैंए जिससे अप्रत्याशित ट्विस्ट एवं टर्न उत्पन्न होंगे। ये नए किरदार इस सीज़न के उत्साह को और ज्यादा बढ़ा देंगे। अब मैं इसके लिए दर्शकों की प्रतिक्रिया देखने को उत्सुक हूँ। नेटफ्लिक्स हमेशा से बेहतरीन क्रिएटिव पार्टनर रहा हैए और सीज़न 2 में उनके साथ काम करके और ज्यादा अच्छा लगा।ष्नेटफ्लिक्स इंडिया में सीरीज़ हेडए तान्या बामी ने कहाए ष्हम ये काली काली आँखें सीज़न 2 के लॉन्च की घोषणा करके बहुत उत्साहित हैं। यह ऐसा शो हैए जिसे देखकर हर बार दर्शक अगले सीज़न की मांग करेंगे। सीज़न 2 में हम और ज्यादा ड्रामाए थ्रिलए और सस्पेंस लेकर आए हैंए जो रोमांच को और ज्यादा बढ़ा देगा। सिद्धार्थ सेनगुप्ता बहुत ही अच्छे क्रिएटर हैं और हमने मिलकर इस शैली के बेहतरीन रूपांतरण के साथ फैंस को पूर्वा और विक्रांत की ट्विस्टेड लव स्टोरी का अगला अध्याय पेश किया है।

बांग्लादेशः शेख हसीना की अवामी लीग पार्टी पर प्रतिबंध लगाने संबंधी याचिका वापस ली गई

ढाका। बांग्लादेश की पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना की अवामी लीग और कई अन्य दलों पर प्रतिबंध लगाने का अनुरोध करने वाली रिट याचिका मंगलवार को वापस ले ली गई। भेदभाव विरोधी छात्र आंदोलन के नेताओ ने सोमवार को ढाका उच्च न्यायालय में एक याचिका दायर कर अदालत से अवामी लीग और 10 अन्य दलों को देश में राजनीतिक गतिविधियां संचालित करने से रोकने के निर्देश दिए जाने का अनुरोध किया था। इस आंदोलन के कारण हसीना की 15 साल पुरानी सरकार को पांच अगस्त को सत्ता छोड़नी पड़ी थी। अदालत के अधिकारियो और वकीलो ने बताया कि आंदोलन के तीन शीर्ष नेताओ या समन्वयकों - सरजिस आलम, हसनत अब्दुल्ला और हसीबुल इस्लाम - ने याचिका को वापस लेने का फैसला किया है। याचिका में 2014, 2018 और 2024 में हुए तीन आम चुनावो पर भी सवाल उठाया गया है, जिनमे हसीना के नेतृत्व वाली अवामी लीग सत्ता में आई थी। उच्च न्यायालय की दो सदस्ईय पीठ द्वारा मंगलवार को सुनवाई के लिए सूचीबद्ध याचिका को सुबह कार्यवाही शुरू होते ही वापस ले लिया गया।

अमेजन सुपर वैल्यू डेज से त्योहार को करेगा रोशन

ग्लोबल। रोशनी का त्योहार अब बिल्कुल नजदीक है अमेजन फ्रेश 1 से 7 नवंबर 2024 तक फेस्टिव सुपर वैल्यू डेज फेस्टिवल सुपर वैल्यू डेज पेश करने के लिए उत्साहित है, जो आपको खुशियों और बचत के साथ त्योहार का जश्न मनाने में मदद करने के लिए शानदार ऑफर्स की पेशकश करेगा। ताजेफलए सब्जियांए स्नैक्सए पेय पदार्थए मिठाई और रोजमर्रा की जरूरी चीजों सहित उत्पादों की एक विस्तृत श्रृंखला पर 45 प्रतिशत तक की छूट के साथ आवश्यक वस्तुओं का स्टॉक तैयार करें। इस दिवाली अपने पसंदीदा समय पर सुविधाजनक स्लॉटेड डोरस्टेप डिलीवरी के साथए आशीर्वादए बीकाजीए पारलेए दावतए टाटा संपन्न और डेटॉल जैसे भरोसेमंद ब्रांड्स से अमेजन फ्रेश पर खरीदारी कर अपने त्योहार के उत्सव को और आसान बनाएं। मौजूदा और नए दोनों ग्राहक अमेजन फ्रेश के फेस्टिव सुपर वैल्यू डेज के साथ अविश्वसनीय बचत का अधिकतम लाभ उठा सकते हैं। मौजूदा प्राइम कस्टमर्स 45 प्रतिशत तक की छूटए फ्लैट 300 रुपए का कैशबैक और फ्री डिलीवरी के अलावा 1 से 3 नवंबर तक फल और सब्जियों पर अतिरिक्ति 50 रुपए कैशबैक का आनंद ले सकते हैं। सभी नए ग्राहक 45 प्रतिशत तक की छूट के साथ फ्लैट 200 रुपए का कैशबैक और ताजा उत्पादों पर 50 रुपए कैशबैक का फायदा उठा सकते हैं।

पाकिस्तान की अदालत ने मानवाधिकार कार्यकर्ता इमान और उनके पति को तीन दिन की हिरासत में भेजा

इस्लामाबाद। पाकिस्तान की आतंकवाद रोधी अदालत ने मंगलवार को प्रख्यात वकील और मानवाधिकार कार्यकर्ता इमान मजारी और उनके पति हादी अली को तीन दिन की पुलिस हिरासत में भेजने का आदेश दिया। दंपति पर सरकारी अभियान में कथित तौर पर हस्तक्षेप करने का आरोप है। इमान और अली को सोमवार को तब गिरफ्तार किया गया था, जब उन्होंने इंग्लैंड और पाकिस्तान के बीच हाल ही में संपन्न टेस्ट मैच के दौरान पुलिस द्वारा लगाए गए अवरोधकों को हटाने का प्रयास किया। इस्लामाबाद पुलिस ने सोमवार को सोशल मीडिया मंच एक्स पर बताया कि उसने इमान और हादी को अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट टीम के दौरे के दौरान राज्य के कर्तव्यों में हस्तक्षेप करके सुरक्षा जोखिम पैदा करने के लिए कानून और नियमों के अनुसार गिरफ्तार किया है।

यमन के हूती विद्रोहियों ने लाल सागर के पास जहाज को निशाना बनाया

दुबई। हूती विद्रोहियों ने सोमवार को लाल सागर के पास संकरे बाब अल-मन्देब जलडमरूमध्य से गुजर रहे एक जहाज को निशाना बनाया। हालांकि जहाज सुरक्षित बच गया। प्राधिकारियों ने यह जानकारी दी।हमलो के लिहाज से पिछले 18 दिन से थोड़ा शांति थी लेकिन हूती विद्रोहियों के इस हमले से स्थिति बदल गई है।वद्रोही गाजा पट्टी में इजराइल-हमास युद्ध को लेकर पिछले लगभग एक साल से लाल सागर गलियारे से गुजरने वाले जहाजों पर हमले कर रहे है। हिसा के कारण इस क्षेत्र से जहाजों का अंतरराष्ट्रीय आवागमन बाधित हो गया है। एक समय यहां से सालाना एक खरब डालर का कारोबार होता था। ब्रिटिश सेना के यूनाइटेड किंगडम समुद्री व्यापार परिचालन केंद्र (यूकेएमटीओ) ने बताया कि बाब अल-मन्देब जलडमरूमध्य से गुजर रहे जहाज ने हमले की सूचना दी। यह जलडमरूमध्य लाल सागर को अदन की खाड़ी से तथा अरब प्रायद्वीप को पूर्वी अफ्रीका से अलग करता है। यूकेएमटीओ ने कहा कि जहाज के कैप्टन ने जहाज के निकट दो विस्फोटों की सूचना दी। हालांकि जहाज और चालक दल के सभी सदस्य सुरक्षित बताए गए है। निजी सुरक्षा फर्म एम्ब्रे ने भी हमले को दो नजदीकी विस्फोट बताया। उसने कहा कि उस समय जहाज अपनी स्थिति के बारे में जानकारी नही दे रहा था और उस पर एक निजी सशस्त्र सुरक्षा बल मौजूद था।

लीबिया के तट पर नौका पलट जाने से मिस्र के 12 प्रवासियों की मौत

काहिरा। मिस्र के 13 प्रवासियों को यूरोप ले जा रही एक नौका के लीबिया के तट के पास पलट जाने से 12 लोगों की मौत हो गई। स्थानीय अधिकारियों और एक लीबियाई समूह ने मंगलवार को यह जानकारी दी। लीबिया मे प्रवासियो को मानवीय सहायता प्रदान करने वाले समूह अल-अबरीन ने सोशल मीडिया मंच फेसबुक पर बताया कि नौका सोमवार शाम तोब्रुक शहर से 60 किलोमीटर पलट गई। समूह के अनुसार, एक प्रवासी की जान बच गई, जबकि मारे गए 12 प्रवासियो के शव बरामद कर लिए गए है। तोब्रुक मे अवैध आव्रजन निरोधक निदेशालय ने भी घटना की पुष्टि की है। हाल के वर्षो में अफ्रीका और पश्चिम एशिया मे युद्ध तथा गरीबी जैसी समस्याओं से बचकर निकलने वाले प्रवासियो के लिए यह उत्तरी अफ्रीकी देश प्रमुख पारगमन बिंदु बन गया है। अधिकारियों के अनुसार, पिछले महीने लीबियाई तट के पास 32 प्रवासियो को ले जा रही एक नौका इंजन खराब हो जाने के कारण डूब गई थी। उस घटना में एक व्यक्ति की मौत हो गई और 22 अन्य लापता हो गए थे। मानव तस्करों ने लीबिया में अस्थिरता का लंबे समय से फायदा उठाया है। 2011 में नाटो समर्थित विद्रोह के बाद लीबिया में अस्थिरता बढ़ गई, जब लंबे समय तक नेता रहे मुअम्मर गद्दाफी को मार दिया गया था। अंतरराष्ट्रीय प्रवासन संगठन ने कहा कि पिछले साल लीबिया मे 962 प्रवासियों की मौत हो गई और।,563 लापता हो गए। संगठन ने कहा कि 2023 तक लगभग 17,200 प्रवासियो को रोका गया और उन्हे वापस लीबिया भेजा गया।

लेबनान में ऑस्ट्रिया के आठ सैनिक मिसाइल हमले में घायल

वियना। लेबनान में संयुक्त राष्ट्र बल मे तैनात आठ ऑस्ट्रियाई सैनिक मंगलवार को नकौरा शिविर पर हुए मिसाइल हमले मे मामूली रूप से घायल हो गए। ऑस्ट्रिया के अधिकारियो ने यह जानकारी दी। रक्षा मंत्रालय के प्रवक्ता माइकल बाउर ने एक्स पर एक पोस्ट में बताया कि यह घटना मंगलवार को दोपहर के समय हुई। उन्होंने कहा कि यह अभी स्पष्ट नही है कि हमले के लिए कौन जिम्मेदार है। बाउर ने कहा कि सैनिको को मामूली चोटें आईं है।

उत्तर कोरिया ने अपने विदेश मंत्री को रूस भेजा

सियोल। उत्तर कोरिया ने मंगलवार को कहा कि उसके शीर्ष राजनयिक रूस की यात्रा कर रहे हैं। यह रूस के साथ उसके गहराते रिश्ते का एक और संकेत है। वहीं, प्रतिद्वंद्वी दक्षिण कोरिया और पश्चिमी देशों ने आरोप लगाया है कि उत्तर कोरिया ने यूक्रेन में रूस के युद्ध में मदद के लिए अपने हजारों सैनिकों को भेजा है। उत्तर कोरिया की आधिकारिक कोरियन सेंट्रल न्यूज एजेंसी (केसीएनए) ने कहा कि विदेश मंत्री चोई सोन हुई के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल सोमवार को रूस के लिए रवाना हुआ। हालांकि केसीएनए की खबर में यात्रा के उद्देश्य का जिक्र नहीं किया गया है। चोई की यात्रा की घोषणा से कुछ समय पहले अमेरिकी रक्षा विभाग के मुख्यालय पेंटागन ने कहा था कि उत्तर कोरिया ने रूस में लगभग 10,000 सैनिक भेजे हैं, जिनके अगले कुछ सप्ताहों के भीतर यूक्रेन के युद्धक्षेत्रों में पहुंचने की उम्मीद है। दक्षिण कोरियाई और पश्चिमी नेताओं ने चिंता व्यक्त की है कि उत्तर कोरिया की संलिप्तता यूक्रेन में रूस की आक्रामकता को बढ़ाने में सहायक हो सकती है तथा बदले में रूस उत्तर कोरिया को ऐसी प्रौद्योगिकी प्रदान कर सकता है, जो उसके परमाणु हथियारों और मिसाइल कार्यक्रम से उत्पन्न खतरे को बढ़ा सकती है। पेंटागन की प्रवक्ता ने बताया कि कुछ उत्तर कोरियाई सैनिक पहले ही यूक्रेन के करीब पहुंच चुके हैं और माना जा रहा है कि वे कुर्स्क सीमा क्षेत्र की ओर बढ़ रहे हैं, जहां रूस यूक्रेनी घुसपैठ को पीछे धकेलने के लिए संघर्ष कर रहा है।

रूस ने यूक्रेन के दो बड़े शहरों पर हवाई हमले किए, चार लोगों की मौत

कीव। रूस की ओर से रात को यूक्रेन के दो बड़े शहर कीव और खारकीव पर मिसाइल, ड्रोन और बम से हमले किए गए, जिसमें चार लोगों की जान चली गई और 15 लोग घायल हो गए। अधिकारियों ने मंगलवार को यह जानकारी दी। क्षेत्रीय गवर्नर ओलेह सिनीहुबोव ने बताया कि यूक्रेन के उत्तर पूर्व में खारकीव में एक घर को निशाना बनाते हुए रूस की ओर से तड़के करीब तीन बजे किए गए हवाई हमले में चार लोगों की मौत हो गई। उन्होंने बताया कि हमले में आसपास के लगभग 20 घरों को भी नुकसान हुआ है। मेयर इहोर तेरेखोव ने बताया कि इससे कुछ घंटों पहले रूस ने खारकीव शहर के केंद्र में ऐतिहासिक डेरजप्रोम इमारत पर बम गिराया था, जिसमें सात लोग घायल हो गए। पैलेस ऑफ इंडस्ट्री कहलाने वाली डेरजप्रोम इमारत यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में आधुनिक वास्तुकला के उदाहरण के तौर पर दर्ज है। कीव में अधिकारियों ने बताया कि रूस की ओर से किए गए ड्रोन हमले को उन्होंने नाकाम कर दिया लेकिन उनका मलबा गिरने से छह लोग घायल हो गए।

संरा की एक एजेंसी को गाजा में सहायता प्रदान करने से रोकने वाले दो विधेयकों को इजराइल की मंजूरी

भाषा। दुबई

इजराइल की संसद ने दो विधेयक पारित किए हैं जो संयुक्त राष्ट्र की फलस्तीनी शरणार्थियों से संबंधित एजेंसी को गाजा में सहायता प्रदान करने से रोक सकते हैं। इन कानूनों में फलस्तीनी शरणार्थियों के लिए संयुक्त राष्ट्र की राहत और कार्य एजेंसी (यूएनआरडब्ल्यूए) को सहायता आपूर्ति से रोकने के प्रावधान हैं और ए एजेंसी तथा इजराइल की सरकार के बीच सारे संबंधों को तोड़ सकते हैं। यह एजेंसी के खिलाफ लंबे समय से चल रहे अभियान का नतीजा है, जिसके बारे में इजराइल का कहना है कि इसमें हमास ने घुसपैठ की है। लेकिन एजेंसी के समर्थकों का कहना है कि इजराइल का असली उद्देश्य फलस्तीनी शरणार्थियों के मुद्दे को दरकिनार करना है। यह एजेंसी गाजा में सहायता प्रदान करने वाली प्रमुख संस्था है और वेस्ट बैंक समेत क्षेत्र में रह रहे लाखों फलस्तीनी शरणार्थियों को शिक्षा, स्वास्थ्य एवं अन्य मूलभूत सेवाएं प्रदान करती है।

अमेरिका में राष्ट्रपति चुनाव की दौड़ अंतिम चरण में

ट्रंप व हैरिस ने एक-दूसरे पर तीखे हमले किए

भाषा। अटलांटा

अमेरिका में राष्ट्रपति पद की दौड़ के अंतिम चरण में प्रवेश करने के बीच उपराष्ट्रपति कमला हैरिस और पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने चुनावी जंग के लिहाज से अहम उन राज्यों के मतदाताओं को लुभाने के लिए एक-दूसरे पर तीखे हमले बोले जो इस बेहद कड़े मुकाबले का नतीजा तय कर सकते हैं। रिपब्लिकन पार्टी के उम्मीदवार ट्रंप ने सोमवार को अटलांटा में जॉर्जिया इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के परिसर में मैककैमिश पवेलियन में एक रैली को संबोधित किया। ट्रंप ने रैली में डेमोक्रेटिक पार्टी के नेताओं द्वारा उनकी तुलना नाजियों से करने के प्रयासों को खारिज कर दिया। उन्होंने जॉर्जिया की राजधानी में कहा, कमला और उनके चुनाव अभियान की सबसे नई बात यह है कि जो कोई भी उन्हें वोट नहीं दे रहा है वह नाजी है। जॉर्जिया चुनावी जंग के लिहाज से अहम उन सात राज्यों में से एक है जो पांच नवंबर के चुनाव को निर्णायक रूप से किसी भी उम्मीदवार के पक्ष में मोड़ सकता है। ट्रंप ने कहा, मैं नाजी नहीं हूं... मैं एक नाजी के विपरीत हूं। ट्रंप ने हैरिस को फासीवादी कहकर उनकी आलोचना की। ट्रंप ने कहा, वह फासीवादी हैं। न्यूयॉर्क के मैडिसन स्क्वायर गार्डन में ट्रंप की रविवार की रैली के बाद हैरिस की चुनाव प्रचार अभियान टीम ने इसकी तुलना आयोजन स्थल पर 1939 की नाजी सभा से की। इस सप्ताह अंतिम राष्ट्रव्यापी सीएनएन सर्वेक्षण में पाया गया कि 47 प्रतिशत संभावित मतदाता हैरिस का समर्थन करते हैं और इतने ही मतदाता चुनाव में ट्रंप का समर्थन करेंगे।

जर्मनी ने ईरान मूल के जर्मन कैदी के मृत्युदंड पर विरोध दर्ज कराया, ईरान से अपना राजदूत बुलाया

भाषा। बर्लिन

जर्मनी ने अमेरिका में रहने वाले ईरान मूल के जर्मन नागरिक जमशेद शर्महद को 2020 में ईरानी सुरक्षाबलों द्वारा दुबई से अगवा करने और उसे मृत्युदंड दिए जाने को लेकर मंगलवार को ईरान के सामने विरोध दर्ज कराया और परामर्श के लिए अपने राजदूत को बर्लिन वापस बुला लिया। (जर्मन) विदेश मंत्रालय ने एक्स पर लिखा कि तेहरान के इस कदम पर अपना तीखा विरोध दर्ज कराने के लिए यहां ईरान के दूतावास प्रभारी को तलब किया गया। मंत्रालय ने कहा कि उसे आगे का कदम उठाने का अधिकार है। हालांकि उसने इस कदम के बारे में विस्तार से नहीं बताया। उसने कहा कि साथ ही, जर्मन राजदूत मार्कसपोत्जेल ने ईरान के विदेश मंत्री के सामने जमशेद शर्महद की हत्या का कड़ा विरोध किया। उसके बाद जर्मन विदेश मंत्री अन्नालेना बैरबॉक ने पोत्जेल को परामर्श के लिए बर्लिन वापस बुला लिया। शर्महद (69) को सोमवार को आतंकवाद के आरोपों में मौत की सजा दी गई थी। ईरान की न्यायपालिका ने यह कहा। उससे पहले 2023 में सुनवाई हुई थी जिसे अमेरिका तथा अंतरराष्ट्रीय (मानवाधिकार) संगठनों ने दिखावा बताकर खारिज कर दिया। वह हाल के वर्षों में विदेश में मौजूद कई ईरानी असंतुष्टों में से एक थे, जिन्हें धोखे से या अपहरण करके ईरान वापस लाया गया था, क्योंकि तेहरान ने जर्मनी समेत विश्व शक्तियों के साथ 2015 के परमाणु समझौते के टूटने के बाद ऐसे तत्वों को निशाना बनाना शुरू किया। ईरान ने कैलिफोर्निया के ग्लेनडोरा में रहने वाले शर्महद पर 2008 में एक मस्जिद पर हमले की योजना बनाने का आरोप लगाया था, जिसमें पांच महिलाओं और एक बच्चे सहित 14 लोग मारे गए थे और 200 से अधिक लोग घायल हो गए थे। उसने यह भी आरोप लगाया कि शर्महद ने ईरान की अल्पज्ञात किंगडम असेंबली और उसके टोंडर उग्रवादी प्रकोष्ठ के माध्यम से अन्य हमलों की भी साजिश रची थी। ईरान का शर्महद पर 2017 में एक टेलीविजन कार्यक्रम के दौरान ईरान के रिवोल्युशनरी गार्ड के मिसाइल स्थलों की गोपनीय सूचना सार्वजनिक करने का भी आरोप है।

ब्राजील का चीन की बीआरआई में शामिल होने से इनकार

बीजिंग। चीन की बेल्ट एंड रोड इनीशिएटिव (बीआरआई) योजना को झटका देते हुए ब्राजील ने बीजिंग की अरबों डॉलर की इस पहल में शामिल नहीं होने का निर्णय लिया है। इस प्रकार वह ब्रिक्स समूह में भारत के बाद दूसरा देश बन गया है, जिसने इस विशाल परियोजना का समर्थन नहीं किया है। ब्राजील के राष्ट्रपति लुला डा सिल्वा के विशेष सलाहकार सेल्सो एमोरिम ने सोमवार को कहा कि ब्राजील बीआरआई में शामिल नहीं होगा, बल्कि चीनी निवेशकों के साथ साझेदारी के वैकल्पिक तरीके खोजेगा। उन्होंने ब्राजील के अखबार ओ ग्लोबो से कहा कि ब्राज़ील' चीन के साथ संबंधों को एक नए स्तर पर ले जाना चाहता है, बिना किसी परिग्रहण अनुबंध पर हस्ताक्षर किए'। एमोरिम ने कहा, हम कोई संधि नहीं कर रहे हैं। हांगकांग से संचालित अखबार साउथ चाइना मॉर्निंग पोस्ट की खबर के अनुसार ब्राजील का यह फैसला चीन की इस योजना के विरोधाभासी है कि 20 नवंबर को चीन के राष्ट्रपति शी चिनफिंग की ब्रासीलिया की राजकीय यात्रा के दौरान इसे मुख्य रूप से अंजाम दिया जाए। अखबार के अनुसार ब्राजील के अर्थव्यवस्था और विदेश मंत्रालयों के अधिकारियों ने हाल में इस विचार का विरोध किया था।

घरेलू धूल के माइट से एलर्जी है कैसे से पता चलेगा?

भाषा। एडिलेड

लोग अक्सर मानते हैं कि उन्हें घर की धूल से एलर्जी है, लेकिन एलर्जी से पीड़ित 20 प्रतिशत ऑस्ट्रेलियाई लोगों में से कई को वास्तव में घर की धूल के सूक्ष्म माइट (मकड़ी जैसा बहुत छोटा जंतु जो पेड़-पौधों, पशुओं, कालीनों आदि में छुपा रहता है, इसे एक किस्म का पिस्सू भी कहा जा सकता है) से एलर्जी है। घर की धूल के माइट मकड़ियों और चिचड़ के परिवार से संबंधित हैं। वे केवल 0.2-0.3 मिमी जितने होते हैं। वे 65-100 दिनों तक जीवित रहते हैं, और मादा अपने जीवन में 60-100 अंडे देती है।घर की धूल के माइट समशीतोष्ण जलवायु और नमी पसंद करते हैं। वे हमारे और जानवरों की त्वचा की कोशिकाओं को खाते हैं, साथ ही फफूंद को भी खाते हैं, जिसे वे विशेष एंजाइमों का उपयोग करके

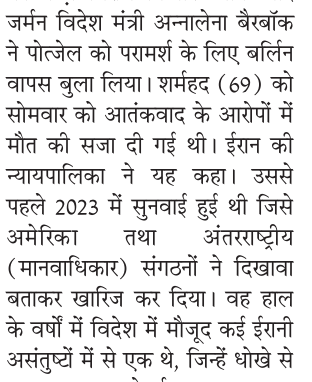

पचाते हैं।ए एंजाइम दिन में करीब 20 बार उनके मल में उत्सर्जित होते हैं। वे अपने बाह्यकंकाल के टुकड़े भी बाहर निकालते हैं। ए सभी टुकड़े इस प्रकार के एलर्जिक राइनाइटिस से पीड़ित लोगों में एलर्जी के लक्षणों को बढ़ाते हैं। क्या लक्षण हैं? जब घरेलू धूल के माइट की एलर्जी से पीड़ित लोग एलर्जी पैदा करने वाले तत्वों को सांस के माध्यम से अंदर लेते हैं, तो वे वायुमार्ग और आंखों की श्लेष्मा झिल्ली (म्यूकस मेम्ब्रेन) में प्रवेश कर जाते हैं। उनका शरीर एलर्जी को खतरे के रूप में पहचानता है तथा हिस्टामाइन नामक रसायन सहित अन्य रसायन छोड़ता है। इससे नाक बहना, नाक, आंख और गले में खुजली, छींक आना, खांसी आना और गले में बलगम जमने जैसी समस्याएं होती हैं। इस प्रकार की एलर्जी से पीड़ित लोग आमतौर पर मुंह से सांस लेते हैं, खर्राटे लेते हैं, लगातार अपनी नाक रगड़ते हैं और उनकी आंखों के नीचे काले धब्बे पड़ जाते हैं। घरेलू धूल के माइट से होने वाली एलर्जी के कारण ठीक से नींद नहीं आना, लगातार थकान रहना, काम या स्कूल में एकाग्रता में कमी आना तथा जीवन की गुणवत्ता में गिरावट आ सकती है। एक्जिमा से पीड़ित लोगों में उनकी क्षतिग्रस्त त्वचा से धूल के माइट के प्रोटीन अंदर चले जाते हैं। यह त्वचा में प्रतिरक्षा कोशिकाओं को रसायन छोड़ने के लिए प्रेरित करता है, जिससे पहले से ही क्षतिग्रस्त त्वचा और अधिक लाल, दर्दनाक और खुजलीदार हो जाती है और यह स्थिति खासकर बच्चों में होती है। घर की धूल के माइट से एलर्जी के लक्षण साल भर होते हैं। अक्सर देखा जाता है कि बिस्तर पर जाने के बाद और सुबह जागने पर लक्षण बदतर होते हैं। लेकिन घर की धूल के माइट से एलर्जी और पराग (पॉलेन) एलर्जी से पीड़ित लोगों में लक्षण वसंत में और भी बदतर हो जाते हैं। इसका निदान कैसे किया जाता है? घर की धूल के माइट से होने वाली एलर्जी के लक्षण अक्सर कई महीनों या सालों में जाकर उभरते हैं। लेकिन सटीक निदान का मतलब है कि आप न केवल सही उपचार प्राप्त कर सकते हैं - बल्कि यह जोखिम को न्यूनतम करने के लिए भी महत्वपूर्ण है। डॉक्टर और नर्स घरेलू धूल के माइट से होने वाली एलर्जी की जांच के लिए रक्त परीक्षण करा सकते हैं।

पाकिस्तान में दो अलग-अलग घटनाओं में पोलियो टीकाकरण करने वालों पर हमला

भाषा। पेशावर (पाकिस्तान)

पाकिस्तान के अशांत उत्तर-पश्चिमी प्रांत खैबर पख्तूनख्वा में मंगलवार को पोलियो टीकाकरण दल पर हमला करने वाले तीन आतंकवादियों को सुरक्षा बलों ने मार गिराया। सूत्रों ने यहां बताया कि एक अन्य घटना में आतंकवादियों ने उसी प्रांत के एक डिस्पेंसरी में पोलियो टीकाकरण करने वाली टीम को बंधक बना लिया। पोलियो टीकाकरण टीम पर हमले की इस घटना से एक दिन पहले सोमवार को पाकिस्तान ने 4.5 करोड़ बच्चों के टीकाकरण के लिए अपना तीसरा राष्ट्रव्यापी टीकाकरण अभियान शुरू किया। पहली घटना अफगानिस्तान की सीमा से लगे औरकजई कबायली जिले में हुई, जहां पोलियो टीकाकरण कर्मियों पर हमले में एक पुलिसकर्मी की मौत हो गई। सूत्रों ने बताया कि पुलिस ने जवाबी कार्वाई करते हुए कम से कम तीन आतंकवादियों को मार गिराया। किसी समूह ने इस हमले की जिम्मेदारी नहीं ली है। उत्तरी वजीरिस्तान की तहसील शेवा में हुई दूसरी घटना में आतंकवादियों ने ममेत कोट डिस्पेंसरी में पोलियो टीकाकरण टीम को बंधक बना लिया। सूत्रों के अनुसार, हमलावरों ने पुलिस अधिकारियों से हथियार भी जब्त कर लिए। पाकिस्तान में कबायली लोग अपने बच्चों को पोलियो का टीका दिए जाने के खिलाफ हैं और वे अपने दृष्टिकोण की पुष्टि के लिए शरिया का हवाला देते हैं तथा इसे गैर-इस्लामी बताते हैं। पाकिस्तान ने सोमवार को 4.5 करोड़ बच्चों को इस घातक बीमारी से बचाने के लिए अपना तीसरा राष्ट्रव्यापी पोलियो टीकाकरण अभियान शुरू किया।

पाकिस्तान में रूस के दूतावास ने कहा, रूसी नागरिक के अपहरण की खबरों का सत्यापन किया जा रहा है

इस्लामाबाद। पाकिस्तान में रूस के दूतावास ने मंगलवार को कहा कि वह इन खबरों का सत्यापन करने की कोशिश कर रहा है कि उसके एक नागरिक का पाकिस्तान के उत्तर पश्चिम में अपहरण कर लिया गया है। दूतावास ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर अपनी पोस्ट में अन्य कोई जानकारी नहीं दी। दूतावास की ओर से यह घोषणा कमांडर गुल बहादुर के नेतृत्व वाले एक छोटे आतंकवादी समूह द्वारा खैबर पख्तूनख्वा प्रांत के डेरा इस्माइल खान जिले में एक रूसी नागरिक को पकड़ने का दावा करने के कुछ दिन बाद की गई है। समूह ने एक तस्वीर जारी की जिसमें एक व्यक्ति को दाढ़ी वाले दो लोगों के साथ बैठे हुए देखा जा सकता है। स्थानीय पुलिस ने कहा कि रूस के दूतावास ने अपहरण की इस घटना के बारे में उनसे संपर्क नहीं किया है।

भारतीय महिला टीम ने जीती सीरीज

- श्रृंखला को 2-1 से अपने नाम किया
- न्यूजीलैंड को छह विकेट से शिकस्त दी

भाषा। अहमदाबाद

भारतीय महिला टीम ने मंगलवार को यहां न्यूजीलैंड को छह विकेट से हराकर तीन मैचों की श्रृंखला को 2–1 से अपने नाम किया। न्यूजीलैंड की पारी को 232 रन पर समेटने के बाद भारतीय टीम ने 45.2 ओवर में चार विकेट के नुकासन पर 236 रन बनाकर जीत हासिल की। भारत के लिए स्मृति मंधाना ने 100 और कप्तान हरमनप्रीत कौर ने नाबाद 70 रन का योगदान दिया। दोनों ने तीसरे विकेट के लिए 117 रन की साझेदारी कर टीम की जीत सुनिश्चित की। न्यूजीलैंड के लिए हान्ना रो ने दो जबकि सोफी डिवाइन ने एक विकेट लिया। इससे पहले ब्रुक हैलिडे की 86 रन की पारी ने न्यूजीलैंड को खराब शुरुआत से उबारते हुए मंगलवार को यहां भारत के खिलाफ तीसरे और निर्णायक एकदिवसीय मैच में 232 रन तक पहुंचा दिया। तीन मैचों की श्रृंखला 1–1 की बराबरी पर है। हैलिडे ने 96 गेंद की पारी में नौ चौके और तीन छक्के जड़े। अनुभवी दीप्ति शर्मा ने तीन जबकि प्रिया मिश्रा ने दो विकेट लिए जिससे भारत ने न्यूजीलैंड को 49.5 ओवर में ऑल आउट कर दिया। भारतीय गेंदबाजों ने पारी की शुरुआत से ही सटीक लाइन–लेंथ से न्यूजीलैंड के बल्लेबाजों को परेशानी में रखा। जेमिमा रोड्रिग्स के शानदार थ्रो पर सूजी बेट्स के रन आउट होने से भारत को पहली सफलता मिली। साइमा ठाकोर ने आठवें ओवर में लौरिन डाउन को एक रन पर पवेलियन की राह दिखाई। कप्तान हरमनप्रीत ने 11वें ओवर में गेंद युवा लेग स्पिनर प्रिया मिश्रा को थमाई और इस गेंदबाज ने शानदार लय में चल रही न्यूजीलैंड की कप्तान सोफी डिवाइन (नौ रन) को आउट कर भारत को बड़ी सफलता दिलाई। एक छोर से सतर्कता से खेल रही सलामी बल्लेबाजी जॉर्जिया प्लिमर को प्रिया ने दीप्ति के हाथों कैच कराया। उन्होंने 67 गेंद में 39 रन बनाए। मैडी ग्रीन 15 गेंद में 19 रन बनाकर रन आउट हुई। जिससे न्यूजीलैंड ने 24 ओवर में 88 रन पर पांचवां विकेट गंवा दिया। हैलिडे को इसके बाद विकेटकीपर इजाबेल गेज (49 गेंद में 25 रन) के रूप में अच्छा जोड़ीदार मिला और दोनों ने छठे विकेट के लिए 64 रन जोड़कर मैच में टीम की वापसी कराई। हैलिडे ने थकान हावी होने के बावजूद कुछ बड़े शॉट लगाए। वह 46वें ओवर में दीप्ति की गेंद पर राधा यादव को कैच दे बैठी। आखिरी ओवरों में लिया ताहुहू ने 14 गेंद में नाबाद 24 रन बनाकर न्यूजीलैंड के स्कोर को 232 तक पहुंचाने में मदद की।

स्कोरबोर्ड : न्यूजीलैंड पारी: बेट्स रन आउट (जेमिमा यास्तिका) 04, प्लिमर का दीप्ति बो प्रिया 39, डाउन का यास्तिका बो साइमा 01, डिवाइन बो प्रिया 09,हैलिडेका राधा बो दीप्ति 86,ग्रीन रन आउट (जेमिमा यास्तिका) 15, गेज का एवं बो दीप्ति 25, रो पगबाधा दीप्ति 11,तहूहू नाबाद 24,कार्सन का राधा बो रेणुका 2, जोन्स रन आउट साइमा 02,अतिरिक्त: 14,**कुल योग:** 49.5 ओवर मे सभी आउट 232,**विकेट पतन:**1-24, 2-25, 3-36 , 4-66, 5-88 , 6-152, 7-199, 8-210, 9-219 ,**गेंदबाजी:** रेणुका 10-1-49-1, ठाकोर 9.5-1-44-1,प्रिया 10-1-41-2, दीप्ति 10-2-39-3,यादव 4-0-21-0, कौर 6-0-34-0

भारत पारी:मांधना बो हान्ना 100, वर्मा का गेज बो हान्ना 12,भाटिया का एवं बो डिवाइन 35,कौर नाबाद 70,रोड्रिग्स पगबाधा जोनास 11,हसबनिस नाबाद 00,अतिरिक्त: 08,**कुल योग:** (45.2 ओवर मे चार विकेट पर) 236 रन ,**विकेट पतन:**1-16, 2-92, 3-209, 4-232,**गेंदबाजी:** तहूहू 6-0-30-0, रो 8-0-47-2, कार्सन 10-0-45-0,डिवाइन 7.2-0-44-1, बेट्स 4-0-18-0,जोनास 9-1-50-1

हर्षित राणा तीसरे टेस्ट से पहले मुंबई में भारतीय टीम से जुड़ेंगे

भाषा। नई दिल्ली

रणजी ट्रॉफी के मौजूदा सत्र में दिल्ली की पहली जीत में अहम भूमिका निभाने वाले युवा तेज गेंदबाज हर्षित राणा मुंबई में न्यूजीलैंड के खिलाफ तीसरे टेस्ट से पहले भारतीय टीम में शामिल होंगे। राणा को पुणे में खेले गए दूसरे टेस्ट से पहले असम के खिलाफ दिल्ली के मैच के लिए रिलीज कर दिया गया था। भारतीय टीम को इस मैच में 113 रन की शिकस्त मिली थी। टीम इसके साथ ही तीन मैचों की श्रृंखला में 0–2 से पिछड़ गई। यह 12 वर्षों में घरेलू मैदान पर टीम की पहली टेस्ट श्रृंखला में पहली हार है। राणा वानखेड़े स्टेडियम में मैच शुरू होने से दो दिन पहले बुधवार को मुंबई में भारतीय टीम में शामिल होंगे। यह स्पष्ट नहीं है कि ड्रेसिंग रूम में उनकी मौजूदगी रिजर्व के तौर पर होगी या टीम के सदस्य के तौर पर। इस 22 साल के गेंदबाज को ऑस्ट्रेलिया में 22 नवंबर से पर्थ में शुरू होने वाले पांच टेस्ट मैचों के लिए मुख्य टीम में चुना गया है। बीसीसीआई के एक सूत्र ने कहा, हर्षित कल (बुधवार) टीम में शामिल होंगे। भारतीय टीम प्रबंधन ऑस्ट्रेलिया दौरे से पहले तेज गेंदबाजों के कार्यभार पर सावधानीपूर्वक नजर रख रहा है, ऐसे में संभावना है कि इस विभाग के अनुभवी जसप्रीत बुमराह को तीसरे टेस्ट से आराम दिया जाए। अगर ऐसा हुआ तो राणा के पदार्पण की संभावना बढ़ जाएगी। राणा ने असम के खिलाफ पहली पारी में पांच विकेट लिए थे और इसके बाद दूसरी पारी में दो विकेट लिए। दिल्ली ने यह मुकाबला 10 विकेट से जीता था। दिल्ली के मुख्य कोच सरनदीप सिंह ने कहा कि राणा टेस्ट क्रिकेट के लिए तैयार हैं। बीसीसीआई के पूर्व चयनकर्ता सरनदीप ने पीटीआई–भाषा से कहा, वह टेस्ट क्रिकेट खेलने के लिए तैयार है। वह एक सकारात्मक रवैए वाला खिलाड़ी है। उसे मैच की परिस्थितियों की अच्छी समझ है और वह शीर्ष स्तर पर चुनौतियों से निपटने के लिए तैयार है। उसने दिल्ली के लिए जी जान से गेंदबाजी की।

तीसरा टेस्ट भी नहीं खेल सकेंगे न्यूजीलैंड के बल्लेबाज विलियमसन

नई दिल्ली। सीनियर बल्लेबाज केन विलियमसन ग्रोइन की चोट से पूरी तरह उबरने के लिए भारत के खिलाफ मुंबई में तीसरा टेस्ट भी नहीं खेल सकेंगे। न्यूजीलैंड को इंग्लैंड के खिलाफ 28 नवंबर से घरेलू श्रृंखला खेलनी है। विलियमसन पहले दो टेस्ट भी नहीं खेले थे जिन्हें जीतकर कीवी टीम ने श्रृंखला में 2-0 की बढ़त बना ली है। तीसरा और आखिरी टेस्ट एक नवंबर से वानखेड़े स्टेडियम पर खेला जाएगा। न्यूजीलैंड के मुख्य कोच गैरी स्टीड ने एक विज्ञप्ति में कहा, केन ठीक हो रहा है लेकिन अभी पूरी तरह से फिट नहीं है। उन्होंने कहा, हमें लगता है कि अभी उसे न्यूजीलैंड में रहकर रिहैबिलिटेशन के आखिरी दौर पर ध्यान देना चाहिए ताकि वह इंग्लैंड दौरे पर जा सके। इंग्लैंड और न्यूजीलैंड के बीच पहला टेस्ट क्राइस्टचर्च में खेला जाएगा।

पितृत्व अवकाश के कारण न्यूजीलैंड दौरे से बाहर रहेंगे स्मिथ

लंदन। इंग्लैड के विकेटकीपर जैमी स्मिथ अपने पहले बच्चे के जन्म के लिए पितृत्व अवकाश के कारण नवंबर दिसंबर में न्यूजीलैंड दौरे पर नही जा सकेंगे। जोर्डन कॉक्स विकेटकीपिग का जिम्मा संभालेगे। बल्लेबाज हरफनमौला जैकब बेथेल को पहली बार टेस्ट टीम मे शामिल किया गया है जिन्होंने आस्ट्रेलिया के खिलाफ टी20 और वनडे मैचो मे पदार्पण किया था। पहला टेस्ट क्राइस्टचर्च मे 28 नवंबर से शुरू होगा।

पीसीबी ने मोहम्मद मसरूर को फील्डिंग कोच बनाया

कराची। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड ने स्थानीय प्रथम श्रेणी खिलाड़ी मोहम्मद मसरूर को आस्ट्रेलिया, जिम्बाब्वे और दक्षिण अफ्रीका दौरे के लिए राष्ट्रीय टीम का फील्डिंग कोच बनाया है। अपने बेहतरीन क्षेत्ररक्षण के लिए मशहूर रहे मसरूर को तीन दौरों का अनुबंध दिया गया है। वह इंग्लैंड के खिलाफ पिछले दो टेस्ट मे टीम के साथ रहे थे। पीसीबी के एक सूत्र ने कहा , लाल गेंद के प्रारूप के मुख्य कोच जैसन गिलेस्पी ने ही उनके नाम की सिफारिश की क्योंकि वह मसरूर के काम से बहुत खुश थे।

गिल, राशिद, सुदर्शन को टीम में बरकरार रख सकते हैं टाइटंस

नई दिल्ली। गुजरात टाइटंस इंडियन प्रीमियर लीग की मेगा नीलामी से पहले अपने कप्तान शुभमन गिल, स्टार स्पिनर राशिद खान और बाएं हाथ के बल्लेबाज साइ सुदर्शन को टीम मे बरकरार (रिटेंशन) रख सकता है। आक्रामक बल्लेबाज राहुल तेवतिया और शाहरूख खान को भी बरकरार रखे जाने की संभावना है। आईपीएल केएक सूत्र ने कहा , शुभमन, राशिद और साइ को फ्रेंचाइजी बरकरार रख सकती है। भारतीय क्रिकेट टीम के भावी कप्तान माने जा रहे गिल ने इस साल पहली बार टाइटंस की कप्तानी की जब टीम दस टीमों में आठवें स्थान पर रही थी।

स्पेन के रोड्री, बोनमाती ने बलोन डी ओर पुरस्कार जीता

पेरिस। स्पेन के मिडफील्डर रोड्री और एताना बोनमाती ने दुनिया के सर्वश्रेष्ठ फुटबॉल खिलाड़ी का पुरुष और महिला बलोन डी ओर पुरस्कार जीता। रोड्री ने सोमवार को पहली बार इस प्रतिष्ठित पुरस्कार को अपने नाम किया। इस 28 साल के खिलाड़ी ने मैनचेस्टर सिटी को प्रीमियर लीग चैम्पियन बनाने के साथ स्पेन की यूरोपीय चैम्पियनशिप जीत मे मुख्य भूमिका निभाई थी। रोड्री ने आठ बार के विजेता अर्जेंटीना के लियोनेल मेस्सी का स्थान लिया। इस पुरस्कार के पूर्व विजेता जॉर्ज वीह ने जब रोड्री के नाम की घोषणा की तक इस खिलाड़ी ने अपने चेहरे पर हाथ रख लिया।

डि जोर्जी , स्टब्स के पहले टेस्ट शतक , दक्षिण अफ्रीका का मजबूत स्कोर

चटगांव। सलामी बल्लेबाज टोनी डि जोर्जी और ट्रस्टिन स्टब्स के पहले टेस्ट शतकों की मदद से दक्षिण अफ्रीका ने बांग्लादेश के खिलाफ दूसरे और आखिरी टेस्ट के पहले दिन दो विकेट पर 307 रन बना लिए। खराब रोशनी के कारण खेल जल्दी रोके जाने के समय जोर्जी 141 और डेविड बेडिंघम 18 रन बनाकर खेल रहे थे। स्टब्स ने 198 गेंद मे छह चौकों और तीन छक्कों की मदद से 106 रन बनाए। बाएं हाथ के स्पिनर तैजुल इस्लाम ने 30 ओवर मे 110 रन देकर दोनों विकेट लिए।

बोपन्ना–एब्डेन ने एटीपी फाइनल्स में जगह बनाई

भाषा। नई दिल्ली

भारत के स्टार रोहन बोपन्ना और ऑस्ट्रेलिया के उनके जोड़ीदार मैथ्यू एब्डेन ने सत्रांत होने वाले प्रतिष्ठित एटीपी टेनिस फाइनल्स में जगह बना ली है। नथानील लेमोन्स और जैकसन विथ्रो की जोड़ी के रोलेक्स पेरिस मास्टर्स से बाहर होने के साथ बोपन्ना और एब्डेन ने टूर्नामेंट में जगह बना ली। तूरीन में होने टूर्नामेंट में बोपन्ना और एब्डेन के अलावा वेस्ली कूलहोफ और निकोला निकोला मैकटिक, केविन क्राविट्ज और टिम पुएट्ज, हैरी हेलियोवारा और हेनरी पेटेन, मार्सेलो अरेवालो और मेट पाविच, मार्सेल ग्रेनोलर्स और होरासियो जेबालोस, साइमन बोलेली और आंद्रिया वावासोरी और मैक्स पुर्सेल और जोर्डन थॉम्पसन की पुरुष युगल जोड़ियां हिस्सा लेंगी।एटीपी फाइनल्स का आयोजन इनाल्पी एरेना में 10 से 17 नवंबर तक होगा जिसमें दुनिया की सिर्फ शीर्ष आठ जोड़ियां हिस्सा लेंगी। बोपन्ना और एब्डेन ने सत्र की शानदार शुरुआत करते हुए ऑस्ट्रेलिया ओपन का खिताब जीता था। भारतीय खिलाड़ी इस दौरान 43 साल 331 दिन की उम्र में दुनिया का नंबर एक बनने वाला सबसे उम्रदराज खिलाड़ी बना।बोपन्ना और एब्डेन ने इसके बाद मियामी ओपन का भी खिताब जीता।भारत और ऑस्ट्रेलिया की जोड़ी ने इसके अलावा एडीलेड में फाइनल और रोलां गैरो में सेमीफाइनल में भी जगह बनाई।बोपन्ना और एब्डेन ने लगातार दूसरे साल एटीपी फाइनल्स के लिए क्वालीफाई किया है। ए दोनों 2023 में तूरीन में सेमीफाइनल में पहुंचे थे जहां उन्हें ग्रेनोलर्स और जेबालोस के खिलाफ हार का सामना करना पड़ा था।बोपन्ना की नजरें अपने पहले एटीपी फाइनल्स खिताब पर टिकी हैं। वह इससे पहले 2012 में महेश भूपति और 2015 में फ्लोरिन मर्जिया के साथ मिलकर फाइनल में जगह बना चुके हैं। उन्होंने सबसे पहले 2011 में ऐसा कुरैशी के साथ मिलकर इस टूर्नामेंट में जगह बनाई थी।

सिटसिपास ने पेरिस मास्टर्स के पहले दौर में जीत दर्ज की

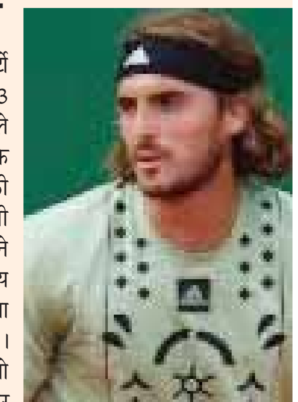

पेरिस। स्टेफानोस सिटसिपास ने रॉबर्टो कारबालेस बाएना को 4–6, 6–3, 6–3 से हराकर पेरिस मास्टर्स टेनिस के पहले दौर में जीत दर्ज की और सत्र के आखिरी एटीपी फाइनल्स में प्रवेश की दौड़ में बने हुए हैं। अमेरिका के टॉमी पॉल को फ्रांस के एड्रियन मानारिनो ने 3–6, 5–7 से मात दी। वहीं स्थानीय सितारे हुजो हुम्बर्ट ने ब्रेंडन नकाशिमा को 6–3, 4–6, 6–4 से हराया। नीदरलैंड के टालों ग्रीकस्पूर ने लूसियानो डारडेरी को 6–3, 6 –4 से हराया और अब उनका सामना तीसरी वरीयता प्राप्त अलेक्जेंटर ज्वेरेव से होगा।

चोट का मजाक उड़ाने के लिए कोहली ने इंस्टाग्राम पर ब्लॉक किया था : मैक्सवेल

मेलबर्न। ऑस्ट्रेलियाई ऑलराउंडर ग्लेन मैक्सवेल ने खुलासा किया है कि विराट कोहली ने उन्हें इंस्टाग्राम पर ब्लॉक कर दिया था क्योंकि 2017 बोर्डर–गावस्कर ट्रॉफी के दौरान कंधे की चोट के बाद उन्होंने भारत के दिग्गज बल्लेबाज का मजाक उड़ाया था। कोहली और मैक्सवेल तब तक अच्छे दोस्त नहीं थे जब तक कि ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ी 2021 में आईपीएल फ्रेंचाइजी रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरू (आरसीबी) से नहीं जुड़ गया। बेंगलुरू की टीम ने उन्हें 14.25 करोड़ रुपए में खरीदा था।मैक्सवेल ने कहा कि उन्होंने इंस्टाग्राम पर कोहली को फॉलो करने की कोशिश की लेकिन उन्हें पता चला कि उन्हें पूर्व भारतीय कप्तान ने ब्लॉक कर दिया है। मैक्सवेल ने लिस्टएनआर स्पोर्ट पर विलो टॉक पॉडकास्ट के दौरान कहा, जब मुझे पता चला कि मैं आरसीबी में जा रहा हूं तो विराट मुझे मैसेज करने वाले और टीम में मेरा स्वागत करने वाले पहले व्यक्ति थे। जब मैं आईपीएल से पहले के ट्रेनिंग शिविर के लिए आया तो हमने बातचीत की और साथ में काफी समय ट्रेनिंग में बिताया। उन्होंने कहा, तो मैं उसे फॉलो करने के लिए उसके सोशल मीडिया पर जाता हूं। इससे पहले मैंने इसके बारे में सोचा भी नहीं था।

दीप्ति शर्मा आईसीसी गेंदबाजों की रैंकिंग में करियर की सर्वश्रेष्ठ दूसरी रैंकिंग पर

भाषा। दुबई

भारतीय आफ स्पिनर दीप्ति शर्मा को हाल ही में अपने शानदार फॉर्म का फल मिला जब आईसीसी महिला वनडे गेंदबाजों की रैंकिंग में वह कैरियर की सर्वश्रेष्ठ दूसरी रैंकिंग पर पहुंच गई। यूएई में आईसीसी महिला टी20 विश्व कप में दीप्ति ने शानदार प्रदर्शन किया। उन्होंने न्यूजीलैंड के खिलाफ 3 . 42 की इकॉनामी रेट से दो मैचों में तीन विकेट लिए। इंग्लैंड की सोफी एक्सेलेटन वनडे गेंदबाजों की रैंकिंग में शीर्ष पर है। न्यूजीलैंड की ली ताहुहू (तीन पायदान चढकर 12वें स्थान पर), एमेलिया केर (एक पायदान चढकर 13वें) और सोफी डेवाइन (नौ पायदान चढकर 30वें) को भी रैंकिंग में फायदा हुआ है। वनडे बल्लेबाजों की रैंकिंग में डेवाइन (तीन पायदान चढकर आठवें) और केर (एक पायदान चढकर 11वें) को भी फायदा हुआ है। भारत की जेमिमा रौड्रिग्स तीन पायदान चढकर 30वें स्थान पर पहुंच गई जबकि दीप्ति एक पायदान चढकर तीसरे और न्यूजीलैंड की डेवाइन दो पायदान चढकर सातवें स्थान पर हैं।

ताइक्वांडो में एलपीएस आनंद नगर शाखा के छात्रों ने जीते 5 स्वर्ण सहित 10 पदक

लखनऊ। लखनऊ पब्लिक स्कूल एलपीएस आनंद नगर शाखा के छात्रों ने अर्जुन कप राष्ट्रीय आमंत्रण ताइक्वांडो प्रतियोगिता.2024 में उत्तर प्रदेश का प्रतिनिधित्व करते हुए 5 स्वर्ण, 3 रजत, 2 कांस्य सहित 10 पदक जीत कर अपना दबदबा कायम रखा। राजस्थान यूनिवर्सिटी के स्पोर्ट्स कांप्लेक्स में 26 से 27 अक्टूबर 2024 तक राजस्थान ताइक्वांडो एसोसिएशन व क्रीड़ा भारती राजस्थान के संयुक्त तत्वाधान में प्रतियोगिता आयोजित की गई थी। इस प्रतियोगिता में क्योरगी के पीवी ग्रुप में अंडर-17 किग्रा भार वर्ग और पूमसे में दिव्य राज वंश ने धमाल मचाते हुए दोहरे स्वर्ण पदक जीते। इसके अलावा पूमसे में विनायक राजवंशए अनुभव तिवारी व अथर्व राय ने भी स्वर्ण पदक जीते। रजत पदक विजेताओं में क्योरगी इवेंट में पीवी ग्रुप के अंडर-12 किग्रा भार वर्ग में विनायक राजवंश और पूमसे में आनंद तिवारी एवं अक्षज वर्मा रहे। क्योरगी के सब जूनियर अंडर-28 किग्रा में अनुभव तिवारी व अंडर-32 किग्रा में संस्कार शुक्ला को कांस्य पदक से संतोष करना पड़ा। यह सभी पदक विजेता ताइक्वांडो खिलाड़ी मास्टर अतुल यादव से लखनऊ पब्लिक स्कूल आनंद नगर शाखा में ताइक्वांडो प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। दूसरी ओर स्कूल की प्रधानाचार्य श्रीमती मीना तिवारी व सभी शिक्षक गणों ने पदक विजेताओं को बधाई देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की और प्रशिक्षक अतुल यादव की सराहना की। इस प्रतियोगिता में उत्तर प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा,चंडीगढ़, दिल्ली,पंजाब, उत्तराखंड व अन्य राज्यों के 350 खिलाड़ियों ने प्रतिभाग किया था।

सीएसआईआरए एफसीआई एवेंजर्स व इन्कम टैक्स जीते

इंटर ऑफिस टी 20 क्रिकेट

लखनऊ। सीएसआईआरए एफसीआई एवेंजर्स और इन्कम टैक्स ने शालीमार सातवीं इंटर ऑफिस टी 20 क्रिकेट टूर्नामेंट में जीत से पूरे अंक जुटाए। कॅरियर क्रिकेट स्टेडियम पर पहले मैच में सीएसआईआर ने पहले बल्लेबाजी करते हुए मैन ऑफ द मैच कमल श्रीवास्तव 46 रन दो विकेट के कमाल से रोड सेफ्टी परिवहन विभाग को 23 रन से हराया। सीएसआईआर ने पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित ओवर में 4 विकेट पर 153 रन बनाए। कमल के अलावा वीरेंद्र प्रजापति 62 ने अर्धशतक जड़ा। जवाब में रोड सेफ्टी निर्धारित ओवर में नौ विकेट पर 130 रन ही बना सका। शिवम मिश्रा 46 व अनुभव 16 ही टिक कर खेल सके। सीएसआईआर से कपिल शर्मा को चार व कमल श्रीवास्तव को दो विकेट मिले। दूसरे मैच में एफसीआई एवेंजर्स ने जल निगम को 87 रन से हराया। एफसीआई एवेंजर्स ने पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित ओवर में 8 विकेट पर 181 रन बनाए। नित्यांजय सिंह ने 43ए नितेश कुमार ने नाबाद 47 व लक्ष्मीकांत सिंह ने 33 रन जोड़े। जल निगम से शशि सिंह ने तीन व नितिन राठी ने दो विकेट चटकाए। जवाब में जल निगम 15ण्4 ओवर में 94 रन ही बना सका। एमएस हक 22 शशि सिंह 13 व मुनीश अली 14 ही दहाई के आंकड़े में रन बना सके। एफसीआई एवेंजर्स से अमर नाथ यादवए मैन ऑफद मैच प्रभात त्रिपाठी व प्रतीक कुमार सिंह को तीन.तीन विकेट मिले। तीसरे मैच में इन्कम टैक्स ने रूरल डेवलपमेंट को 80 रन से हराया। इन्कम टैक्स ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 5 विकेट पर 195 रन बनाए। रतन दीप 55 के अर्धशतक के बाद आदिल हसन 37 व हिमांशु सिंह 31 ही टिक कर खेल सके। जवाब में रूरल डेवलपमेंट आठ विकेट पर 115 रन ही बना सका। अभय उपाध्याय ने 41 अनुज ने 20 व ललित ने 16 रन बनाए लेकिन टीम के जीत नहीं दिला सके। इन्कम टैक्स से मैन ऑफ द मैच बृजेश व तेज नारायण ने तीन–तीन विकेट साझा किए।

आस्ट्रेलिया के विकेटकीपर बल्लेबाज मैथ्यू वेड ने खेल को अलविदा कहा

मेलबर्न। टी20 विश्व कप 2021 विजेता मैथ्यू वेड ने मंगलवार को अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट को अलविदा कह दिया और अब वह आस्ट्रेलिया के सीमित ओवरों के ढांचे में कोचिंग की भूमिका निभाएंगे। विकेटकीपर बल्लेबाज वेड पाकिस्तान के खिलाफ आगामी टी20 श्रृंखला में आंद्रे बोरोवेच के कोचिंग स्टाफ में होंगे। वेड ने अपने 13 वर्ष के कैरियर में 36 टेस्ट, 97 वनडे और 92 टी20 मैच खेले हैं। वह आखिरी बार इस साल टी20 विश्व कप खेले थे। वह तस्मानिया के लिए घरेलू क्रिकेट और होबर्ट हरिकेंस के लिए बिग बैश लीग में खेलते रहेंगे। वेड ने क्रिकेट आस्ट्रेलिया द्वारा जारी बयान में कहा , पिछले टी20 विश्व कप में ही मुझे पता था कि मेरा अंतरराष्ट्रीय कैरियर अब खत्म हो रहा है। मैं पिछले छह महीने से जॉर्ज बेली और एंड्रयू मैकडोनाल्ड के संपर्क में हूं। पिछले कुछ साल से मैं कोचिंग के बारे में सोच रहा था। इस मौके के लिए मैं शुक्रगुजार हूं। अब अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से विदा लेते समय मैं आस्ट्रेलियाई टीम में अपने साथियों, स्टाफ और कोचों को धन्यवाद देना चाहता हूं। मैने इस सफर का पूरा मजा लिया है।

क्विक न्यूज

उत्तर प्रदेश को पंजाब के खिलाफ पहली पारी की बढ़त के आधार पर तीन अंक

मुल्लांपुर। मुल्लांपुर में उत्तर प्रदेश ने पंजाब के खिलाफ पहली पारी की बढ़त के आधार पर तीन अंक हासिल किए। पंजाब को एक अंक मिला। पंजाब के 210 रन के जवाब में उत्तर प्रदेश ने पहली पारी नौ विकेट पर 556 रन बनाकर घोषित की थी। पंजाब ने 346 रन से पिछड़ने के बाद जसकरणवीर सिंह पॉल (नाबाद 115) और पुखराज मान (91) की पारियों से दूसरी पारी में तीन विकेट पर 267 रन बनाए जिसके बाद मैच को ड्रॉ घोषित किया गया। कोलकाता में केरल और बंगाल दोनों की पहली पारी खत्म नही हो पाने के कारण दोनों टीम को एक-एक अंक मिला। केरल ने पहली पारी नौ विकेट पर 356 रन बनाकर घोषित की थी जिसके जवाब में बंगाल ने पहली पारी मे तीन विकेट पर 181 रन बनाए।

गनी के शतक के बावजूद हारा बिहार, कर्नाटक की जीत

पटना। सकीबुल गनी के जुझारू शतक के बावजूद बिहार को मंगलवार को यहां कर्नाटक के खिलाफ रणजी ट्रॉफी ग्रुप डी मुकाबले के चौथे और अंतिम दिन आठ विकेट से हार का सामना करना पड़ा। कर्नाटक को सत्र की पहली जीत से छह अंक मिले और उसकी नॉकआउट में जगह बनाने की उम्मीदें बेहतर हुईं। कर्नाटक ने पहली पारी सात विकेट पर 287 रन पर घोषित करते हुए 144 रन की बढ़त हासिल की। बिहार की टीम इसके जवाब में गनी (130) और बाबुल कुमार (44) के बीच तीसरे विकेट की 130 रन की साझेदारी के बावजूद दूसरी पारी में 212 रन पर सिमट गई। गनी ने 194 गेंद का सामना करते हुए 15 चौके और चार छक्के मारे। गनी और बाबुल के अलावा जितिन यादव (15) ही दोहरे अंक में पहुंच पाए। कर्नाटक की ओर से श्रेयस गोपाल ने 70 रन देकर चार जबकि विजय कुमार विशाक ने 44 रन देकर तीन विकेट चटकाए। कर्नाटक को 69 रन का लक्ष्य मिला और उसने सलामी बल्लेबाज निकिन जोस (नाबाद 28) और अभिनव मनोहर (नाबाद 17) की पारियो ने दो विकेट पर 70 रन बनाकर जीत दर्ज की।

ग्रुप डी: दिल्ली ने असम को 10 विकेट से हराया

नई दिल्ली। गेंदबाजो के उम्दा प्रदर्शन से दिल्ली ने मंगलवार को यहां रणजी ट्रॉफी ग्रुप डी मैच के चौथे और अंतिम दिन असम को 10 विकेट से हराकर सत्र की पहली जीत दर्ज की। पहली पारी मे 124 रन से पिछड़ने वाली असम की टीम अंतिम दिन तीन विकेट पर 44 रन से आगे खेलने उतरी और दूसरी पारी मे 42 ओवर मे 182 रन पर आउट हो गई। अरूण जेटली स्टेडियम मे दूसरी पारी मे तेज गेंदबाजो ने असम के आठ विकेट चटकाए। सिद्धांत शर्मा ने 24 जबकि मनी ग्रेवाल ने 50 रन देकर तीन-तीन विकेट चटकाए। हर्षित राणा ने भी 61 रन देकर दो विकेट हासिल किए।दिन की शुरुआत मे ही असम ने आठ गेंद मे सिर्फ एक रन जोड़कर शिवशंकर रॉय (04), भार्गव दत्ता (00) और कप्तान देनिश दास (01) के विकेट गंवा दिए। दास सोमवार को रिटायर्ड हर्ट हो गए थे लेकिन मंगलवार को दोबारा बल्लेबाजी करने उतरे।सातवे नंबर पर बल्लेबाजी करने उतरे सुमित घादीगांवकर (96 गेंद मे नाबाद 76 रन) ने एक छोर संभाले रखा लेकिन उन्हे साथी बल्लेबाजो से अपेक्षित सहयोग नही मिला।असम ने मंगलवार को 138 रन जोड़कर सात विकेट गंवाए। दिल्ली को 59 रन का लक्ष्य मिला। सलामी बल्लेबाजो सनत सांगवान (नाबाद 34) और गगन वत्स (नाबाद 25) ने 16.1 ओवर मे बिना विकेट खोए 62 रन बनाकर दिल्ली को 10 विकेट की जीत दिला दी जिससे टीम को सात अंक मिले।

दुबे के छह विकेट से विदर्भ ने उत्तराखंड को 266 रन से हराया

देहरादून। बाएं हाथ के स्पिनर हर्ष दुबे के छह विकेट की बदौलत विदर्भ ने मंगलवार को यहां रणजी ट्रॉफी मैच के चौथे और अंतिम दिन मंगलवार को यहां उत्तराखंड पर 266 रन की बड़ी जीत दर्ज की। जीत के लिए 338 रनों मुश्किल लक्ष्य का पीछा करने उतरी उत्तराखंड के बल्लेबाजो के सामने दुबे की फिरकी का कोई जवाब नही था। उन्होने 38 रन देकर छह विकेट लिए जिससे उत्तराखंड की टीम 21 ओवर मे केवल 71 रन पर आउट हो गई। अनुभवी ऑफ स्पिनर अक्षय वखारे (17 रन पर तीन विकेट) ने दुबे को दूसरे छोर से अच्छा साथ दिया। गत उपविजेता विदर्भ को इस जीत से छह अंक मिले। टीम तीन मैचो मे तीन जीत से 18 अंक के साथ ग्रुप तालिका मे शीर्ष पर है। उत्तराखंड तीन मैचो मे छह अंक के साथ पांचवे स्थान पर है। विदर्भ ने दिन की शुरुआत छह विकेट पर 255 रन से आगे से करते हुए अपनी दूसरी पारी में 300 रन बनाए। उत्तराखंड के वामहस्त स्पिनर स्वप्निल सिंह (97 रन पर पांच विकेट) ने कम समय मे पुछल्ले बल्लेबाजो को चलता किया।

महाराष्ट्र ने मेघालय को दस विकेट से हराया

औरंगाबाद। महाराष्ट्र ने रणजी ट्रॉफी ग्रुप ए मैच के आखिरी दिन मंगलवार को मेघालय को दस विकेट से हराकर बोनस अंक ले लिया। जीत के लिए 101 रन का लक्ष्य मुर्तजा ट्रंकवाला और सिद्धेश वीर ने आसानी से हासिल कर लिया। मुर्तजा ने 73 गेंद में नाबाद 78 रन बनाए जबकि सिद्धेश 24 रन बनाकर नाबाद रहे। महाराष्ट्र ने 21 .1 ओवर मे लक्ष्य हासिल कर लिया। इससे पहले मेघालय की टीम दूसरी पारी में 185 रन पर आउट हो गई थी। मेघालय ने पहली पारी मे 276 रन बनाए थे जबकि महाराष्ट्र ने 361 रन जवाब मे बनाए। इससे पहले सुबह मेघालय ने आठ विकेट पर 157 रन से आगे खेलते हुए बाकी दो बल्लेबाजो के विकेट 28 रन के भीतर गंवा दिए। महाराष्ट्र के बाएं हाथ के तेज गेंदबाज मुकेश कुमार ने चार विकेट लिए। अगरतला मे मुंबई और त्रिपुरा के बीच मुकाबला ड्रॉ रहा।

विबग्योर बीट बॉक्सिंग, पपेट मेकिंग पर देगा जोर

नोएडा। इन्स्टिट्यूशन्स की एक अग्रणी श्रृंखला विबग्योर ग्रुप ऑफस्कूल्स ने गर्व के साथ अपने प्रमुख कार्यक्रम वीवा के 16वें एडिशन की घोषणा की है। इस साल का एडिशनए द स्टार्स एन्सेम्बलश् विशेष रूप से रोमांचक है क्योंकि हम 16 साल के नवाचार और सफलता का जश्न मना रहे हैं। इस वर्ष के विवा में विविध पृष्ठभूमि के छात्रों को शामिल करने के लिए आयोजित किए गए कार्यक्रमों और वर्कशॉप की एक प्रभावशाली योजना बनाई है। प्रतिभागियों को ओरिगेमी, बीट, बॉक्सिंग, पपेट मेकिंग,चॉकलेट बनाना और टी.शर्ट डिज़ाइनिंग जैसी गतिविधियों में भाग लेने का अवसर मिलेगा। यह छात्रों की रचनात्मकता, प्रतिभा और उत्कृष्टता का जश्न मनाने और उसे बढ़ावा देने वाला एक प्रमुख मंच है। 5 अक्टूबर 2024 को देश भर में कई स्थानों पर आयोजित होने वाला इस साल का कार्यक्रम द स्टार्स एन्सेम्बल कलात्मक और एथलेटिक कौशल का एक शानदार प्रदर्शन करने का वादा करता हैए जो एक महत्वपूर्ण कदम है क्योंकि वीवा पहली बार वैश्विक मंच पर पहुंचा है। इस रोमांचक उत्सव में दुनिया भर के प्रतिभागियों को शामिल होने के लिए आमंत्रित किया जाता हैए जहां उनके पास ऑनलाइन और ऑफलाइन पंजीकरण करने और भाग लेने का विकल्प होगा। यह वैश्विक विस्तार छात्रों को अंतर.सांस्कृतिक संबंधों को बढ़ावा देते हुए एक अंतरराष्ट्रीय मंच पर अपनी प्रतिभा और रचनात्मकता को प्रदर्शित करने का एक अनूठा अवसर प्रदान करता है। कविता केरावाला वाइस चेयरपर्सन विबग्योर ऑफस्कूल्स ने कहा कि वीवा के लिए हमारा उद्देश्य हमेशा एक ऐसा वातावरण बनाने का रहा हैए जहाँ रचनात्मकता विकसित होगी और प्रतिभा को बढ़ावा मिले।

सीएमवाईके प्रिंटेक लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक शोबोरी गाँगुली द्वारा 100के, मिलाप भवन, 8/ए, बहादुर शाह ज़फर मार्ग, नई दिल्ली-110002, दूरभाष: 011-40110455 से प्रकाशित तथा जागरण प्रकाशन लिमिटेड, डी-210, 211 सेक्टर 63 नोएडा फोन नंबर 01204615800 एक्सटेंशन 142, से मुद्रित। प्रधान संपादक : शोबोरी गाँगुली। पाठकों को सुझाव दिया जाता है कि इस अखबार के किसी भी विज्ञापन पर प्रतिक्रिया करने से पहले पूरी तरह उसके बारे में दिए गए दावों, शर्तों और तथ्यों की जांच कर लें। पायनियर ग्रुप के मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक या उसका कोई भी कर्मचारी विज्ञापनदाता द्वारा उनके किसी उत्पाद तथा सेवा हेतु किए गए किसी दावे की सच्चाई का आश्वासन या उत्तरदायित्व नहीं लेता है। ऐसे विज्ञापनों के बाद किसी आर्थिक क्षति के लिए वे जिम्मेदार भी नहीं हैं। मुख्य व्यवसायिक कार्यालय- 201-205 द्वितीय मंज़िल, प्रताप भवन, 5 ,बहादुर शाह ज़फर मार्ग, नई दिल्ली-110002, दूरभाष:011-693425001